अतुल्य भारत

वर्ष : 6 अंक : 24 अप्रैल - जून,2021

पर्यटन मंत्रालय की त्रैमासिक गृह पत्रिका
पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार
नई दिल्ली

पर्या-पर्यटन और तीर्थस्थल विशेषांक

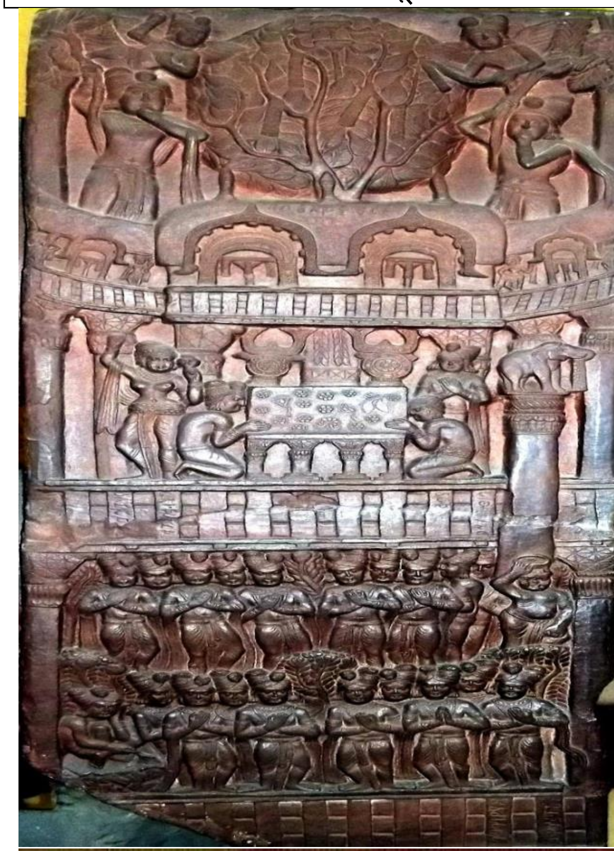

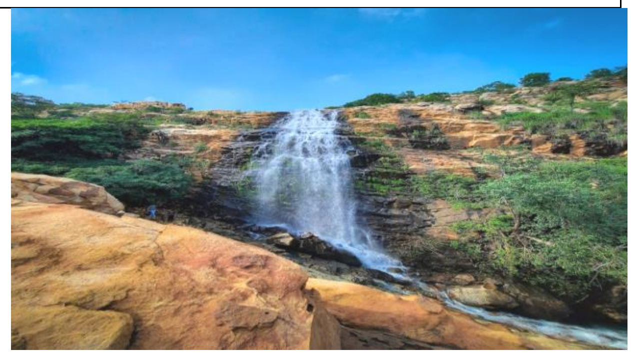

नागरदा जलप्रपात

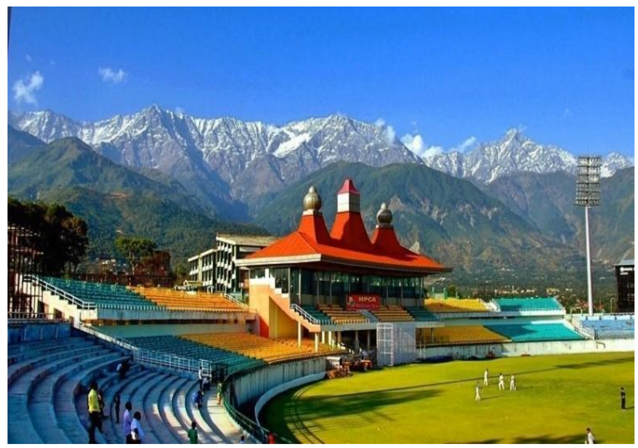

कमरू नाग, जंजेहली, हिमाचल प्रदेश

राजा की सीट, मादिकेरी, कुर्ग

अतुल्य भारत

।। पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार की त्रैमासिक गृह पत्रिका।।

संरक्षक : श्री अरविंद सिंह, सचिव, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार

प्रधान संपादक एवं परामर्शदाता : श्री ज्ञान भूषण, आर्थिक सलाहकार, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार

सम्पादक : सुश्री संतोष सिल्पोकर,संयुक्त निदेशक, पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार

अन्य सहयोगी : श्री राज कुमार, पर्यटन मंत्रालय

मानद संपादन सहयोग : श्री मोहन सिंह

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। भारत सरकार पर्यटन मंत्रालय का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

पत्रिका में प्रयुक्त अधिकतर चित्र लेखकों द्वारा उपलबध कराए गए हैं और कुछ 'गूगल' तथा अन्य स्थानों से लिए गए हैं, जिनके के लिए सभी को साभार धन्यवाद ज्ञापित है।

कृपया अपने लेख एवं सुझाव निम्नलिखित पते पर भेजें :
संपादक, अतुल्य भारत,
पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार,
7वां तल, चन्द्रलोक बिल्डिंग,
36, जनपथ, नई दिल्ली - 110011.
दूरभाष : 011-23724255
ई-मेल- editor.atulybharat@gmail.com

सूचनाओं के प्रचार हेतु नि:शुल्क वितरण

इस अंक में...

अंक 24 वर्ष : 6 अप्रैल जून, 2021

3.	59.
प्रधान सम्पादक की ओर से	सुकूं की नगरी – धर्मशाला
5.	66.
जंजैहली से कमरूघाटी तक आस्था के स्थल	संस्कार की विरासत
15.	65
धुंध का शहर : मादिकेरी, कोडागु, कर्नाटक	कविताएं : डॉ. दिव्या राणा और श्री क्षेत्रपाल शर्मा
30.	70.
आध्यामिकता और प्रकृति का अनोखा संगम : जांजगीर	याद इन्हें भी कर लें : शशि कला और सतीश कौल
43.	74.
मैहर : आस्था और विरासत की नगरी	“पर्यटन मंत्रालय की सचित्र गतिविधियां और समाचार”

परामर्शदाता एवं प्रधान सम्पादक
ज्ञानभूषण, आई.ई.एस.
आर्थिक सलाहकार
पर्यटनमंत्रालय, भारत सरकार

✍प्रधान सम्पादक की कलम से

'अतुल्य भारत' का 24वां अंक पर्या-पर्यटन और तीर्थस्थल विशेषांक के रूप में आपके सामने हैं। हमारा प्रयास रहा है कि हम पर्यटकों को देश के कम ज्ञात पर्यटन क्षेत्रों के बारे में जानकारी दें। इस कड़ी में श्री पवन चौहान ने अपने यात्रा संस्मरण ''जंजैहली से कमरूघाटी तक आस्था के स्थल'' में हिमाचल प्रदेश के मण्डी जिले में स्थित जंजैहली घाटी और इसके आसपास के स्थानों का उल्लेख किया है कि किस प्रकार जंजैहली घाटी ने देशी व विदेशी पर्यटकों के लिए एक अच्छा खासा प्लेटफार्म तैयार कर लिया है। इस घाटी में प्रतिदिन सैकड़ों की संख्या में पर्यटक विचरण करते देखे जा सकते हैं।

ऐसा ही एक पर्यटन गंतव्ये है, कर्नाटक राज्य का कोडागु यानि कुर्ग। कर्नाटक के दक्षिण पश्चिम भाग में पश्चिमी घाट के पास कोडागु दक्षिण भारतीयों का एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल है। इसकी सुन्दर पहाड़ियों पर बिखरे अप्रतिम प्राकृतिक सौंदर्य के कारण इसे कर्नाटक का कश्मीमर भी कहते हैं। यहां की सुंदर घाटियां, रहस्यमयी पहाड़ियां, कॉफी के बड़े - बड़े बाग, चाय के बाग, संतरे के पेड़, बुलंद चोटियां और तेजी से बहने वाली नदियां, पर्यटकों का मन मोह लेती है। दो अंकों में समाप्य अपने आलेख ''धुंध का शहर'' में श्री मोहन सिंह ने इस क्षेत्र में यात्रा कर इसकी जानकारी दी है।

छत्तीसगढ़ में जांजगीर-चांपा भी एक विशेष गंतव्य है। यहां की पहाड़ियों पर बने देवधाम के प्राकृतिक जलप्रपात, झीलों और तालाबों का अपना महत्व है। इस क्षेत्र के आसपास बिखरे सुन्दर प्राकृतिक और प्राचीन स्थलों, धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहरों से आज भी अधिकतर पर्यटक अंजान हैं, जिन्हे देखने से एक अलग ही अनुभव प्राप्त होता है। जांजगीर-चांपा क्षेत्र की जानकारी को श्री कुशाल सिंह ने अपने आलेख ''आध्यामिकता और प्रकृति का अनोखा संगम'' के माध्यम से जांजगीर-चांपा के कुछ लोकप्रिय स्थानों को कलमबद्ध किया है।

मध्यप्रदेश के सतना जिले में कैमूर तथा विंध्य पर्वतमालाओं की गोद में बसे मैहर के नाम से भी बहुत कम लोग परिचित होंगें। पर्वत श्रृंखलाओं के बीच अपने नैसर्गिक रूप में अठखेलियां करती समृद्ध तमसा नदी के किनारे त्रिकूटा पर्वत पर, 600 फीट की उंचाई पर प्रकृति की गोद में समाया मां शारदा का मंदिर भारतीयों की आस्था का केन्द्र है। मैहर में कलात्मक मंदिरों के अलावा बौद्ध स्थल, प्राकृतिक झरने और भारतीय संगीत की विरासत का घर भी है, जिसके बारे में आाशा बेन पटेल ने ''मैहर : आस्था और विरासत की नगरी'' में अपने यात्रा संस्मरण जानकारी दी है।

धौलाधार पर्वतमालाओं में बसा रमणीक धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश राज्य की दूसरी राजधानी कहलाता है। यहां बौद्ध धर्मगुरु दलाई लामा का निवास है। धर्मशाला के प्रसिद्ध स्थानों आदि के बारे मेंडॉ. कविता विकास ने अपने आलेख''सुकूं की नगरी – धर्मशाला'' के माध्यम से सहज जानकारी उपलब्ध कराई है।

'संस्कार की विरासत' शीर्षक से दो मार्मिक लघु कथाएं श्री रामगुप्त जैन द्वारा प्रस्तुत की गई हैं। इनके अलावा, डॉ. दिव्या राणा और श्री क्षेत्रपाल शर्मा की कविताएं दी गई हैं। याद इन्हे भी कर लें में, अपने समय की प्रसिद्ध चरित्र अभिनेत्री शशि कला और पंजाबी सिनेमा जगत के जाने माने अभिनेता सतीश कौल को याद किया गया है। ''पर्यटन मंत्रालय की सचित्र गतिधियां और समाचार'' को भी समाहित किया गया है।

पर्यटन मंत्रालय भारत में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सतत प्रयास कर रहा है। अधिकतर लोगों का मत है कि''अतुल्य भारत'' पत्रिका पर्यटन के क्षेत्र में निश्चित रूप से अपना योगदान दे रही है। इसके माध्यम से मंत्रालय के अधिकारियों तथा कर्मचारियों को अपनी प्रतिभा दर्शाने का अवसर भी हो जा रहा है।

अतुल्य भारत पत्रिका को प्रोत्साहन देने के लिए हम माननीय पर्यटन मंत्री जी के आभारी हैं। इस पत्रिका के लिए हम आदरणीय सचिव (पर्यटन) महोदय का भी आभार व्यक्त करते हैं जो देश में पर्यटन के संवर्धन तथा प्रोत्साहन के लिए हमें सतत प्रेरणा एवं मार्गदर्शन प्रदान कर रहे हैं ।

अंत में, सभी लेखकों तथा पाठकों का आभार व्यक्त करता हूं जो इस पत्रिका के लिए निरंतर अपना सहयोग प्रदान करते रहे हैं। आपके विचारों तथा प्रतिक्रियाओं का इंतजार रहेगा ।

ह/-

(ज्ञान भूषण)

प्रधान संपादक

साहसिक पर्यटन यात्रा

जंजैहली से कमरुघाटी तक आस्था के स्थल

- **पवन चौहान**

कौन नहीं चाहता कि प्रकृति की हसीन वादियों में कुछ समय बिताया जाए। फिर वह स्थान ऐसा हो कि जहां पर आध्यात्मिक शांति के साथ-साथ प्रकृति के खूबसूरत नजारे और रोमांच एक साथ हों तो सोने पे सुहागा जैसी बात होगी। कुछ ऐसे ही अनुभवों से सराबोर करती है हिमाचल प्रदेश के मण्डी जिले की जंजैहली घाटी। आजकल यह घाटी पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र बनी हुई हैं। जंजैहली घाटी ने देशी व विदेशी पर्यटकों के लिए एक अच्छा खासा प्लेटफार्म तैयार कर लिया है। इस घाटी में रोजाना सैकड़ों की संख्या तादात में पर्यटक विचरण करते देखे जा सकते हैं।

जिला मण्डी से जंजैहली बस स्टैंड तक की दूरी लगभग 86 कि.मी. है। किसी भी वाहन अथवा बस द्वारा यहां पहुंचा जा सकता है। रास्ते में छैलचौक, काण्ढा, बगस्याड तथा थुनाग आदि छोटे-छोटे स्टेशन आते हैं। जहां इस घाटी के मनोरम दृश्य आपकी यात्रा में नया जोश भर देते हैं। इन स्टेशनों से आप अपनी जरुरत का सामान भी खरीद सकते हैं।

जंजहैली से दो कि.मी. पहले पांडवशिला नामक स्थान आता है। यहां एक भारी भरकम चट्टान के दर्शन होते हैं जो मात्र आपकी हाथ की सबसे छोटी अंगुली से हिलकर आपको अचंभित कर देती है। इस चट्टान को (महाभारत के) भीम का चुग्गल (हुक्के की चिलम में डाला जाने वाला छोटा-सा पत्थर) माना जाता है और इसकी पूजा की जाती है। ढलानदार खेतों में चारों ओर फैली आलू और मटर के खेतों की हरियाली मन को मोह लेती है।

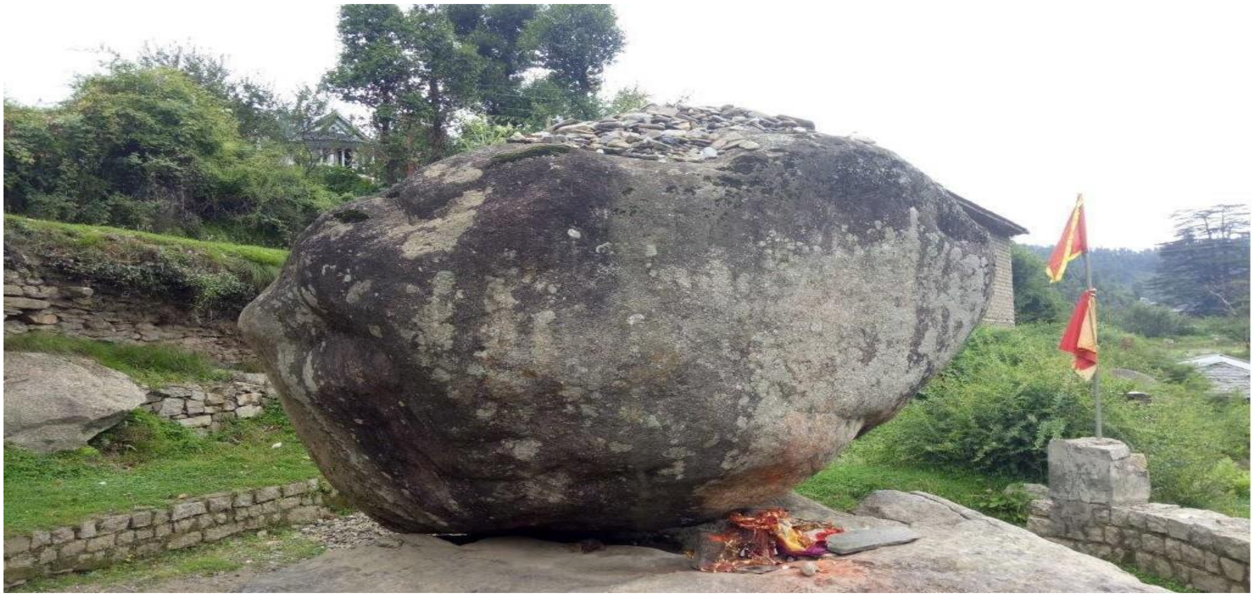

जब हम जंजैहली पहुंचते हैं तो हम खुद को एक अलग ही दुनिया में पाते हैं। जंजैहली शहरों के शोर-शराबे से दूर एक सुंदर और शांत गांव है। यहां मौसम के दौरान सेब, नाशपाती, खुमानी और प्लम यानी आलूबुखारा (जिसे स्थानीय भाषा में आलुचा भी कहते हैं) आदि फलों की भरमार रहती है। जंजैहली बस स्टैंड के साथ ही ढीम कटारु पंचायत की सीमा शुरू हो जाती है। यह पंचायत प्राकृतिक सौंदर्य का एक अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करती है। यदि आपके पास समय हो तो यहां के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में अवश्य शामिल होइए। आपकी यात्रा सफल मानी जाएगी। इसी घाटी में अन्य स्थल हैं जो खूबसूरती और रोमांच से भरे पड़े हैं। इन स्थलों को एक बार देख लेने के पश्चात यह स्थल आपके मानसपटल पर प्राकृतिक सौंदर्य का ऐसा अध्याय लिख जाएंगे कि आप जिंदगी भर इन स्थलों की याद को अपने मस्तिष्क से उतार नहीं पाएंगे।

भुलाह :

जंजैहली से छः कि.मी. की दूरी पर आता है रमणीक स्थल भुलाह। जिसे एक बार देख लें तो भुले से भी न भूल सकेंगे। भुलाह तक पक्की सड़क है। बसें यहीं तक ही आती है। भुलाह पैदल चलने वाले साहसिक पर्यटकों (ट्रैकरों) तथा श्रद्धालु तीर्थयात्रियों का पहला पड़ाव स्थल भी है क्योंकि इसके बाद, यहां से शिकारी पर्वत की चोटी तक चढ़ाई आरम्भ हो जाती है। थोड़ा-सा मैदानी होने और चारों ओर से देवदार, रई, चीड़ आदि के पेड़ों से घिरा होने के कारण इस स्थान की सुंदरता देखते ही बनती है। भुलाह की भौगोलिक सरंचना हमें चंबा जिला के खजियार पर्यटन स्थल की याद ताजा कर देती है, जिसे हिमाचल का 'मिनी स्वीट्जरलैंड' भी कहा जाता है। भुलाह में सभी यात्री थोड़ी देर रुककर यहां बैठकर चाय-पानी/ भोजन का आनंद लेते हैं, वहीं इस स्थान को अपने - अपने कैमरों में कैद भी करते हैं ।

बूढ़ा केदार तीर्थ स्थल :

सेराज क्षेत्र की जंजैहली घाटी में माता शिकारी देवी योगिनी शक्तिपीठ के आंचल में बना है बूढ़ा केदार मंदिर। इस स्थान के लिए पैदल ही जाना पड़ता है। जंजैहली से ही आप इस रास्ते की ओर बढ़ते हैं, यह पूरा रास्ता चढ़ाई वाला है। लेकिन यहां पर रहने वाले गुज्जरों के लिए यह रोज का रास्ता है। यही लोग जंजैहली तक दूध, घी तथा खोया आदि पहुंचाते हैं और बदले में मिलने वाले रुपयों से राशन एवं जरुरत का अन्य सामान ले जाते हैं। सर्दी के मौसम में गुज्जर समुदाय अपने पशुओं के साथ, इन इलाकों को छोड़ कर मैदानी इलाकों में चले जाते हैं और गर्मियों में फिर से वापिस अपने-अपने घरों में आ जाते हैं। घाटी में आप जगह-जगह इनके दड़बानुमा घरों को देख सकते हैं। इनकी जीवन शैली हमें इनके कठिन जीवन का अहसास करवाती है। सरकार ने इनके उत्थान के लिए मोबाइल स्कूल भी चलाए हुए हैं जहां इनके बच्चे शिक्षा प्राप्त कर समाज की मुख्य धारा के साथ जुड़ रहे हैं।

बूढ़ा केदार :

लोगों की मान्यता के अनुसार, बूढ़ा केदार में भीम से बचने के लिए नंदी बैल एक बड़ी चट्टान में कूदे और सीधे पशुपति नाथ मंदिर पहुंचे थे। एक चट्टान की गुफा में शिवलिंग के रूप में भगवान शिव विराजमान हैं। गुफा का द्वार ज्यादा ऊंचा नहीं है, तो आपको थोड़ा झुकना होता है, जिसके अंदर जाकर पूजा-अर्चना की जाती है। साथ ही, यहां स्थित छोटे से झरने के नीचे निर्जला एकादशी के दिन स्नान करना पवित्र माना जाता है। प्रशासन ने पुरुषों और महिलाओं के लिए अलग-अलग स्नानागार बनाए हैं। यह स्थान स्थानीय लोगों के साथ-साथ बाहर से आने वाले श्रृद्धालु भक्तों के लिए भी आस्था का केन्द्र है।

सही समय : वैसे गर्मी का मौसम जंजैहली घाटी को निहारने के लिए अति उत्तम है। लेकिन आप अप्रैल से अक्तूबर के अंत तक (बर्फ गिरने से पहले) इस वादी में विचरण कर सकते हैं।

शिकारी देवी पर्वत :

जंजैहली में इतनी संख्या में पर्यटकों के आगमन का प्रमुख कारण यदि माता शिकारी देवी के प्रति अटूट आस्था व भक्ति भावना को माना जाए तो गलत न होगा। परंतु यह भी उतना ही सच है कि प्राकृतिक सौंदर्य से लबालब यह घाटी इस भक्ति भावना को और भी बल देती है।

भुलाह से आगे लगभग 11 कि.मी. की दूरी पर शिकारी देवी मंदिर अवस्थित है। मंदिर तक पक्की सड़क है। किसी भी छोटी गाड़ी में आप इस दूरी को तय कर सकते हैं। लेकिन पैदल चला जाए तो आप रोमांच से भर उठेंगे। इस पर्वत पर माता शिकारी देवी का मंदिर स्थित होने के कारण इसे शिकारी पर्वत के नाम से भी जाना जाता है। शिकारी मंदिर तक पहुंचने के कई रास्ते हैं। लेकिन जंजैहली से मुख्यतः दो रास्ते मंदिर तक जाते हैं। एक बूढ़ा केदार तीर्थ स्थल से तथा दूसरा वाया भुलाह से होकर। दोनों रास्तों से जाने का अपना अलग ही आनंद है। भुलाह की ओर से सड़क मार्ग उपलब्ध है, जबकि बूढ़ा केदार तीर्थ स्थल से आपको पैदल ही खड़ी चढ़ाई तय करनी पड़ती है। यह मार्ग ट्रैकरों (साहसिक पर्यटन के शौकीन) के लिए अति उत्तम है। जंजैहली का ट्रैकिंग हॉस्टल भी इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

प्राकृतिक नजारों का आनंद लेना हो तो ऐसी जगहों पर पैदल चलना ही बेहतर होता है। शिकारी देवी पर्वत जाने के लिए आप सड़क के बजाए भुलाह नाले से होते हुए जाएं तो एक अलग ही रोमांचकारी अनुभव से सराबोर होंगे। बड़ी-बड़ी चट्टानों से प्रस्फुटित होते झरने, कल-कल बहते नाले का संगीत और लंबे-लंबे देवदार के वृक्षों से सज्जित यह स्थान हर किसी को आकर्षित करता है। नाले वाला रास्ता शॉर्टकट है। इस नाले पर एक नई चीज जो पहली बार हमने देखी वह था गहरे भूरे रंग का जंगली घोघा (स्थानीय लोगों के अनुसार) जो बिल्कुल ही अलग-सा था। उसकी स्नेल नहीं थी। वह आम व्यक्ति के अंगूठे से भी मोटा और लगभग छः ईंच लंबा था।

इस नाले से आप लड़वहाच होते हुए सीधे सिंगरयाला पहुंचेंगे। बुज़ुर्गों या पैदल न चल सकने वालों के लिए सड़क मार्ग से जाने का भी एक अलग ही मज़ा है।

शिकारी देवी मंदिर का स्थान

कल्पना लोक-सा शिकारी देवी मंदिर का यह स्थान एक अनोखे एहसास से सराबोर कर देता है। आस-पास की चोटियों से सबसे ऊपर होने के कारण ऐसा लगता है जैसे हम आकाश में उड़ रहे हों। समुद्रतल से इस स्थान की ऊंचाई 9000 फीट है। कहा जाता है कि माता शिकारी देवी का मंदिर पांडवों द्वारा बनाया गया था, जब वह वनवास काल के दौरान पांडव यहां रुके थे। शिकारी देवी मंदिर ऐसा मंदिर है जिसकी छत नहीं है। क्योंकि मान्यता है कि माता अपने ऊपर किसी भी तरह की छत को स्वीकार नहीं करती।

इस स्थान के विषय में एक बात गौर करने योग्य है कि चाहे यहां कितनी भी बर्फ क्यों न गिर जाए लेकिन माता की मूर्तियों के ऊपर कभी भी बर्फ नहीं टिकती है।

पर्यटकों के पड़ाव का यह दूसरा स्थान है। चाहें तो माता के दर्शन के उपरांत यहां से वापस घर भी जा सकते हैं लेकिन प्रकृति प्रेमियों के लिए शिकारी देवी मंदिर के दक्षिण-पश्चिम दिशा में जो सौंदर्य बिखरा पड़ा है उसे करीब से देखे बगैर जाने का किसी भी सूरत में मन नहीं करेगा।

देवीदहड़ :

शिकारी देवी मंदिर की दक्षिण-पश्चिम दिशा की ओर जब हम रुख करते हुए उतराई उतरते हैं तो हम उस प्राकृतिक खूबसूरती के और करीब होते जाते हैं। कुछ ही समय में शिकारी देवी मंदिर हमारी आंखों से ओझल हो जाता है। शिकारी मंदिर की इस पथरीली पहाड़ी के पीछे छिपते ही ऐसा लगता है मानो हमने अतीत को पीछे छोड़ वर्तमान में कदम रख दिया हो। इस दुनिया का कुछ सफर हमें घने जंगल और पथरीले रास्ते से रुबरु करवाता है। इस रास्ते पर चलते हुए पश्चिम में नीचे की ओर हमें एक छोटे से सुंदर इलाके देवीदहड़ का दीदार होता है । इसे देवीदढ़ भी कहते हैं।

देवदार पेड़ों से घिरा मुंडासनी माता का सुंदर मंदिर, देवीदहड़

देवीदहड़ हिमाचल के पर्यटन मानचित्र में अपना एक विशेष स्थान रखता है। समुद्रतल से 7800 फीट की ऊंचाई पर, चारों ओर घने देवदारों की प्राकृतिक सुंदरता समेटे, यह जगह माता मुंडासनी का मंदिर स्थित है। यह घाटी का अंतिम गांव है। प्रकृति प्रेमियों के लिए इस स्थान को देखे बगैर आगे का सफर तय करना बेमानी होगा। इस क्षेत्र का असीम सौंदर्य हमें अपने मोहपाश में बांध देता है।

इस अनजान इलाके में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए पिछले वर्ष से देवीदहड़ में ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग द्वारा जानवरों की कृत्रिम मूर्तियां, बच्चों के प्यारे कार्टूनों के मॉडल आदि जगह-जगह पर स्थापित किए गए हैं। यह तरीका इस इलाके को और भी आकर्षण प्रदान करता है। यही नहीं, यहां बनी एक छोटी-सी झील में आप वोटिंग का मजा भी ले सकते हैं। पर्यटक देवीदहड़ में वन विभाग के विश्रामगृह में रह सकते हैं।

इस इलाके के लोगों की कठिन लेकिन शांत जीवन शैली हमें हर मुश्किल से हंसकर लड़ने की प्रेरणा देती है। यहां का पांच पेड़ों जैसा एक पेड़ हमें हैरत में डाल देता है। यहां माता मुंडासनी का सुंदर मंदिर दर्शनीय है। मुंडासनी माता मंदिर के साथ ही वन विभाग का रेस्ट हाऊस तथा कैंप हैं जिनमें ठहरा जा सकता है। हालांकि, कैंप में अभी पर्याप्त सुविधाएं जुटाने का कार्य जारी है। यहां साथ ही, निजी गैस्ट हाऊस और रेस्टोरेंट भी हैं, यहां पर्यटक आराम से ठहर सकते हैं। देवीदहड़ के लिए दूसरा रास्ता वाया तुना, धंग्यारा होकर है जो छैल चौक से एक कि.मी. आगे जंजैहली रोड़ से इस दिशा की ओर मुड़ जाता है। इस रास्ते से आप गाड़ी से यहां तक आराम से पहुंच सकते हैं। गर्मी के मौसम में यहां की स्थानीय सब्जी लिंगड़ आपको यहां बहुतायत मात्रा में

मिल जाती है। जिसका अपना ही एक खास स्वाद होता है। यहां आप इसका स्वाद जरूर लेना चाहेंगे। अपने साथ यहां का शीतल जल लेकर फिर आप अपनी आगे की यात्रा के लिए पहाड़ी पर चढ़ना आरंभ कर देते हैं।

कमरुनाग मंदिर व झील :

जहां से हम देवीदहड़ के लिए नीचे उतरते हैं वहीं से ही एक रास्ता सीधा कमरुनाग मंदिर तक भी जाता है। कमरुनाग पांडवों के आराध्य देव माने जाते हैं। वैसे भक्तगणों, पर्यटकों व प्रकृति प्रेमियों के लिए इस रास्ते को तय किए बिना उनकी यात्रा अधूरी ही समझी जाएगी। शिकारी मंदिर से कमरुनाग मंदिर तक का रास्ता तय करने में सात से आठ घंटे (यदि देवीदहड़ न जाएं) का समय लग जाता है। इस रास्ते को पैदल ही तय करना पड़ता है। बेहद थका देने वाले इस रोमांचक सफर को हवा के ठंडे झोंके, हर कदम पर सामने आते प्रकृति के खूबसूरत दृश्य हमें सदा ऊर्जायमान रखते हैं।

कमरूनाग मंदिर

इसी यात्रा के दौरान सीढ़ीनुमा छोटे-छोटे खेतों के टीले के बिल्कुल ऊपर छोटी-सी पहाड़ी पर व्यवस्थित घर किसी चित्रकार की कल्पना से उभरी हुई नायाब तस्वीरें मालूम पड़ती है। हम अब टाढ़ाबाई गांव के रास्ते पर चल रहे होते हैं क्योंकि यह रास्ता समतल और थोड़ा आरामदायक है। इस यात्रा के दौरान हमें रास्ते में इक्का-दुक्का घर ही रास्ते में मिले हैं। यह घर पूर्णतयः लकड़ी से बनाए गए हैं और जो लोग इन जगहों पर बसे हैं उनका मुख्य पेशाभेड़-बकरी पालन हैं। खेती के नाम पर यह मुख्यतः आलू की पैदावार ही करते हैं।

अपनी आंखों में ढेर सारा प्राकृतिक सौंदर्य समेट कर, रोमांच से सराबोर होकर, बहुत-सी छोटी-बड़ी पहाड़ियों को लांघकर जब हम कमरुनाग मंदिर पहुंचते हैं तो हमारी सारी थकान जैसे छुमंतर हो जाती है। मंदिर के साथ एक झील भी है जिसे 'कामरु झील' कहा जाता है। इस ऐतिहासिक झील

की खास बात यह है कि इस झील में ढेर सारा सोना, चांदी, सिक्के, रुपये भरे पड़े हैं जो सदियों से चली आ रही परंपरा के चलते असंख्य भक्तगणों द्वारा यहां श्रद्धानुसार व मन्नत पूरी होने पर यहां समर्पित किए (फैंके) गए हैं। किवंदती के अनुसार, कमरुनाग पांडवों के आराध्य देव हैं।

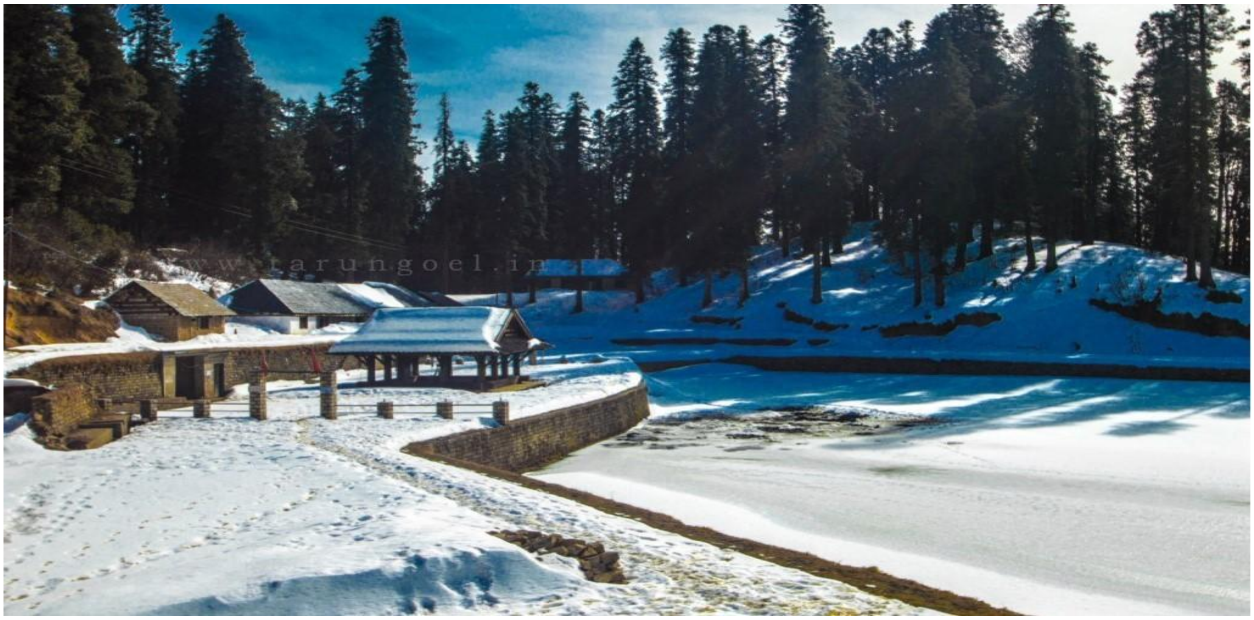

बर्फबारी के दौरान कमरूनाग मंदिर का दृश्य

वैसे इनका नाम राजा यक्ष था, जो बहुत शक्तिशाली राजा थे। कहा जाता है कि जब महाभारत का युद्ध होने वाला था, तभी इन्होने घोषणा कर दी थी कि जो सेना हार रही होगी, वह उसकी ओर से ही लड़ेंगे और उसे विजयी बनाने का भी पूरा विश्वास दिया। चूंकि कौरवों की हार तय थी। अतः निश्चित था कि यक्ष कौरवों की ओर से ही लड़ेंगे। कृष्ण भगवान को इनकी शक्ति का एहसास था। इसलिए कृष्ण जी ने एक युक्ति द्वारा इनका शीश (सिर) मांग लिया ताकि धर्म की रक्षा हो सके और इन्हे पांडवों का आराध्य देवता मानने का भी वचन दिया। राजा यक्ष ने पूरा युद्ध बांस की नाल के ऊपर अपना कटा शीश रख कर देखा। पांडव जब विजयी हुए और इन्हे स्थापित करने हेतु इनका इच्छित स्थान पूछा तो राजा ने यही जगह चुनी और कहा कि इस जगह से उनका नाता पिछले जन्म से है तब उनका नाम 'कमरुनाग' था। उस समय से कमरुनाग इस जगह पर विराजमान हैं और लाखों लोगों की श्रद्धा व आस्था का केन्द्र है।

इस ऐतिहासिक मंदिर व सरोवर के दर्शनों के पश्चात् आप चाहें तो यात्रा जारी रख सकते हैं और यदि यहां एक दो दिन ठहरना चाहें तो किसी गेस्ट हाउस में रुक भी सकते हैं। 7-8 घंटे का लंबा पैदल सफर तय करने के बाद आप अब सड़क मार्ग से सिर्फ छः कि.मी. की दूरी पर होते हैं। अब हम जंजैहली की पश्चिम दिशा की तरफ इसके दूसरे छोर अर्थात सुन्दरनगर की ओर आ

जाते हैं। यह छः कि.मी. का पूरा रास्ता ही उतराई वाला है। इस उतराई से उतर कर हम पहुंचते है रोहांडा। रोहांडा में एक छोटा-सा बस स्टैंड है जो सुन्दर नगर-करसोग मार्ग पर स्थित है। इस मार्ग से करसोग, शिमला, काजा, किन्नौर भी जाया जा सकता है। यहां से चण्डीगढ़-मनाली राष्ट्रीय राजमार्ग-21 मात्र 35 कि.मी. की दूर है। बस, जीप व अन्य वाहन से राष्ट्रीय राजमार्ग तक आराम से पहुंच सकते हैं। रोहांडा में जरुरत की हर वस्तु खरीदी जा सकती है।

यहां पर हमारी यह धार्मिक व रोमांचक यात्रा संपन्न हो जाती है और हम एक बार फिर जुड़ जाते हैं उन काली रेखाओं के साथ जहां हम फिर से अपनी जिंदगी की दिन-प्रतिदिन की भागदौड़ शामिल हो जाते हैं । लेकिन इसके बावजूद कुछ समय के लिए प्रकृति के करीब रहकर प्रकृति की गोद में बिताया गया यह रोमांचकारी सफर हमारे मानसपटल पर सदा एक खूबसूरत याद बनकर महकता रहता है और हमें नयी ताजगी तथा प्राकृतिक सौंदर्य की अनुभूति से हमेशा लबालब रखता है।

कैसे पहुंचे :

वायुमार्ग : निकटतम हवाई अड्डा कुल्लू के भुंतर में है, जो यहां से लगभग 118 कि.मी.दूर है। इसके बाद आप लोकल बस सेवा से या फिर अपनी गाड़ी बुक कराकर जा सकते हैं।

रेल मार्ग: निकटतम रेलवे स्टेशन शिमला है, यह जंजैहली घाटी से लगभग 140 कि.मी.दूर है।

सड़क मार्ग : जंजैहली घाटी (गांव) शिमला तथा अन्य प्रमुख शहरों और कस्बों से सड़क से अच्छी तरह जुड़ा हुआ है। इसलिए आपको यहां के लिए सीधी टैक्सी या फिर बसें दोनों मिल जाती हैं। इसलिए जंजैहली गांव तक आसानी से आया जा सकता है।

कहां ठहरें:

जंजैहली में लोक निर्माण विभाग, वन विभाग के रेस्ट हाऊस तथा अन्य निजी होटल तथा गेस्ट हाउस हैं जिनका ख़र्च भी ज्यादा नहीं हैं और हर तरह की सुविधा से संपन्न हैं। आप इनमें सहज महसूस करेंगे।

तो फिर देर किस बात की है। आइए चलें, दुनिया के शोर-शराबे से दूर जंजैहली घाटी की वादियों में दो पल सुकून के बिताने।

*** सम्प्रति: शिक्षक {पी.जी.टी.) । विभिन्न पत्रिकाओं तथा समाचार पत्रों में पर्यटन यात्रा संस्मरण, कहानिया, लेख आदि प्रकाशित। अतुल्य भारत में भी पर्यटन यात्रा पर योगदान।**

(सम्पर्क: गांव व डाकघर: महादेव, तहसील सुन्दरनगर, जिला - मण्डी - 175018 (हि.प्र.)
Email: chauhanpawan78@gmail.com)

धूंध का शहर : मादिकेरी

-मोहन सिंह

भारतीय पर्यटकों की यह एक बड़ी समस्या है कि वह अधिकतर उस स्थान का चयन करते हैं जहां वायु मार्ग अथवा रेल की सीधी सुविधा होती है। अपने नगर से किसी दूसरे स्थान पर जाकर वहां से सौ दो सौ कि.मी. आगे जाने में कठिनाई होती है। एक बार सन् 1998 में एक सरकारी काम से मादिकेरी जाना था, जब ज्ञात हुआ कि मैसूर या मंगलूर पहुंचने के बाद फिर और 150 कि.मी. आगे जाना होगा तो सभी के साथ मैंने भी ने जाने से मना कर दिया था।

संयोग से इस वर्ष परिवार के लोगों ने मादिकेरी का कार्यक्रम बनाया तो पहले तो मैंने भी मना किया, फिर जाना ही पड़ा। प्रात: ही दिल्ली से मुम्बई होते हुए दोपहर में लगभग एक बजे मंगलूरू पहुंचे और वहां से दोपहर में करीब दो बजे हम कुर्ग के लिए चले और लगभग चार घंटे लगने थे। कुर्ग से पहले ही राह में बादलों के साए में आ गए थे और जब हम मादिकेरी होटल में पहुंचे तो साढ़े छ: बज चुके थे और उस समय तक अंधेरा हो चुका था, आसपास चारों ओर ही अंधेरा, जैसे रात का माहौल तथा काफी ठंड थी। लेकिन वहां पहुंचने पर अपनी 22 साल पुरानी गलती का अहसास हुआ।

कुर्ग : यह समुद्रतल से लगभग 900 मीटर से 1715 मीटर की ऊंचाई पर स्थित, कर्नाटक के दक्षिण पश्चिम भाग में पश्चिमी घाट के पास एक पहाड़ी जिला है और कर्नाटक के लोकप्रिय

पर्यटन स्थलों में से एक है। यहां बिखरी हरियाली के कारण ब्रिटिश शासक इसे भारत में एक और स्कॉटलैंड कहते थे। यहां की खूबसूरत पहाड़ियों पर बिखरे अप्रतिम प्राकृतिक सौंदर्य को देख कर लोग मदिकेरी को कर्नाटक का कश्मीर भी कहते हैं। यहां की सुंदर घाटियां, रहस्यमयी पहाड़ियां, कॉफी के बड़े - बड़े बागान, चाय के बाग, संतरे के पेड़, बुलंद चोटियां और तेजी बहने वाली नदियां, यहां आने वालों का बरबस ही मन मोह लेती हैं।

मादिकेरी को पहले मुद्दुराजकेरी के नाम से जाना जाता था। यहां की बादलों से भरी पहाड़ियां, ठंडी हवाएं, सदाबहार हरे भरे वन, आकर्षक चोटियां, हरी-भरी घाटियां, कॉफी के बाग और प्रकृति के खूबसूरत दृश्य इसे हमेशा याद रहने वाला पर्यटन स्थल बनाते हैं। यही शांत अंतहीन खंड कुर्ग शहर की विशेषता हैं। देश के भारी वर्षा वाले क्षेत्रों में से एक, कुर्ग का यह खूबसूरत पहाड़ी क्षेत्र कॉफी और मसालों के लिए प्रसिद्ध है।

कुर्ग में ऐसा क्या है ?

कुर्ग एक पुराने संसार की याद ताजा कर देता है। पर्यटक यहां आकर पूर्वी और पश्चिमी ढलानों के दिल थाम लेने वाले दृश्यों के सौंदर्य को निहारते हुए, यहां के स्थानों में प्राचीन काल का आकर्षण देख सकते है। कुर्ग में मादिकेरी और उसके आसपास बहुत से ऐतिहासिक और धार्मिक पर्यटन स्थल हैं। यहां आकर पर्यटक पुराने मंदिरों, ईको-पार्क, झरनों और अभ्यारण्यों की खूबसूरती में रम जाते है। प्रकृति की असीम सुंदरता लिए अब्बे जलप्रपात, इरूप्पु जलप्रपात, चिलावारा जलप्रपात, हरंगी बांध, कावेरी निसर्गधाम, होनामना दुबारेकेरे एलीफेंट कैम्प और मंडलपट्टी आदि जैसे कई स्थान हैं तो, ओंकारेश्वधर मंदिर, भागमंडला, तलकावेरी और तिब्बती स्वर्ण मंदिर जैसे प्रमुख धार्मिक स्थलों की अलग महिमा देखने को मिलती है। मादीकेरी शहर में किला, राजा सीट और राजा का गुंबद, थिम्मैया युद्ध संग्रहालय, सरकारी संग्रहालय में देश की विरासत देखी जा सकती है। ब्रह्मागिरि पहाड़ियों पर नालाखंद पैलेस के अलावा ट्रैकिंग, गोल्फ, एंगलिंग (मछली पकड़ना) और रिवर राफटिंग जैसे साहसिक खेलों का भी आनंद ले सकते हैं। चाय, कॉफी के बागों, घने जंगलों को अपने में समेटे हुए कोडागु हिल्स स्टेशन एक पर्यटन गंतव्य है। यहां की खूबसूरत वादियां, प्रकृति प्रेमियों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं। आइए आप भी हमारी इस यात्रा में शामिल होकर प्रकृति की इन वादियों का आनंद लीजिए....।

कुर्ग के बारें में .....

कुर्ग के नाम यानि कोडागू की उत्पत्ति को लेकर कई कहानियां प्रचलित हैं। कुछ विद्वानों का मानना है कि कोडागू शब्द की उत्पत्ति 'क्रोदादेसा' से हुई है जिसका अर्थ होता है कदावा जनजाति की भूमि। कुछ अन्य विद्वानों का मत है कि कोडागू शब्द, दो शब्द से मिलकर बना है - कोड यानि देना और अव्वा यानि माता, जिससे इस स्थान को माता कावेरी को समर्पित माना गया है।

कुर्ग की ऐतिहासिकता पर नजर डालें तो पता चलता है कि यह लगभग 8वीं सदी में बसाया गया था। कोडागू में सबसे पहले गंगा वंश का शासन था। बाद में यह पांडव, चोल, कदम्ब, चालुक्य और चंगलवास आदि जैसे कई शासकों और वंशजों की राजधानी बना। कोडागु पर 1174 ई. में होयसाल ने अपना आधिपत्य जमा लिया था। बाद में 14 वीं शताब्दी में इसे विजयनगर के साम्राज्य में शामिल कर लिया गया था। इसके पश्चात कोडागू पर कई राजाओं ने शासन किया और अंतत: 1834 में यह अंग्रेजों के अधीन हो गया। अंग्रेजों ने, जिनके लिए कोडागु बोलना मुश्किल हो रहा था, कोडागू को कुर्ग का नाम दे दिया। आजादी से पहले 1947 तक कुर्ग पर अंग्रेजों का शासन रहा और फिर 1950 तक यह एक स्वंतत्र राज्य था। 1956 में राज्यों के पुर्नगठन के दौरान इसे कर्नाटक राज्य का हिस्सा बना दिया गया।

शहर पर छाए बादलों का एक दृश्य

कुर्ग में अंग्रेजों ने कॉफी की पैदावार की शुरूआत की थी। आज कुर्ग सारी दुनिया में यहां की कॉफी की पैदावार के लिए जाना जाता है, यह भारत में कॉफी पैदा करने का प्रमुख केंद्र है। यहां की कॉफी की मुख्य प्रजातियां अरेबिका और रोबस्टा है।

अगले दिन दोपहर में निकले तो बताया गया कि पैदल ही शहर जा सकते हैं और होटल से नीचे की ओर दो कि.मी. की दूरी पर राजा की सीट है। होटल वालों की ओर से बता दिया गया था कि पांच बजे के बाद वापसी में पैदल नहीं आएं... टैक्सी या ऑटो लें क्योंकि अंधेरा होने पर जंगली कुत्तों आदि का डर रहता है।

राजा की सीट:

'राजा की सीट' मदिकेरी शहर का एक प्रमुख स्थान है। कहा जाता है कि हरियाली की परतों और बादलों की धुंध से सजी ऊंची-नीची पहाड़ियों की श्रृंखला के बीच, इस स्थान पर कोडागु के राजा ने अपने संध्या विहार और मनोरंजन के लिए यह बाग बनवाया था। वह अपनी रानियों के साथ समय बिताते थे और सूर्यास्त को देखने बाद ही लौटते थे। बाग में राजा की सीट एक छोटा सा मंडप है जो ईंट और गारा (यानि मोर्टार) से बनाया गया था। यहां की खूबसूरती को देख पर्यटक अपने आप खिंचे चले आते हैं। इस खूबसूरत बगीचे से आपको प्रकृति के सुंदर दृश्य देखने को मिलते हैं।

इसके अलावा, पूरे शहर का शानदार नजारा भी आसानी से देखा जा सकता है। फोटोग्राफी के शौकीनों के लिए भी यह बहुत उपयुक्त स्थान है। इस स्थान पर परिवार के साथ या अकेले एक - दो घंटे बिता सकते हैं। पार्क में प्रवेश शुल्क मात्र पांच रूपए है।

राजा सीट पार्क में रंग बिरंगे फव्वारे

मौसमी फूलों की बहार के साथ यहां खूबसूरत झरना है, जिस पर सूर्यास्त के बाद रोशनी की जाती है और संगीत चलाया जाता है। इस स्थान से दर्शक सूर्योदय और सूर्यास्त के बेहद सुंदर दृश्य देख सकते हैं।

ओंकारेश्वर मंदिर :

अगले दिन सुबह ही निकल पड़े और सबसे पहले राजा की सीट पर एक घंटा बिताया, वहां से लगभग दो कि.मी. की दूरी पर ओंकारेश्वर मंदिर मदिकेरी का एक दर्शनीय तथा आस्था का प्रमुख केंद्र है। इस खुबसूरत मंदिर का निर्माण 1820 में लिंगराजेन्द्र -।। ने कराया था। भगवान शंकर को समर्पित ओंकारेश्वर मंदिर गोथिक वास्तुकला की शैली पर आधारित है लेकिन इसमें इस्लामिक शैली का मिश्रण भी देखा जा सकता है। इस मंदिर की सुन्दरता और यहां की वास्तुकला पर्यटकों को आकर्षित करती है।

मंदिर के द्वार में प्रवेश करते ही एक तांबे की प्लेट पर इस मंदिर का पूरा इतिहास लिखा है। इस मंदिर के चार कोनों पर बने चार बड़े अद्भुत बुर्ज और मंदिर के ठीक सामने बना जलाश्य यहां का प्रमुख आकर्षण है। इस तालाब में कई तरह की सुंदर मछलियां भी पाली गई हैं।

ओंकारेश्वर मंदिर पर विशेष अवसरों पर की गई रोशनी

जनरल थिमैया मेमोरियल संग्रहालय :

ओंकारेश्वर मंदिर से करीब एक कि.मी. दूर, थोड़ी उंचाई पर जनरल थिमैया मेमोरियल संग्रहालय है। मंदिर से बाजार में घूमते हुए पैदल आ सकते हैं या ऑटो ले सकते हैं। कोडागु वासी और भारतीय सैनिकों में सबसे उल्लेखनीय, जनरल के.एस. थिमैया को उनकी बहुमूल्य सेवाओं के लिए देश की ओर से दिया गया उचित सम्मान है। जीटी रोड पर 2.6 एकड़ के क्षेत्र में फैले इस युद्ध स्मारक में भारतीय सैनिकों की वीरता की एक झलक देख सकते हैं।

संग्रहालय में प्रदर्शित 50 से 60 वर्ष से अधिक पुराने हथियार यहां के प्रमुख आकर्षण हैं। इनमें लाइट और मीडियम मशीनगन, सेल्फ-लोडिंग राइफल, रॉकेट लॉन्चर, 32 मिमी और पॉइंट 38 राइफल, 7.62 बैरल और 303 बैरल की राइफलें हैं, जिनका इस्तेमाल भारतीय सेना के जवानों ने पहले के कई ऑपरेशनों (युद्धों) में किया था। विभिन्न प्रकार के प्राचीन हथियार और उनके अवशेष देखे जा सकते हैं, जिसमें एक कैनन (छोटी तोप) और एक मिग-21 लड़ाकू जेट शामिल है। लेकिन एक सबसे अलग और प्रसिद्ध है, वह है बोफोर्स तोप। इस विशाल तोप को भारतीय सेना की मद्रास रेजिमेंट द्वारा स्थापित किया गया है।
संग्रहालय में रखे गए अधिकांश हथियार भारतीय सेना की ओर से तत्कालीन सेनाध्यक्ष जनरल बिपिन रावत द्वारा उपहार स्वरूप दान किए गए थे। उन्होंने संग्रहालय समिति के सदस्यों से कहा था कि वे 1,200 हथियारों में से कोई 24 हथियार चुनें। संग्रहालय में प्रदर्शित पुराने हथियारों को अनुभवी इंजिनियरों द्वारा अत्याधुनिक तकनीकों का उपयोग करके, अच्छी अवस्था में बहाल किया गया है। इनके अलावा सैनिकों द्वारा आमने-सामने की लड़ाई के लिए उपयोग किए जाने वाले कई एकल हथियार भी रखे गए हैं।

राइफलें

1970 के युद्ध में लाया गया एक टैंक

स्मारक का एक अन्य प्रमुख आकर्षण एक सेवामुक्त मिग -21 लड़ाकू जेट और इंटरसेप्टर विमान है, जिसे 1971 में भारत-पाकिस्तान युद्ध में भारतीय वायु सेना ने इस्तेमाल किया था। यह वायुसेना ने उपहार स्वरूप दिया है। विशाल जेट को स्थापित करने के लिए तीन ठोस प्लेटफार्म बनाए गए हैं।

कैसे बना सनी साइड एक युद्ध स्मारक ?

वर्षों से कोडागु के निवासी, जनरल थिमैया के घर को स्मारक में बदलने के लिए राज्य सरकार से लगातार अनुरोध कर रहे थे। हालांकि, इस घर को परिवहन विभाग ने 1972 में दो लाख रुपये में खरीद लिया था। अंतत: 2005 में, कर्नाटक राज्य सरकार ने जनरल थिमैया को उचित सम्मान देते हुए, जनरल थिमैया के इसी घर 'सनी साइड' को ही उनके स्मारक के रूप में, एक युद्ध संग्रहालय में परिवर्तित करने का निर्णय लिया। इस कार्य हेतु 2013 में केवल पांच करोड़ रुपए का बजट प्रदान किया गया था, जिससे इसके जीर्णोद्धार का कार्य शुरू हुआ। धन की कमी और कुछ कानूनी बाधाओं के कारण अगले कुछ वर्षों में परियोजना में देरी हुई थी। प्रारंभिक नवीनीकरण कार्य 2019 की शुरुआत में शुरू हुआ था। अंतत: फरवरी, 2021 में राष्ट्रपति जी ने यह संग्रहालय राष्ट्र को समर्पित किया था।

जनरल के.एस. थिमैया भारतीय सेना के एक प्रतिष्ठित सैनिक थे, जो 1957 से 1961 तक भारतीय थल सेनाध्यक्ष रहे थे। उन्हें द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान युद्ध में इन्फैंट्री ब्रिगेड की कमान संभालने के लिए अंग्रेजी-भारतीय सेना के एक प्रतिष्ठित लड़ाकू अधिकारी के रूप में माना जाता है। सेना से सेवानिवृत्ति के बाद, उन्हें जुलाई 1964 से दिसंबर 1965 तक साइप्रस में संयुक्त राष्ट्र शांति सेना का कमांडर नियुक्त किया गया और 18 दिसंबर 1965 को ड्यूटी के दौरान साइप्रस में ही उनका निधन हो गया था।

इसमें जनरल थिमैया की एक मूर्ति स्थापित की गई है। यहां द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटिश सेना के कमांडर फील्ड मार्शल क्लाउड जॉन अकिनलेक का एक भिति चित्र भी रखा गया

है। संग्रहालय में एक युद्ध डायरी भी है जिसमें भारतीय सैनिकों द्वारा लड़े गए विभिन्न युद्धों की हस्तलिखित कहानियां रखी गई हैं।

आप ऑडियो और वीडियो रिकॉर्डिंग के माध्यम से संग्रहालय के अंदर रखे फाइटर जेट, हथियार और लेखों के बारे में जान सकते हैं। संग्रहालय मंच के सदस्य आगंतुकों को उनके बीच गर्व की भावना पैदा करने के लिए हथियारों के बारे में बताते हैं और युवा पीढ़ी को अपनी मातृभूमि की सेवा करने के लिए प्रेरित करते हैं।

हमें बताया गया कि संग्रहालय के सौंदर्यीकरण के लिए, राज्य सरकार ने दो एकड़ के भूखंड को पार्क में बदलने की योजना बनाई है। स्मारक के विस्तार के लिए स्थान की कमी को देखते हुए स्थल के पास स्थित आरटीओ क्वार्टर की कुछ जमीन दी गई थी।

गवर्नमेंट म्यूजियम:

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के तहत इस सरकारी संग्राहलय की 1971 में स्थापना की गई थी। यह भी ओंकारेश्वर मंदिर से करीब एक कि.मी. दूर है। सरकारी संग्रहालय मादिकेरी किला परिसर में, चर्च भवन में स्थित है। किले के क्षेत्र में रोमन-गॉथिक शैली के चर्च का निर्माण 1855 में जिले के ऐतिहासिक, पारंपरिक कला तथ्यों को संरक्षित और प्रदर्शित करने के उद्देश्य से किया गया था। वास्तुकला 166 साल पुरानी है यहां के विशेष आकर्षणों में प्रवेश द्वार पर एक लंबा आर्क, पारदर्शी कांच की चित्रित खिड़कियों के साथ विशाल सभागार शामिल है।

इस विशेष संग्रहालय की स्थापना 1971 में कर्नाटक सरकार द्वारा इस भव्य चर्च में की गई थी। गिरजाघर भी एक विशाल संरचना है जो बहुत सुंदर वेदी वाले प्रार्थना कक्ष से जुड़ा है। इसकी पृष्ठभूमि में स्ट्रैंड (साना या कट) ग्लास पेंटिंग का बड़ी खूबसूरती से काम किया गया है।

इस संग्रहालय में गंगा, कोंगलवास-चंगलवास, होयसाल, विजयनगर साम्राज्य, बेलूर के नायक, स्थानीय प्रमुख और ब्रिटिश काल से संबंधित कलात्मक वस्तुएं हैं। प्रदर्शनियों में हिंदू और जैन पत्थर और कांस्य चित्र, तलवारों की किस्में, वीराराजेंद्र काल से संबंधित ओडिकट्टी (कोडागु के कोडवा लोगों का युद्ध में उपयोग किया जाने वाला एक स्वदेशी हथियार है), बंदूकें और विभिन्न काल के आभूषण भी शामिल हैं। इस संग्रह में 242 मूर्तियां, 383 सिक्के, 38 शस्त्र, 8 पुरातत्व अवशेष तथा 129 विविध वस्तुएं रखी गई हैं।

राजा द्वारा धारण किए जाने वाले ओडिकट्टी का चित्र

यहां एक और खास वस्तु रखी गई है, सन् 1831 में, तत्कालीन महाराजा द्वारा ब्रिटेन से लाया गया एक अंग्रेजी टाइपराइटर।

मादीकेरी किला :

मादीकेरी किला, एक मिट्टी का किला है जिसे 17वीं सदी में मुद्दाराजा के द्वारा बनवाया गया था। इस किले के अंदर एक महल भी है। इस किले का टीपू सुल्तान ने पुर्ननिर्माण करवाया था। लिंगराजेन्द्र वाडियार-।। ने (1812 से 1814 के दौरान) एक बार फिर से इस किले का निर्माण करवाया। किले के प्रांगण में एक कछुए की मूर्ति बनी हुई है और इस स्थान पर हाथी जैसी दो विशाल पत्थर रखे हुए है, जो राजा चिक्का वीरराजेन्द्र द्वारा मारे गए दो शाही हाथियों की याद में बनवाए थे। इस किले के अंदर, एक प्राचीन मंदिर भी है जिसे वीरभद्र मंदिर के नाम से जाना जाता है। इस किले में साहस की कई कहानियां सुनाई जाती है। कहा जाता है कि अंग्रेज शासकों ने 1933 में इस संरचना को तीसरी बार बनवाया था। इसमें एक क्लॉक टॉवर और 110 फीट ऊंचे एक पोर्टिको का निर्माण किया गया है।

राजा का मकबरा :

मदिकेरी से किले से उत्तर-पूर्व की ओर 1.5 कि.मी. दूर है। मकबरों के प्रवेश द्वार पर भी नक्काशी की गई है। वास्तव में यहां कन्नड भाषा में समाधी शब्द लिखा है जिसे अंग्रेजी में 'tomb' लिखा गया है। यहां अंदर भगवान शिव का मंदिर है और प्रतिदिन उनकी पूजा भी की जाती है क्योंकि राजा हिंदू थे। यह एक बहुत ही आकर्षक तथ्य है कि यहां राजवंश की तीन समाधियां मौजूद हैं। इनके बीच में सबसे बड़ी समाधि कोडवा राजा डोड्डावीरराजेंद्र और उनकी पत्नी महादेवीयम्मा की हैं। चिक्का वीरराजेंद्र द्वारा अपने पिता लिंगराजेंद्र की समाधी 1820 ई. में बनाई गई थी। उसके दाहिनी ओर की समाधि 1834 ईस्वी में निर्मित वीरराजेंद्र के गुरु रुद्रप्पा की है। निकट ही दो बहादुर सैनिकों बिदन्दा बोपू और उनके बेटे बिदन्दा सोमैया की समाधियां हैं, जो टीपू सुल्तान के साथ लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए थे।

अब्बी फॉल्स - मदिकेरी शहर से लगभग दस कि.मी. दूर यह जलप्रपात कुर्ग का एक प्रमुख आकर्षण है। अब्बी फॉल्स को "एबी फॉल्स" के नाम से भी जाना जाता हैं। मुख्य रूप से ढ़लानदार चट्टानों से बहने वाला जल स्त्रोत, पश्चिमी घाट का एक हिस्सा है। इसे दक्षिण भारत का सबसे खूबसूरत जलप्रपात माना जाता हैं। कुर्ग आने वाले पर्यटक 70 फीट की ऊंचाई से गिरते हुए पानी के इस झरने को देखने जरूर आते हैं और आसपास के प्राकृतिक वातावरण को देख कर मन्त्र मुग्ध हो जाते हैं। यहां एक संकरा सा रास्ता है। मसालों और कॉफी के बागों के बीच गुजरते हुए पर्यटक इस तक पहुंचते हैं। यहां का शांत माहौल मन को खुश कर देता है।

अंग्रेजों के शासन के दौरान, इसे 'जेसी' फॉल्स कहा जाता था। इस क्षेत्र के पहले ब्रिटिश पादरी ने अपनी बेटी जेस्सी की याद में इस जगह का नाम रखा था। बाद में मादीकेरी के पहले अंग्रेज कप्तान की बेटी एब्बे के नाम पर इस झरने का नाम रख दिया गया। चूंकि यहां के दृश्य अत्यंत

लुभावने हैं, इसलिए यहां अनेक फिल्मों की शूटिंग की गई है। हिंदी फिल्म **‘खून भरी मांग’** उल्लेखनीय है।

अब्बी जलप्रपात

इस स्थान पर जाने का सबसे अच्छा समय सर्दियों के महीने हैं। समय सुबह 9 बजे से 5 बजे के बीच है। प्रवेश शुल्क 15 रुपए है और कई बार वह भी नहीं लिया जाता।

मंडलपट्टी :

मादिकेरी के पासमात्र 17 कि.मी. दूर, अब्बी फॉल्स के रास्ते पर, लगभग 4050 फीट की ऊंचाई पर पहाड़ियों की गोद में बसा मंडलपट्टी प्राकृतिक और ऐतिहासिक रूप से समृद्ध शहर है। स्थानीय लोग मंडलपट्टी का अर्थ 'बादलों का बाजार' बताते हैं।

मंडलपट्टी में कोई प्रवेश शुल्क नहीं है। ट्रेकिंग करने वालों के लिए सप्ताह के यह सुबह छः बजे से शाम के छः बजे तक खुला रहता है। ट्रेकिंग में (मौसम की स्थिति के आधार पर) लगभग चार से पांच घंटे लग सकते हैं। यदि आप एक पक्षी प्रेमी और एक उत्सुक फोटोग्राफर हैं, तो कुछ अधिक समय भी लग सकता है। शहर के जीवन की भागदौड़ से राहत के लिए जिले के स्थानीय लोगों के बीच एक लोकप्रिय ‘वीक एंड डेस्टिनेशन’ भी है।

मंडलपट्टी व्यू पॉइंट, कूर्ग

यह पुष्पगिरी रिजर्व फ़ॉरेस्ट का हिस्सा है और ट्रेकिंग के लिए प्रसिद्ध है। पर्यटक यहां से कॉफी के बागों के साथ ही प्रकृति के सबसे अद्भुत नजारे देखते हुए, ट्रेकिंग का भी आनंद ले सकते हैं। यह एक पॉकेट-फ्रेंडली पर्यटन स्थल है।

सोमवारपेट :

तीन दिन मादिकेरी शहर में ठहरने के बाद, हम सोमवारपेट के लिए चले जो मादिकेरी से करीब 38 कि.मी. दूर एक कस्बा है। यहां पहुंचने में करीब सवा घंटे का समय लगा। सोमवारपेट के आसपास पुष्पागिरि पहाड़ियां, कोटेबेट्टा और मक्कालागुडी बेट्टा जैसे कई महत्वपूर्ण स्थान हैं। पुष्पागिरि कुर्ग का दूसरा सबसे ऊंचा शिखर है और यह सोमवारपेट से छः कि.मी. दूर है। प्राचीन ग्रंथों में कुमारपर्वत नाम से इसका उल्लेख मिलता है। पुष्पागिरि का यह शिखर ट्रैकिंग के लिए प्रसिद्ध है।

पुष्पगिरी वन्यजीव अभ्यारण :

पुष्पागिरि शिखर के निचले भाग में ही पुष्पगिरि वन्यजीव अभयारण्य है। दुनिया के एक महत्वपूर्ण पक्षी-क्षेत्र के रूप में प्रसिद्ध, इस अभयारण्य में पक्षियों की कई प्रजातियां देखने को मिलती हैं। इस अभयारण्य की ऊंचाई अलग – अलग स्थानों पर 1600 से 1712 मीटर तक है।

अगर आपको पक्षी, जानवरों को देखने का बेहद शौक है, तो पुष्पगिरी वन्यजीव अभयारण्य एक श्रेष्ठ स्थान है। यहां विलुप्त होती जा रही और दुर्लभ पक्षियों की कई प्रजातियां देख सकते हैं। यहां के पहाड़ी इलाकों में एक से डेढ़ किलो वजनी गिलहरी, भूरे मुश्कबिलाव (सिवेट), चित्तीदार हिरण और हाथी जैसे कई जानवर भी रहते हैं। यहां प्रवेश शुल्क मात्र 25 रुपए है और घूमने का समय सुबह 7.00 बजे से शाम 5.00 बजे के बीच है।

ताडियांदामोल शिखर:

5724 फीट की ऊंचाई पर स्थित, ताडियांदामोल कुर्ग की सबसे ऊंची और कर्नाटक में दूसरी सबसे ऊंची चोटी मानी जाती है। यहां के पहाड़ घने जंगलों से भरे पड़े हैं। यह स्थान ट्रैकिंग प्रेमी पर्यटकों के लिए श्रेष्ठ है। आप जीप के माध्यम से भी इस पहाड़ी के दो-तिहाई क्षेत्र तक पहुंच सकते हैं। यहां प्रवेश शुल्क नहीं है। लेकिन जीप का किराया चार व्यक्तियों के लिए 200 रुपए

है। यदि ग्रुप में चार लोग नहीं हों तो प्रति व्यक्ति 60 रुपए लिए जाते हैं। प्रवेश का समय प्रात: 7.00 बजे से दोपहर 3.00 बजे के बीच है क्योंकि शाम 5.00 बजे इसे बंद कर दिया जाता है।

इरुप्पु फॉल्स ब्रहमगिरी :

सोमवारपेट से लगभग दो घंटे की दूरी पर ब्रहमागिरी पहाड़ी श्रृंखलाओं के तल पर स्थित इरुप्पु जलप्रपात यहां का एक महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल है। शहर की भागदौड़ भरी जिंदगी के बीच यह एक आरामदायक स्थान भी, यहां आप अपने परिवार या दोस्तों के साथ एक शानदार ट्रिप लगा सकते हैं। यहां ट्रेकिंग जैसी रोमांचक गतिविधियों का आनंद भी लिया जा सकता है। इस जलप्रपात से ब्रहमागिरी चोटी तक ट्रेकिंग ट्रेल्स काफी रोमांचक है।

खासकर मॉनसून के दौरान इस की खूबसूरती काफी ज्यादा बढ़ जाती है। जलप्रपात और यहां के प्राकृतिक नजारों को देखने के लिए देश-विदेश से पर्यटकों का आगमन होता है। मादिकेरी से भी इरुप्पु जलप्रपात के लिए बसें मिलती हैं। बस का किराया लगभग 50 रुपए प्रति व्यक्ति है तथा लगभग डेढ घंटे का समय लगता है। जबकि टैक्सी या निजी वाहन से कम समय लगता है। लेकिन कभी कभी सड़क पर जाम की स्थिति और बरसात के कारण अधिक समय भी लग सकता है।

इरुप्पु जलप्रपात एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल के साथ-साथ एक तीर्थस्थल भी है। इससे एक पौराणिक कथा भी जुड़ी है, माना जाता है कि सीता की खोज में जब राम-लक्ष्मण ब्रहमागिरी

पहाड़ियों से होकर जा रहे थे तो भगवान राम ने लक्ष्मण से पानी लाने के लिए कहा, तब लक्ष्मण ने ब्रह्मागिरी पहाड़ी पर एक तीर छोड़ा, जिसके बाद वहां से एक नदी का निर्माण हुआ। इसे ही लक्ष्मण तीर्थ के नाम से जाना जाता है। यहां लक्ष्मण तीर्थ नदी तट पर स्थित भगवान शिव को समर्पित एक प्रसिद्ध मंदिर (रामेश्वर मंदिर) है, जहां रोजाना भक्तों का आगमन होता है। विशेषकर, शिवरात्रि के दौरान यहां शिव भक्तों का भारी जमावड़ा लगता है। शिवरात्रि के दौरान यहां श्रद्धालु पवित्र स्नान कर सकते हैं।

इरुप्पु जलप्रपात के अलावा आप यहां से 12 कि.मी दूर मुनिकल की सैर का आनंद ले सकते हैं। यह एक खास स्थल है, जो अपनी प्राचीन गुफाओं के लिए प्रसिद्ध है। माना जाता है कि गुफा के अंदर से कोई भी आवाज बाहर नहीं जाती। यह स्थल संतों का निवास था, जहां वे ध्यान जैसी आध्यात्मिक क्रियाएं करते थे।

कुर्ग की यात्रा के लिए सबसे अच्छा समय :
कुर्ग की यात्रा के लिए सबसे अच्छा समय सितंबर से जून का माना जाता हैं। जुलाई से अगस्त के बीच भारी वर्षा और भूस्खलन होने के कारण कुर्ग जाने से परहेज करना ही अच्छा है। यदि ट्रैकिंग के उद्देश्य से कुर्ग की यात्रा करना चाहते हैं तो अक्टूबर से मार्च के दौरान का समय सबसे अच्छा होता हैं। लगभग चार दिन में इस पर्यटन स्थल की यात्रा पूरी कर सकते हैं।

कैसे पहुंचे

हवाई मार्ग : कुर्ग के लिए निकटतम हवाई अड्डा मैंगलूरू अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा है । यहां से कुर्ग लगभग 137 कि.मी. दूर है। यहां से राज्य सरकार की बसें या फिर टैक्सियां आसानी से उपलब्ध हैं।

रेल मार्ग :
कुर्ग का सबसे निकटतम रेलवे स्टेशन मैसूरू रेलवे स्टेशन है जो यहां से लगभग 116 कि.मी. दूर है। मैसूरू रेलवे स्टेशन से भी टैक्सी या राज्य सरकार की बसें उपलब्ध हैं।

सड़क मार्ग :
कुर्ग सड़क मार्ग से मैसूरू, बैंगलोर और मैंगलूरू शहरों से तो जुड़ा ही हैं, साथ ही केरल के कोझीकोड, कन्नूर जैसे शहरों से राजमार्गों के द्वारा सुव्यवस्थित रूप से जुड़ा हुआ हैं।

कुर्ग में ईको-पर्यटन, संस्कृति, वेश-भूषा, विरासती धरोहरें, खानपान, विशेष व्यंजनों आवासीय सुविधाओं, आदि सहित बहुत कुछ...	बाकी अगले अंक में...

*** सम्प्रति: 'अतुल्य भारत' के पूर्व प्रबंध सम्पादक ।**

जांजगीर:

आध्यात्मिकता और प्रकृति का अनोखा संगम

-कुशाल सिंह

पिछले दिनों किसी समाचार पत्र में भारत में पर्यटन स्थलों के बारे में एक लेख पढ़ा था। उसमें उल्लेख था कि देश में छः राज्य ऐसे हैं जहां पर्यटक आगमन बहुत कम है। उसमें एक नाम छत्तीसगढ़ का भी था। चूंकि मुझे 24 वर्ष तक कोरबा में कार्य करने का अवसर मिला है और आसपास के बहुत से स्थलों को देखा है, इससे लगा कि शायद सूचना सही नहीं है। फिर भी कुछ तो है, शायद प्रचार में कमी रह गई हो। इस क्षेत्र की धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहरों, सुन्दर प्राकृतिक नजारों के बारे में लोग अधिक नहीं जानते हो, यह सोच कर मैने जांजगीर-चांपा के कुछ लोकप्रिय स्थानों को कलमबद्ध करने का प्रयास किया है। जांजगीर-चांपा छत्तीसगढ़ का एक प्रमुख जिला है, जिसकी स्थापना 25 मई 1998 को हुई थी। छत्तीसगढ़ राज्य के मध्य में स्थित होने के कारण इसे छत्तीसगढ का हृदय माना जाता है। जांजगीर कलचुरी वंश के महाराजा जाज्वल्य देव की नगरी है। यहां स्थित विष्णु मंदिर जांजगीर-चांपा के सुनहरे अतीत का प्रतीक है। विष्णु मंदिर वैष्णव समुदाय की प्राचीन कलात्मकता की परिचायक है। हसदेव परियोजना को जिला जांजगीर-चांपा की जीवन वाहिनी माना गया है। साथ ही महानदी का वरदान प्राप्त है।

जांजगीर-चांपा जिले के दर्शनीय स्थल

छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर से 175 कि.मी. दूर जांजगीर-चांपा में देखने और घूमने के लिए बहुत से स्थान है। आसपास प्राकृतिक और प्राचीन स्थल बिखरे हुए हैं। इस क्षेत्र में मंदिरों की अपनी एक अलग परम्परा और श्रृंखला है। अधिकतर देवधाम किसी न किसी पहाड़ या पहाड़ी पर बने हैं। इसके अलावा प्राकृतिक जलप्रपात, झील और तालाबों का अपना महत्व है। प्रशासन द्वारा इन स्थानों का जीर्णोद्धार कर, पर्यटकों के लिए अच्छी सुविधाएं स्थापित की गई हैं।

मां चंद्र हासिनी देवी मंदिर :

जांजगीर-चांपा में चंद्रपुर में महानदी के किनारे पर स्थित मां चंद्र हासिनी देवी को समर्पित यह मंदिर जांजगीर चांपा का एक मुख्य धार्मिक स्थल है।

चंद्रहासिनी देवी की प्रतिमा

महानदी के तट पर चन्द्र हासिनी देवी माता का एक अद्भुत मंदिर है। मां चंद्र हासिनी को शक्ति का स्वरूप माना जाता है। मान्यता है कि यहां पर जो भी आया है, उसकी सभी मनोकामना पूरी हुई है। यह मंदिर बहुत ही सुंदर तरीके से बनाया गया है और यहां पर अनेक देवी देवताओं की बहुत ही आकर्षक मूर्तियां भी स्थापित हैं। यहां पर शिव भगवान जी की अर्धनारीश्वर प्रतिमा देखने के लिए मिलती है, जो बहुत बड़ी है और आकर्षक है। इसके अलावा यहां पर समुद्र मंथन के दृश्य को भी मूर्तियों के द्वारा दिखाया गया है।

साथ ही यह प्रसिद्ध तीर्थस्थान, एक पर्यटन स्थल के रूप में भी दिन प्रतिदिन ख्याति पा रहा है। प्रशासन की ओर से मंदिर में बहुत सुंदर बगीचों का निर्माण किया गया है, जिसमें बहुत सारे देवी देवताओं के मूर्तियां भी रखी गई हैं। यहां पर मूर्तियों के माध्यम से रामायण और महाभारत के बहुत सारे दृश्यों को दिखाया गया है। महानदी के सुंदर दृश्य देखते ही मन को एक अलग ही शांति अनुभव होती है। यहां बिहार, बंगाल, ओडिशा आदि राज्यों से भी लोग मन्नत मांगने आते हैं। साल में नवरात्रि के समय एक बड़े मेले का आयोजन किया जाता है।

मां नाथल दाई देवी मंदिर :

मां नाथल दाई मंदिर चंद्रपुर में स्थित एक और बहुत सुंदर मंदिर है। नाथल दाई को चंद्रहासिनी माता की बहन माना जाता है। आश्चर्य तो यह होता है कि दोनों की प्रतिमाओं के मुख मिलते जुलते हैं।

यहां पर भी नवरात्रि के समय विशाल मेला लगता है, जिसमें बहुत दूर-दूर से लोग दर्शन करने आते हैं। यहां पर भी आपको बहुत से देवी देवताओं के दर्शन करने के लिए मिलते हैं। इस मंदिर में भी अधिकतर ओडिशा और पश्चिमी बंगाल के विभिन्न स्थानों से आए भक्तगण और पर्यटक देखे जा सकते हैं।

श्री गोपालजी महाप्रभु मंदिर :

चंद्रहासिनी मंदिर से कोई दो कि.मी. ही दूर श्री कृष्ण जी और राधा जी को समर्पित श्री गोपालजी महाप्रभु मंदिर जांजगीर का एक प्रमुख धार्मिक स्थल है। यहां पर श्री कृष्ण और राधा जी की बहुत सारी प्रतिमाओं के दर्शन करने के लिए मिलते हैं। यह पूरा मंदिर पत्थर से बना हुआ है और मंदिर के हर भाग पर बहुत सुंदर कारीगरी की गई है।

गोपालजी महाप्रभु मंदिर

श्री शिवरीनारायण धाम :

जिला मुख्यालय से 50 कि.मी. दक्षिण की ओर तहसील नवागढ़ में महानदी के किनारे पर श्री शिवरीनारायण धाम नामक जगह पर स्थित यह जांजगीर-चांपा का एक प्राचीन तथा प्रसिद्ध मंदिर है। इस मंदिर में मुख्य रूप से विष्णु भगवान जी के दर्शन होते हैं। यहां पर विष्णु भगवान जी की बहुत सारी प्रतिमाएं देखने को मिलती हैं। इस मंदिर का डिजाइन भी बहुत सुंदर है।

शिवरीनारायण के बारे में ....

शिवरीनारायण मंदिर का एक पौराणिक इतिहास है जो रामायण काल से जुड़ा हुआ है। शबरी के झूठे बेर वाली कथा तो हम सबने बचपन से सुनी है। जनश्रुति के अनुसार, शबर नामक राजा दंडकारण्य के एक शक्तिशाली राजा थे। शबरी उनकी एक पुत्री थी, जो भगवान श्री विष्णु की अनन्य भक्त थी। राजा शबर उसका विवाह कराना चाहते थे, परन्तु शबरी को यह स्वीकार नहीं था। अंतत: वह एक दिन घर छोड़ कर वनों की ओर चली गई और मतंग ऋषि के आश्रम जा पहुंची और ऋषि को गुरू बनाकर संन्यासिनी बन कर में भगवत्त भक्ति में लीन हो गई।

उसकी भक्ति को देखकर उनके गुरू ऋषि मतंग ने बताया कि श्री विष्णु मानव अवतरण के रूप में श्रीराम उनके पास एक दिन इसी स्थान पर आएंगे। श्री राम जी के प्रति अनन्य निष्ठा से वर्षों तक उनकी प्रतीक्षा करती रही। श्री राम के वनवास काल की अवधि में दंडकारण्य में ही उनकी शबरी माता से भेंट हुई और श्री राम ने इसी स्थान पर शबरी से जूठे बेर ग्रहण किए गए थे। पौराणिक कथाओं के अनुसार शबरी आश्रम रामायण के समय से स्थित है।

मंदिर में बनी एक पेंटिंग

महानदी के तट पर बसे शबरी नगर में 11वीं शताब्दी में हैहय वंश के राजाओं के द्वारा लक्ष्मी नारायण मंदिर बनाया गया। कालांतर में इस स्थान का नाम शबरी नारायण से शिवरीनारायण हो गया। शबरी का मंदिर भी आश्रम के परिसर में ही है। शिवरी नारायण मंदिर में वैष्णव शैली की अदभुत कलाकृतियां देखी जा सकती हैं। प्रति वर्ष माघ पूर्णिमा के अवसर पर यहां एक महोत्सव का आयोजन किया जाता है, जिसमें यहां की सांस्कृति, लोकगीत-संगीत के कार्यक्रम किए जाते हैं। पर्यटक यहां पर आ कर अच्छा समय बिता सकते हैं।

विश्राम वट जांजगीर :

शिबरी नारायण मंदिर से दो कि.मी. दूर महानदी के पार एक प्राचीन वट वृक्ष को विश्राम वट कहते हैं। विश्राम वट जांजगीर का एक प्राचीन एवं धार्मिक स्थल है। प्राचीन ग्रंथों के अनुसार यहां पर श्री राम और लक्ष्मण जी ने इसी वटवृक्ष के नीचे विश्राम किया था। नदी के किनारे हनुमान जी का मंदिर भी बना हुआ है। आसपास के नगरों के निवासी सप्ताहांत यहां पर घूमने के लिए आते हैं। आपको भी अच्छा लगेगा ।

विश्राम वट

भीमा तालाब :

भीमा तालाब जांजगीर चांपा का एक प्रमुख पर्यटक स्थल है। यह बहुत बड़े क्षेत्र में फैला हुआ एक सुंदर तालाब है। भीमा तालाब के बारे में जनश्रुति है कि इस तालाब का निर्माण पांडव पुत्र भीम ने किया था। इसलिए इस तालाब को भीम तालाब के नाम से जाना जाता है। भीमा तालाब में आपको सूर्यास्त का सुंदर दृश्य देख सकते है। इसके निकट ही एक और तालाब है, जिसे तालाब रानी तालाब कहा जाता है। इस तालाब का दृश्य भी बहुत ही आकर्षक रहता है।

सूर्यास्त के समय भीमा तालाब में छाई लालिमा

पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से प्रशासन की ओर से तालाब का पुरोद्धार कर किया गया है। इसके किनारे एक हरा भरा बहुत सुंदर बाग विकसित किया गया है। बाग में कसरत करने के लिए यंत्र भी लगाए गए हैं और सुबह के समय योग की कक्षा भी लगती है। भीमा तालाब में मोटरबोट की व्यवस्था की गई है। नगरवासी और पर्यटक 50 रूपए में आधा घंटा तक इस मोटरबोट का आनंद ले सकते हैं। गोवा की तर्ज पर यहां पैरासेलिंग की व्यवस्था की गई है। भीमा तालाब के निकट शहर और बाहर से आए पर्यटक पैरासेलिंग करके उड़ते हुए दिखाई देते हैं। छत्तीसगढ़ में यह सुविधा एकमात्र जांजगीर शहर में ही उपलब्ध है। पर्यटक यहां पर अपना बहुत अच्छा समय बिता सकते हैं। इस तालाब के किनारे पर विष्णु जी का एक मंदिर है। ऐतिहासिक विष्णु मंदिर को देखने के लिए बड़ी संख्या में पर्यटक बाहर से आते हैं।

भगवान विष्णु मंदिर :

छत्तीसगढ़ के दक्षिण कौशल क्षेत्र में भगवान विष्णु को समर्पित और नागर शैली में केवल बलुआ पत्थरों से निर्मित इस प्राचीन मंदिर का निर्माण कल्चुरी नरेश जाज्वल्य देव प्रथम ने भीमा तालाब के किनारे 13वीं शताब्दी में करवाया था। आज भी इस मंदिर को भारतीय स्थापत्य कला की संरचना का अनुपम उदाहरण माना जाता है। मंदिर पूर्वाभिमुखी है तथा सप्तरथ योजना से बना

हुआ है। गर्भगृह के दोनों ओर दो कलात्मक स्तंभ है जिन्हे देखकर यह लगता है कि पुराने समय में मंदिर के सामने मंडप निर्मित था जो कालांतर में नहीं रहा। मंदिर का निर्माण एक ऊंची जुगती (मंच) पर किया गया है। मंदिर के प्रवेश द्वार पर भी सुंदर नक्काशी (कारीगरी) की गई है। लेकिन मंदिर के गर्भ गृह में किसी भी देवी अथवा देवता की प्रतिमा विराजमान नहीं है। इस मंदिर को नकटा मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। परिसर के चारों तरफ सुन्दर बगीचा है।

नकटा मंदिर का निर्माण :

माना जाता है कि इस मंदिर का निर्माण अधूरा रह गया था जिसके कारण इस मंदिर का नाम नकटा मंदिर रखा दिया गया। इस मंदिर के अधूरे निर्माण के पीछे कई कथाएं प्रचलित हैं। एक कथा यह भी है कि यहां दो मंदिरों का निर्माण कार्य एक साथ ही आरंभ किया गया था एक शिबरी और दूसरा विष्णु मंदिर। एक दिन राजा को स्वप्न आया, जिसमें विष्णु जी उनसे कहा कि जो स्थान पहले तैयार होगा वह उसी में वास करेंगे। संयोगवश शिबरी का मंदिर पहले पूरा हो गया और अथक प्रयासों के बाद भी शिल्पकार इस मंदिर की मूर्तियां पूरी नहीं कर पाए तथा उनकी मुखाकृतियां सही प्रकार से नहीं बन पाती थी। कालांतर में इसे नकटा मंदिर भी कहा जाने लगा। फिर भी मंदिर के चारों ओर कलात्मक मूर्तियों का सुंदर अंकन देखने योग्य है।

सिद्ध श्री नहरिया बाबा मंदिर :

श्री हनुमान जी को समर्पित श्री नहरिया बाबा मंदिर जांजगीर-चांपा का एक प्रसिद्ध मंदिर है। यहां पर हनुमान जी की बहुत ही आकर्षक प्रतिमा है। मंदिर परिसर में आपको श्री राम, लक्ष्मण, शिवजी, शीतला माता जी के भी दर्शन करने के लिए मिलते हैं। यह मंदिर जांजगीर नैला रेलवे स्टेशन के पास ही में है।

इस मंदिर के एकदम निकट से एक बड़ी नहर गुजरती है, इसलिए इस मंदिर को नहरिया बाबा मंदिर के नाम से जाना जाता है। आस पास काफी हरियाली है। इसे एक सिद्ध मंदिर माना गया है और कहा जाता है कि मंदिर में लोगों की इच्छाएं पूर्ण होती है। इसलिए यहां पर बहुत भीड़ होती है और आस्था के कारण ही प्रति मंगलवार और शनिवार को लोग हनुमान जी के दर्शन करने के लिए आते हैं।

मनका दाई का मंदिर : आश्चर्यजनक पर सत्य ।

जांजगीर में खोखरा नामक जगह पर विराजित मनका दाई माता को समर्पित यह मंदिर इस क्षेत्र का एक प्रसिद्ध स्थान है। यह बहुत ही सुंदर बना हुआ है। यहां माता और भक्तों के बीच संवाद का अनोखा तरीका देखा जाता है। श्रृद्धालु भक्त माता को बताने के लिए मंदिर की दीवारों पर अपनी बात लिख कर चले जाते हैं। शायद माता भी भक्तों की फरियाद पढ़ लेती होगी और कुछ समय बाद उनकी मनोकमाना पूरी करती है। इसी कारण से दिनोंदिन दिवारों पर लिखे संदेशो की संख्या बढ़ती जा रही है। मंदिर के पास एक बड़ा तालाब है, जिस कारण आसपास के क्षेत्र में काफी हरियाली है। इसलिए यहां आकर बहुत अच्छा लगता है और शांति मिलती है। आप यहां पर भी आकर घूम सकते हैं। यहां पर नवरात्रि के दौरान उत्सव का आयोजन किया जाता है। बड़ी संख्या में लोग यहां पर मनका देवी के दर्शन करने के लिए आते हैं।

मां मड़वारानी मंदिर :

जिला मुख्यालय से 22 कि.मी.दूर कोरबा-चांपा मार्ग पर एक ऊंची पहाड़ी चोटी पर धार्मिक श्रद्धा और आस्था का प्रतीक, आदि शक्ति मां मड़वारानी मंदिर पूरे छत्तीसगढ़ में प्रसिद्ध है। पहाड़ी पर मुख्य मंदिर में माता पांच पिंडी के रूप में विराजमान है। मंदिर में कम्ली का पेड़, मुख्य मंदिर के सामने मां का एक और मंदिर, पीछे की ओर मां काली की मूर्ति, पहाड़ी पर बजरंगबली और काल भैरव स्थापित किए गए हैं। मंदिर के बायी ओर ज्योति भवन है, जहां केवल नवरात्र के दौरान ही ज्योत प्रज्जवलित की जाती है।

मां मड़वारानी की पिंडीयां

मुख्य मंदिर तक जाने का पांच कि.मी. लंबे रास्ते का ज्यादातर हिस्सा खड़ी चढ़ाई के रूप में है और घने फूलों, फलदार वृक्षों और औषधीय पौधों से ढका है। रास्ते पर अक्सर बंदर, सांप और जंगली जानवर मिलना/ दिखना आम बात है। मंदिर के आस पास बहुत से बंदर रहते हैं जो श्रद्धालुओं द्वारा दिया गया प्रसाद खाते हैं।

पहले इसका रास्ता कच्चा था लेकिन अब प्रशासन ने पक्की सड़क बनाई है। अपनी कार या बाइक से मुख्य मंदिर तक पहुंच सकते हैं। प्रशासन ने सड़क पर रोशनी की भी व्यवस्था की है, जिससे रात में भी श्रद्धालुओं को चढ़ाई के दौरान सुविधा होती है। अधिकतर यात्री माता के दरबार में पैदल जाकर ही हाजरी लगाते हैं। एक दूसरा मंदिर कोरबा चांपा हाईवे के किनारे है, जहां से मुख्य मंदिर के लिए चढ़ाई शुरू होती है। यहां भी माता का प्रतीकात्मक एक छोटा मंदिर है। यहां से गुजरने वाले ट्रक चालक व अन्य बहुत से लोग यहीं पर माता के दर्शन करते हैं।

मुख्य मंदिर से चारों तरफ के सुंदर नजारों के साथ ही, कुछ दूरी पर बहती हसदेव नदी और दूर तक फैले जंगल के दृश्य बहुत सुंदर दिखते हैं। अगर आप साथ में दूरबीन ले जाएं तो इस जगह का और आनंद ले सकेंगे। यहां बरसात के समय घूमने के लिए आएं क्योंकि उस दौरान यहां पर चारों तरफ हरियाली रहती है।

प्रत्येक वर्ष नवरात्रि (सितंबर-अक्टूबर) के दौरान स्थानीय लोगों द्वारा विशाल मेले का आयोजन किया जाता है। आसपस के नगरों से बहुत सारे लोग मड़वा माता के दर्शन करने के लिए आते हैं। यहां पर अपने वाहन या राज्य परिवहन की बस से आसानी से पहुंच सकते हैं।

ईको-पर्यटन

देवधारा जलप्रपात :

देवधारा जलप्रपात जांजगीर में स्थित एक प्राकृतिक पर्यटन स्थल है। यह एक छोटा मगर सुंदर जलप्रपात है। यहां चारों तरफ हरियाली भरा माहौल है, इसलिए बरसात के समय में अधिक पर्यटक घूमने आते हैं। देवधारा नाम सुनते ही स्थल का किसी आध्यात्मिक देवी से संबंध प्रतीत होता है। एक पौराणिक मान्यता के अनुसार अपने बनवास काल में, भगवान राम, लक्ष्मण और सीता जी ने इसी देवधारा के वनों में के दिन व्यतीत किए गए थे जिस वजह से इस विशाल जलप्रपात का नाम देवधारा पड़ा। जलप्रपात की प्राकृतिक सुंदरता और चारों तरफ हरी-भरी खूबसूरत वादियां देख जीते जागते स्वर्ग का अनुभव होता है। देवधारा इतना आकर्षक है कि दूर-दूर से लोग देवधारा की इन वादियों को देखने बरबस ही खींचे चले आते हैं।

देवार घाटा :

यहां पर महानदी, लीलागर और शिवनाथ नदियां आपस में मिलती है। इन तीन नदियों के संगम स्थल को एक पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया गया है। जांजगीर आने वाले पर्यटकों के लिए देवार घाटा एक अच्छा पिकनिक स्थल है। पर्यटन की दृष्टि से यहां अनेक प्रजातियों के पक्षी पाले गए हैं, जिससे इस स्थान की खूबसूरती काफी बढ़ी है। साथ ही बोटिंग की सुविधा उपलब्ध कराई गई है, ताकि पर्यटक दूर तक जाकर इसके सौंदर्य को निहरी सकें। यह जगह विशेषकर फोटोग्राफरों को काफी लुभाती है।

नागरदा जलप्रपात :

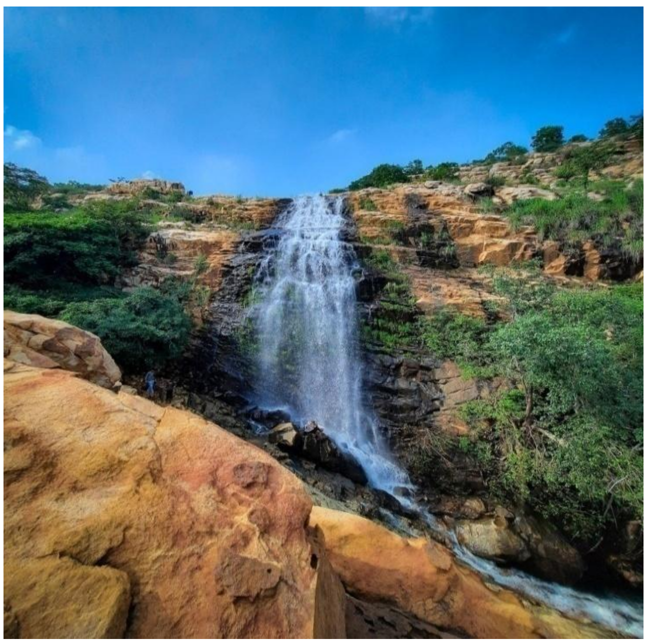

जिला मुख्यालय से करीब 16 कि.मी. दूर सकेती तहसील में नागरदा गांव के निकट नागरदा एक सुंदर जलप्रपात है। यह जांजगीर चांपा का एक दर्शनीय स्थल है। यहां जलप्रपात की दो धाराएं एक साथ देखने को मिलती हैं। थोड़ा अलग और ऊपर नीचे होने से इसे दो जलप्रपात माना जाता है। इस स्थान पर एक मंदिर भी है। पहाड़ियों का सुंदर दृश्य बहुत ही आकर्षक है। थोड़ा पहले ही खानपान की कुछ अच्छी सुविधाएं भी है। अधिकतर लोग यहां पर पिकनिक मनाने के लिए आते हैं।

दमाऊ धारा जलप्रपात :

दमाऊ धारा जांजगीर का एक प्राकृतिक पर्यटन स्थल है। ऊंची चट्टानों से जलप्रपात के गिरने से यह पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र है। इस स्थान पर एक ओर प्राकृतिक जलप्रपात हैं तो दूसरी ओर गुफाएं, राम जानकी मंदिर, राधाकृष्ण मंदिर, ऋषभ देव मंदिर इत्यादि है।

दमाऊ धारा कोलकाता-नागपुर राष्ट्रीय राजमार्ग पर शक्ति नगर से 14 कि.मी. दूर मुख्य मार्ग से कोई एक कि.मी. अंदर है। दमाऊ धारा को स्थानीय रूप से ''दमौ डहरा'' कहा जाता है जिसका अर्थ है 'दमौ का रावण' क्योंकि एक गहरा कण्ठ एक छोटी नदी गुप्त गोदावरी से झरने के रूप में निकलती है। प्रतिवर्ष जनवरी के महीने में एक बड़े 'मग्घा मेला' (माघ मेला) आयोजित किया जाता है। प्रत्येक सूर्यग्रहण पर आस पास के अनेक स्थानों से दमाऊ धारा पर साधु-संत इकट्ठा

होते हैं, ग्रहण-काल में पूजा-अर्चना की जाती है और समाप्त होने के बाद कुंड में स्नान होता है। इस कुंड में पर्यटक भी नहाने का मजा भी ले सकते हैं। पहाड़ी की चोटी पर एक छोटा सा मंदिर है जहां से आसपास के अन्य स्थानों को दूर तक देख सकते हैं। प्रशासन ने इसे एक धार्मिक स्थल और लोकप्रिय पिकनिक स्थल के रूप में विकसित किया है।

झरने के पास की दीवारों में से एक पर एक शिलालेख है जिस पर कई भाषाओं में प्राचीन लेख है। इन शिलालेखों पर अध्ययन का एक और प्रयास एलपी पांडेय ने अपनी 1966 में प्रकाशित पुस्तक महाकोसल कौमुदी में किया है। पुरातात्विक विद्वानों ने इस शिलालेख को पहली शताब्दी ईस्वी और भाषा पाली प्रमाणित किया है। अधिकतर पर्यटक जलप्रपात से गिरते पानी के नीचे नहाने का आनंद लेने के लिए ही पहुंचते हैं।

मगरमच्छ संरक्षण केंद्र :

मुख्यालय से लगभग 35 कि.मी. दूर अकलतरा तहसील में कोटमी सोनार गांव में मगरमच्छ संरक्षण केंद्र बनाया गया है। मगरमच्छ संरक्षण केंद्र जांजगीर का एक प्रमुख पर्यटन स्थल है। केन्द्र में मगरमच्छों का संरक्षण और प्रजनन करवाया जाता है। साथ ही मगरमच्छों की बहुत सी प्रजातियां देखने के लिए मिलती हैं। यहां एक एनर्जी पार्क भी बनाया गया है, जहां पर अक्षय ऊर्जा से चलने वाले स्रोतों के बारे में जानकारी दी जाती है। एक साइंस पार्क भी स्थापित किया है, जहां साइंस प्रोजेक्ट देखे जा सकते हैं। प्रोजेक्टर युक्त आडिटोरियम पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र है। यहां पर बहुत अच्छा समय बिता सकते हैं।

केंद्र में मगरमच्छों को बड़े बड़े दो तालाबों में रखा गया है। लेकिन पर्यटकों के लिए निकट आने पर मनाही है और मगरमच्छों को यहां पर बने वॉच टावर से ही देख सकते हैं। यहां पर प्रति व्यक्ति 20 रुपए और बच्चों का 10 रुपए प्रवेश शुल्क है। यहां चाय-पान, पानी या नाश्ता के लिए कैंटीन की सुविधा भी है। आप यहां पर आकर घूम सकते हैं। यह पार्क सोमवार को बंद रहता है।

दलहा पहाड़ मंदिर :

दलहा पहाड़ जांजगीर-चांपा में स्थित एक प्रमुख प्राकृतिक और धार्मिक स्थल है। यहां पहाड़ी पर शिव भगवान जी का मंदिर और एक कुंड है। मान्यता है कि नागपंचमी के दिन कुंड का पानी पीने से स्वास्थ्य ठीक रहता है। इसका पानी पीने हजारों लोग जंगल और पत्थरों से भरे रास्ते पर लगभग पांच कि.मी. पैदल चलकर पहाड़ी पर पहुंचते हैं। कठिन रास्ता होने पर भी आज तक कोई हादसा नहीं हुआ है। ऊपर कोई व्यवस्था नहीं होने के कारण यात्री अपने साथ फूल-प्रशाद, पीने का पानी और कुछ खाने का सामान लेकर आते हैं। यहां विश्वेश्वरी तथा नागेश्वरी देवी का मंदिर और चतुर्भुज मैदान एवं तालाब है। पहाड़ी के ऊपर चढ़ते हुए चारों तरफ के सुंदर दृश्य देखना बहुत अच्छा लगता है।

दलहा पहाड़ : विहंगम दृश्य

अर्धनारीश्वर धाम शिव शक्ति पीठ :

जांजगीर की अकलतरा तहसील में सोंधी गांव से लगभग दो कि.मी. की ऊंचाई पर पहाड़ पर शिव जी को समर्पित अर्धनारीश्वर धाम शिव शक्ति पीठ एक सुंदर स्थल है। एक धार्मिक स्थल होने के नाते भगवान शिव की अर्धनारीश्वर रूप में बड़ी प्रतिमा, हनुमान जी की बहुत बड़ी प्रतिमा, श्री गणेश की पंचमुखी प्रतिमा के साथ अन्य देवी देवताओं के दर्शन होते हैं।

मंदिर ट्रस्ट ने प्रशासन के सहयोग से ऊपर तक पक्की सड़क का निर्माण कराया है, जिससे सीधे ही द्वार तक आसानी से पहुंच सकते हैं। दलहा पहाड़ के पास स्थित, 22 एकड़ क्षेत्रफल में विस्तृत अर्धनारीश्वर धाम भी चारों तरफ से हरियाली से घिरा एक पहाड़ है। इसके परिसर में लगभग एक लाख से भी अधिक की संख्या में पारिजात के वृक्ष लगे हैं। हिन्दू धर्मावलम्बियों में पारिजात को बेहद ही शुभ माना जाता है। पारिजात को कल्पवृक्ष भी कहा जाता है और इसके वृक्ष तथा फूल में कई औषधीय गुण पाए जाते हैं। अर्धनारीश्वर धाम में विष्णु जी के श्रृंगार के लिए पारिजात के फूल ही उपयोग में लाए जाते हैं। प्रकृति की गोद में अनुपम एवं अद्भुत सौन्दर्य लिए अर्धनारीश्वर धाम मंदिर की खूबसूरती यहां आने वाले श्रृद्धालुओं के साथ ही देसी विदेशी पर्यटकों के आकर्षण का प्रमुख केंद्र है।

प्राकृतिक हरियाली व घने जंगलो के बीच पहाड़ पर स्थित अर्धनारीश्वर धाम शिवशक्ति पीठ मंदिर में धार्मिक आस्था के साथ ही कई असाध्य रोगों के ईलाज के लिए श्रृद्धालुओं के बीच प्रसिद्ध है, जहां शुगर, रक्तचाप (बीपी), गठिया, बवासीर सहित कई अन्य रोगों का भी लगभग निशुल्क उपचार किया जाता है।

मंदिर के स्वामी एवं पुजारी शंकर पुरी गोस्वामी कई वर्षो से अर्धनारीश्वर की पूजा करते आ रहे है। वह बताते हैं कि यह आश्चर्जनक तथ्य है कि सावन माह में और नागपंचमी के दिन पूजा करने से भक्तों की मनोकामनाएं अवश्य ही पूर्ण होती हैं। नागपंचमी के अवसर पर नाग-दर्शन हेतु तथा सावन माह में ही पूरे माह हजारों की संख्या में भक्तगण मंदिर पहुचते हैं। यह क्रम कई वर्षो से निरंतर जारी है। यहां तक गाड़ी से या कार से आ सकते हैं। यदि बरसात के समय और ठंड के समय यहां आएं तो बहुत अच्छा लगेगा।

कैसे पहुंचें :

वायु मार्ग : निकटतम हवाई अड्डा रायपुर 175 कि.मी. दूरी पर है। लेकिन पूर्व बुकिंग पर ही टैक्सियां मिल पाती है। वैसे राज्य परिवहन की बसें मिल सकती हैं।

रेल मार्ग :

जांजगीर नइला रेल्वे स्टेशन मुम्बई-हावडा मुख्य रेलमार्ग पर स्थित है।

सड़क मार्ग :

यह राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या-49 पर स्थित है। हावड़ा मुंबई रूट पर होने के कारण यहां से पूर्व से पश्चिम और मध्य भारत के मुख्य शहरों से यात्रा की जा सकती है।

कहां ठहरें :

मुख्य शहर में लगभग सभी प्रकार के आवास जैसे कि बजट होटल, गेस्ट हाउस, दो (2) सितारा होटल और रिसॉर्ट, वन विभाग के बंगले और सर्किट हाउस भी उपलब्ध हैं। सरकार की होम स्टे को बढ़ावा देने की नीति के तहत, कुछ होम स्टे भी उपलब्ध हैं।

***सम्प्रति: बाल्को से सेवानिवृत्त महाप्रबंधक।**

आस्था और विरासत की नगरी
मैहर :

–आशा बेन पटेल

पिछले वर्ष लॉकडाउन समाप्त होने पर मन में आया कि बहुत समय से कहीं जा नहीं पाए चलो कहीं घूम आते हैं। बहुत नाम सुना था मैहर का, बस क्या था, रेल का रिजर्वेशन कराया और चल पड़े मैहर (सतना) मध्य प्रदेश के लिए। देवी शारदा का यह प्रसिद्ध शक्तिपीठ स्थल देश के लाखों भक्तों के आस्था का केंद्र है माता का यह मंदिर धार्मिक तथा ऐतिहासिक है।

मां शारदा देवी मंदिर:

हम रोपवे से मंदिर में पहुंचे। नवरात्र का दिन था और मां शारदा का नवरात्र के पहले दिन विशेष श्रृंगार और आरती की जा रही थी। शासन से दिशा निर्देश मिलने के बाद इस बार मां शारदा के धाम मैहर में खास इंतजाम किए गए थे। महामारी के बाद मंदिर खुलने पर पुलिस और प्रशासन ने पहले से ही तैयारियां कर रखी थी। सभी श्रद्धालुओं को चेहरे पर मास्क लगाने और हाथ सैनिटाइज करने के निर्देश दिए जा रहे थे। साथ ही प्रसाद नहीं चढ़ाने और एक विशेष पात्र में ही रखने के लिए भी कहा जा रहा था।

हजारों भक्तों के आने से सुबह चार बजे से ही लाइन में लगे श्रद्धालुओं को एक बार में छः-छः की संख्या में मंदिर में भेजा जा रहा था लेकिन रुकने नहीं दिया जा रहा था। ऐसा प्रबंध देख कर एक बुजुर्ग ने बताया कि वह साल में दो बार हाजिरी लगाते हैं लेकिन ऐसी प्रबंध-व्यवस्था नहीं देखी, यह आगे भी जारी रहनी चाहिए। सीढ़ियों से आने वाले यात्रियों के लिए अलग व्यवस्था की गई थी। धीरे धीरे हम सभी ने आदिशक्ति मां शारदा के दर्शन किए।

मुख्य मंदिर शारदा माता का है। मंदिर के परिसर में और भी देवी देवता विराजमान हैं, जिनके आप दर्शन कर सकते हैं। मंदिर की रेलिंग्स से मैहर के चारों तरफ खूबसूरत पहाड़ों का नजारा देख मन प्रफुल्लित हो गया और मंदिर आकर बहुत अच्छा लगा।

शहर से मात्र पांच कि.मी. दूर, मैहर नगरी में नवरात्री के समय सबसे ज्यादा भक्तगण पहुंचते है। विशेष कर नवरात्रि के समय यहां पर मेला भरता है, इसलिए बहुत भीड़ रहती है। वैसे भी, मां शारदा के दर्शन के लिए हर मौसम में भक्तों की लम्बी कतारें लगी रहती है, जिससे हमेशा ही मेले जैसा ही माहौल रहता है।

कैमूर तथा विंध्य पर्वत श्रेणियों की गोद में मध्यप्रदेश के सतना जिले के मैहर में 600 फीट की उंचाई पर त्रिकूट पर्वत पर, प्रकृति की गोद में समाया है मां शारदा देवी का मंदिर। नैसर्गिक रूप से समृद्ध श्रृंखलाओं के बीच अठखेलियां करती तमसा नदी के किनारे त्रिकूट पहाड़ी पर स्थित मां शारदा का मंदिर पूरे देश में एक प्रसिद्ध धार्मिक स्थल है मंदिर तक जाने के लिए 1065

सीढ़ियां बनी हुई हैं, जो पहाड़ी के शिखर पर बने मंदिर तक जाती हैं। ज्ञात हुआ कि चढ़ाई करने में असमर्थ तीर्थयात्रियों तथा अन्य यात्रियों की सुविधा और मंदिर तक पहुंचने में आसानी के लिए सरकार ने कुछ समय पहले ही रोपवे बनवाया है। जैसे-जैसे आप ऊंचाई पर चढ़ते हैं, इसकी हरियाली छटा मंत्रमुग्ध कर देती है। मंदिर से मैहर के चारों तरफ का दृश्य बहुत अच्छा लगता है। दूर तक फैले खूबसूरत पहाड़ देखने के लिए मिलते हैं।

यहां कुल 1065 सीढियां है जो क्रमशः चार भागों में विभाजित है :-

पहला भाग : नीचे से सीढ़ियों के पहले खंड में 485 सीढियां हैं जिसे यात्री बड़े आसानी से चढ़ पाते हैं,

दूसरा भाग : इस खंड में 232 सीढियां हैं।

तीसरा भाग : इस भाग में 152 सीढियां पड़ती है।

चौथा भाग : अंतिम भाग में 196 सीढियां हैं और इस भाग को चढ़ने में थोड़ी ज्यादा थकान महसूस होती है क्योंकि अंतिम शिखर तक बिलकुल खड़ी सीढियां है। इतनी सीढियां चढ़ने के बाद भी श्रद्धालुओं को थकान नहीं होती क्योंकि वह तो देवी दर्शन के नाम और ध्यान में लीन होते है।

सरकार द्वारा यात्रियों की सुविधा के लिए सीढ़ियों के किनारे यात्रियों के लिए जगह-जगह पर बैठने और आराम करने के लिए बैंच और साथ ही कुछ दूरी पर चाय-पान की उत्तम व्यवस्था की गई है। दर्शनार्थियों को धूप और बारिश से बचाने के लिए सरकार की ओर से मैहर की सीढ़ियों के ऊपर छतें बनावाई गई हैं।

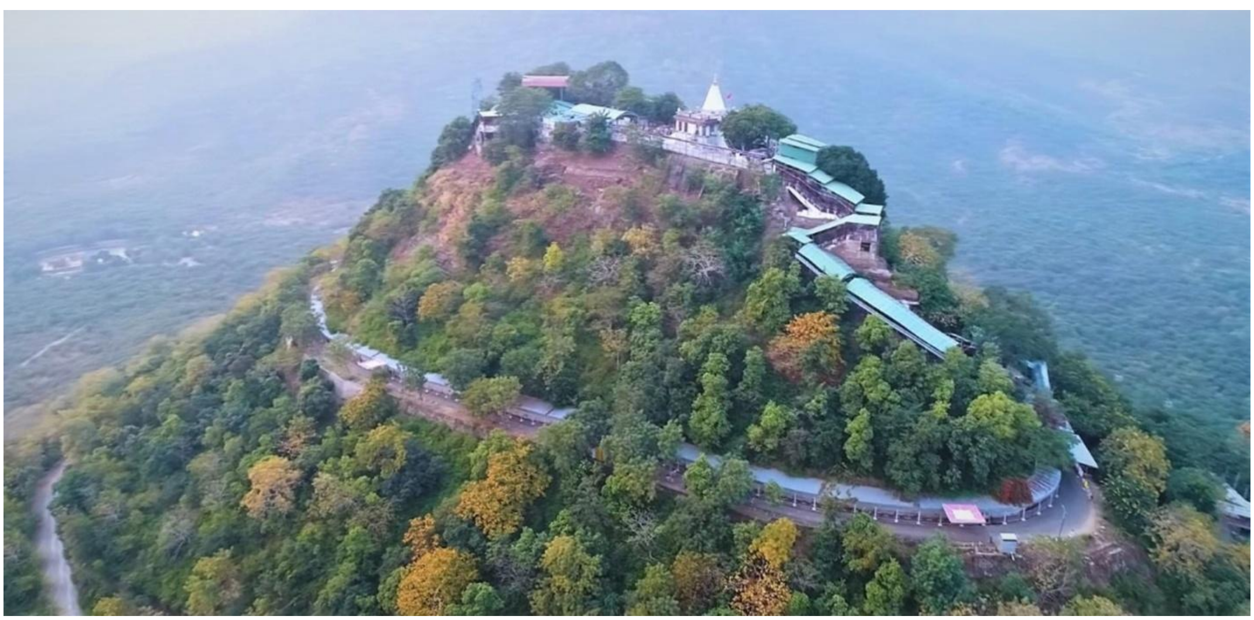

शारदा देवी मंदिर,मैहर

यह ऐतिहासिक मंदिर 108 शक्ति पीठों में से एक है। यह पीठ सतयुग के प्रमुख अवतार नृसिंह भगवान के नाम पर 'नरसिंह पीठ' के नाम से भी विख्यात है। पुरातत्वविदों के अनुसार, मां शारदा के निकट ही में प्रतिष्ठापित नरसिंहदेव जी की पाषाण मूर्ति आज से लगभग 1500 वर्ष पूर्व की है।

मां शारदा की प्रतिमा के निकट भगवान नरसिंह की एक प्रतिमा है जिसके पास में एक प्राचीन शिलालेख है, जिस पर उल्लेख है 'नपुला देव द्वारा शक 424 चैत्र कृष्ण पक्ष पर 14 मंगलवार, विक्रम संवत् 559 अर्थात 502 ई. को स्थापित'।

मैहर के बारे में ....

मैहर मंदिर : हिन्दू पौराणिक तथ्यों के अनुसार भगवान शिव के तांडव करते समय माता सती के शव के अंग और आभूषण जिस-जिस स्थान में गिरे थे, वह सभी शक्ति पीठ कहलाए। मैहर के विषय में ग्रंथों में उल्लेख मिलता है और यह किंवदंती भी है कि भगवान शिव ने मृत देवी सती के शरीर को ले जाते समय मां सती ने अपने गले का 'हार' यहां गिरा दिया था, जिससे इस स्थान का नाम 'माई का हार' पड़ा जो कालांतर में बदलते हुए 'मैहर' हो गया। आस्था की दृष्टि भक्तगण इस शक्ति पीठ को मैहर धाम कहते हैं। कहा जाता है कि प्राचीन काल में मैहर मंदिर की खोज आल्हा और ऊदल नाम के दो योद्धाओं ने की थी।

मंदिर खुलने से पहले हो जाता है माँ शारदा का श्रृंगार :

मैहर धाम में अक्सर अदृश्य घटनाएं हो चुकी है जो बिलकुल अद्भुत रही है, संध्या आरती के बाद दरबार बंद होने के बाद भी जब पुजारी ने सुबह द्वार खोला तो उसे मैहर देवी शारदा माता का श्रृंगार और साथ में अर्पण किये हुए पुष्प मिले हैं।

कहते है की हर सुबह मंदिर खुलने के पहले ही मां शारदा के श्रृंगार अपने आप ही हो जाते हैं। यह मैहर मंदिर का चमत्कार बिलकुल सत्य है। लोगों का विश्वास है कि अमरत्व का वरदान प्राप्त कर चुके आल्हा अदृश्य रूप में देवी की पूजा अर्चना के लिए शारदा माई के दरबार (मंदिर) में आते हैं। आज भी कई बार अर्धरात्रि के बाद, जब मंदिर के कपाट बंद रहते है, अगले दिन माता की मूर्ति का श्रृंगार और उस पर अर्पित पुष्प पाए गए हैं।

स्थानीय किवदंतियों में कहा जाता है कि दो योद्धा आल्हा और ऊदल इस जगह के साथ जुड़े रहे हैं। दोनों सगे भाई मां शारदे के परम भक्त थे। किवदंती है कि आल्हा ने जंगलों के बीच खोज करने के बाद 12 वर्ष तक कठोर तपस्या की और तब देवी ने प्रसन्न होकर अपने दैवीय रूप में दर्शन देकर उन्हें अमरत्वका वरदान दिया था। तब से ऐसी मान्यता है कि आल्हा और उदल अमर हैं। कहा जाता है कि आल्हा और ऊदल ने ही दूरदराज के जंगल में पर्वत पर यात्रा और सबसे पहले देवी की आराधना की। वे देवी माँ को 'शारदा माई' कहते थे और यह स्थान

'शारदा माई' लोकप्रिय हो गया। लोगों का विश्वास है कि अमरत्व का वरदान पा चुके आल्हा ही अदृश्य रूप में, आज भी अर्धरात्रि के बाद, जब मंदिर के कपाट बंद रहते है, देवी की पूजा अर्चना के लिए शारदा माई के दरबार (मंदिर) में आते हैं। कुछ खोजी पत्रकारों और चैनलों ने इसे सत्यापित किया है, जबकि वहां रात्रि में उन्होंने पहरे लगा रखे थे।

मैहर रोपवे :

चूंकि मंदिर एक पहाड़ी की चोटी पर 367 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है और वहां तक जाने के लिए 1065 सीढ़ियां हैं। आज भी बहुत से यात्री और पर्यटक इन्हीं सीढ़ियों से जाते हैं। लेकिन कुछ भक्तों (विशेषकर बुजुर्गों) को चढ़ाई करने और गंतव्य तक पहुंचने में बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ता था। इसलिए तीर्थयात्रियों की सुविधा के लिए रोपवे शुरू किया गया था। आज रोपवे को ही सबसे आदर्श माध्यम माना जाता है। एक सिंगल केबल कार में एक बार में छः लोग बैठ सकते हैं। रोपवे का दोनों ओर का टिकट 110 रुपए था। किफायती और सुविधाजनक होने के अलावा, रोपवे एक रोमांचकारी अनुभव भी है, जो नीचे शहर के शानदार दृश्य प्रस्तुत करता है।

चूंकि रोपवे को भक्तों की मंदिर तक पहुंचने की सुविधा के लिए बनवाया गया है, इसलिए मंदिर में आरती और पूजा के समय के आधार पर इसमें परिवर्तन किया जाता है। आमतौर पर यह सुबह, आरती के समय (गर्मियों में लगभग 5:00 बजे और सर्दियों में 6:30 बजे) आरम्भ होता है और शाम को करीब 7:15 बजे, संध्या आरती के बाद बंद होता है। यात्रियों के लिए

रोपवे सुविधा दिन भर लगातार चालू रहती है। त्यौहारों, विशेष अवसरों और विशेष दिनों के दौरान समय में बदलाव हो सकता है।

मैहर जाने का सबसे अच्छा समय:
मैहर धाम हिन्दू धर्मावलम्बियों के लिए पवित्र नगरी है जहां पूरे भारत से लाखों श्रृद्धालु प्रतिदिन मां शारदे के दर्शन और मनोकामना पूर्ति का आशीर्वाद प्राप्त करने आते है। एक धार्मिक स्थान होने के अलावा भी, संगीत की विरासत और प्राकृतिक नजारों के लिए किसी भी मौसम में मैहर आया जा सकता है। लेकिन यहां पर सबसे ज्यादा लोग अप्रैल और अक्तूबर में नवरात्री के समय देवी-दर्शन हेतु आते है। इसीलिए यह समय मैहर जाने का सबसे उपयुक्त माना जा सकता है। भगवान शिव को समर्पित गोला मठ मंदिर, बडीमाई मंदिर, ऑयला मंदिर, पन्निखोह जलप्रपात; पूर्वा जलप्रपात आदि के अलावा मैहर बाबा का घर भी मैहर के कुछ अन्य आकर्षण हैं।

आल्हा ऊदल का मंदिर, अखाड़ा और तालाब:
आल्हा ऊदल का मंदिर मैहर में स्थित एक प्रसिद्ध जगह है। यह जगह जंगल के बीच में स्थित है। यहां पर हमें एक सरोवर भी देखने को मिला, जिसमें कमल के खूबसूरत फूल लगे रहते हैं। **आम तौर जिज्ञासा होती है कि आल्हा ऊदल कौन थे?** बनाफल बंश के चंद्रवंशी क्षत्रीय समुदाय में जन्मे आल्हा और ऊदल 12वीं इस्वी में वीर योद्धा थे। इनकी वीरता की गाथा पूरे मध्य भारत में विख्यात है कि इन्होने अपने पिता के साथ हुए अन्याय और उनकी मृत्यु का बदला लेने हेतु 52 युद्धों में विजय प्राप्त की थी।

आल्हा के नाम पर एक मंदिर और 'आल्हा तालाब' है। पर्यटक तालाब के पीछे पहाड़ी देख सकते हैं। हाल ही में, तीर्थयात्रियों की सुविधा के लिए इस तालाब और आसपास के क्षेत्र का पुनर्निमाण करा कर साफ-सुथरा किया गया है। यहां से लगभग एक कि.मी. की दूरी पर आल्हा - उदल का अखाड़ा अवस्थित है, जहां वह कुश्ती का अभ्यास करते थे। मंदिर से आल्हा - उदल का तालाब देखा जा सकता है जो नीचे के परिवेश का विहंगम दृश्य भी देता है। पहाड़ियों और हरी-भरी वनस्पतियों के बीच कुछ शांतिपूर्ण समय बिताने के लिए आल्हा तालाब भी जाया जा सकता है। यहां आने पर हम लोगों को बहुत अच्छा लगा।

वेंकटेश मंदिर :

मुख्तारगंज के पास स्थित, वेंकटेश मंदिर का निर्माण 1876 में किया गया था। दक्षिण भारतीय शैली के आधार पर बनाए गए मंदिर के बारे में उल्लेख है कि इसके निर्माण में लगभग 49 वर्ष लगे और दक्षिण भारत से शिल्पकार और कारीगर बुलाए गए थे। यह लाल पत्थर से बना है और तालाब के पानी पर उठती लहरें मनमोहक है। शासन की ओर से मंदिर के साथ चार दिवारी करके एक पार्क विकसित किया गया है। यहां आकर पर्यटक गहन शांति का अनुभव करता है। यहां होने वाले धार्मिक आयोजनों में गुरु पूर्णिमा, झूलन महोत्सव, नरसिंह चतुर्दशी, जन्माष्टमी, रामनवमी, शरद पूर्णिमा और बहुत कुछ शामिल हैं। राजा रणदमन सिंह द्वारा स्थापित यह मंदिर विंध्य क्षेत्र के सबसे पुराने मंदिरों में से एक है।

जगतदेव तालाब, सतना

जगतदेव तालाब या जगत देव झील सतना में मानव निर्मित जलाशय है। प्रसिद्ध शिव मंदिर झील के किनारे स्थित है। सतना तथा मैहर आने वाले पर्यटक इसे भी देखने आते हैं। यहां 450 साल पुराने सत्यनारायण मंदिर के अलावा, पशुपति नाथ मंदिर, श्री रघुवीर मंदिर, डाली बाबा, राम जानकी मंदिर, बम्होरी में जैतवार के पास हनुमान जी का मंदिर, धवारी का साईं बाबा मंदिर आदि कुछ अन्य पूजा स्थल हैं।

रामवन:

रींवा रोड पर स्थित रामवन मंदिरों के प्राचीन अवशेषों का वास है। मुख्य मंदिरों में से एक हनुमान मंदिर है। आध्यात्मिक शांत वातावरण और सुव्यवस्थित उद्यान परिसर, सतना के सबसे अधिक देखे जाने वाले स्थलों में से है। रामवन तुलसी संग्रहालय में प्राचीन मंदिरों की

मूर्तियां संरक्षित हैं, जो पिछली पीढ़ियों की कलात्मकता और भक्ति को एक नया आयाम देते हैं। हरी-भरी हरियाली बच्चों को ही नहीं बड़ों को भी आकर्षित करती है।

रामवन तुलसी संग्रहालय

माधवगढ़ किला :

सतना में विभिन्न धार्मिक स्थलों के अलावा माधवगढ़ किला लगभग 400 साल पहले बनी एक ऐतिहासिक संरचना है। राजा माधो सिंह जी ने किले का निर्माण करवाया था। किले को 1787 में मराठों की लड़ाई के लिए याद किया जाता है। यह तुंगा युद्ध के मैदान के साथ-साथ एक राजस्थानी गांव के ऊपर स्थित है। इस विशेष गांव में कई स्थानीय हस्तशिल्पकारों और दस्तकारों को आवास और बाजार उपलब्ध कराए गए हैं। यह किला कभी रीवा राज्य का केंद्र हुआ करता था। किले के आकार के साथ-साथ गुंबदों और अंदरूनी हिस्सों पर सुंदर नककाशी-कला इसे ऐतिहासिक और स्थापत्य की दृष्टि से उत्तम बनाती हैं। ठाकुर भवानी सिंह जी ने इसे वर्ष 2000 में हेरिटेज होटल में बदल दिया है। किले के भीतर जिस कमरे में महाराजा प्रताप सिंह रहते थे उसे प्रताप महल सुइट नाम दिया गया है, साथ ही देवधी फूल महल भी है।

नीलकंठ मंदिर आश्रम :

नीलकंठ मंदिर और आश्रम मैहर में स्थित एक प्रमुख स्थल है। यह मैहर से करीब 15 कि.मी. दूर है। नीलकंड आश्रम में नीलकंठ महाराज ने तपस्या की थी। इसलिए आश्रम को नीलकंठ मंदिर आश्रम के नाम से जाना जाता है। पुस्तकालय में उनके बारे में जानकारी भी ले सकते हैं। साथ ही श्री राधे कृष्ण जी का एक सुन्दर मंदिर है। यहां बरसात के समय एक बहुत खूबसूरत झरना भी देखने के लिए मिलता है। आप यहां पर घूमने के लिए जा सकते हैं।

भरहुत स्तूप:

सतना जिले के भरहुत गांव में स्थित प्रसिद्ध भरहुत स्तूप एक ऐतिहासिक बौद्ध अवशेष स्थल है। यहां प्राचीन बौद्ध स्तूप के अलावा सम्राट अशोक का एक शिलालेख भी है। बौद्धों के लिए सम्माननीय भरहुत स्तूप का निर्माण अशोक महान द्वारा कराया गया था।

यह स्तूप बौद्ध इतिहास और मान्यताओं की कुछ शुरुआती कलाओं और मूर्तियों का प्रतिनिधित्व करता है। बुद्ध को सामान्य प्रतीकों जैसे बोधिवृक्ष, पैरों के निशान, खाली आसन, धर्म चक्र आदि के माध्यम से दर्शाया गया है। यहां बताया गया है कि यद्यपि अशोक ने स्तूप का निर्माण कराया, शुंग राजवंश द्वारा प्रवेश द्वार और रेलिंग जैसे कई कार्यों को जोड़ा गया था। यह स्थान भी एक सुंदर पहाड़ी पर स्थित है। यहां पर पत्थरों पर खूबसूरत नक्काशी देखने के लिए मिलती है।

भरहुत स्तूप सतना शहर से करीब 23 कि.मी. दूर है। यहां आने के लिए सरकारी बसों के अलावा टैक्सी और ऑटो रिक्शा मिल जाते हैं।

भगवान परशुराम सरोवर :

सतना में सिमरिया रोड पर स्थित भगवान परशुराम सरोवर घूमने के लिए एक अच्छी जगह है। यहां पर आप भगवान परशुराम की 15 फीट ऊंची एक बड़ी प्रतिमा देख सकते हैं और यहां पर एक सरोवर भी बना हुआ है। भगवान परशुराम जी की मूर्ति की स्थापना वर्ष 2017 में विप्र

सेना नामक संगठन द्वारा कराई गई थी। यह जगह रेलवे स्टेशन से 7-8 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। आप यहां पर आसानी से पहुंच सकते हैं।

पन्नीखोह जलप्रपात, मैहर :

आल्हा ऊदल के अखाड़े से लगभग चार कि.मी. दूर जंगल में एक ऐसा झरना है जहां आसपास के लोग इस प्राकृतिक छटा को देखने आते हैं यहां पहाड़ी से आया पानी लगभग 600 फीट की ऊंचाई से झरना बनकर गिरता है जिसे लोग पन्नी खोह के नाम से जानते हैं। पन्नी जलप्रपात मैहर में एक अच्छी जगह है। यह जलप्रपात जंगल में स्थित है और यहां पर आप घूमने के लिए बरसात के समय जा सकते हैं। इस जलप्रपात तक जाने के लिए हमें काफी पैदल जाना पड़ा क्योंकि यहां पर जाने के लिए सड़क नहीं है। फिर भी यहां पर आकर बहुत अच्छा लगा। विंध्य क्षेत्र में फैले प्राकृतिक सौंदर्य को देखने के लिए अभी भी देश के पर्यटक आते हैं।

अक्सर स्थानीय लोग पिकनिक मनाने के लिए भी आते हैं। यहां पर आने के लिए दो नदियों को पार करना पड़ता है और इस रास्ते के दोनों ओर जंगल है, रास्ता कच्चा और पथरीला है जिस पर पानी बहता है। इससे यह रास्ता कठिन हो जाता है। यहां पर लोग सिर्फ पैदल या मोटर साइकिल से ही आते हैं।

(अगर पन्नी खोह झरने तक जाने के लिए पक्का रास्ता बना दिया जाए एवं कुछ अन्य सुविधाएं उपलब्ध करा दी जाएं तो यह एक आदर्श पर्यटन स्थल बन सकता है। मैहर में जो लोग मां शारदा देवी के दर्शन करने आते हैं वह लोग भी इस पर्यटक स्थल को देखने अवश्य जाएंगे जिससे मैहर के राजस्व में बढ़ोतरी होगी ही मैहर का विकास भी होगा।)

कैसे पहुंचे ?

हवाई मार्ग :यहां आने के लिए निकटतम हवाई अड्डा खजुराहो में है जो यहां से 106 कि.मी. दूर है। दूसरा जबलपुर हवाई अड्डा, यहां से 145 कि.मी.दूर है।

रेल मार्ग : मैहर रेलवे स्टेशन, मुंबई प्रयागराज रेलवे लाइन पर भारत के लगभग सभी बड़े शहरों से जुड़ा हुआ है। रेलवे स्टेशन से मंदिर की दूरी पांच कि.मी. है।

सड़क मार्ग: मैहर नेशनल हाइवे-7 पर पड़ता है। यह अच्छी सुविधाओं और बेहतर कनेक्टिविटी से जुड़ा हुआ है ।

गोल मठ मंदिर :

मैहर में गोल मठ मंदिर स्थित शिव भगवान जी को समर्पित एक ऐसा प्राचीन मंदिर है और यह पूरा मंदिर पत्थर से बना हुआ है। इस मंदिर के गर्भ गृह में शिवलिंग और मंदिर के बाहर नंदी भगवान की पत्थर की प्रतिमा विराजमान है। इस मंदिर की दीवारों में पत्थर पर उकेरी गई

नक्काशी देखने के लिए मिलती है। इस प्राचीन मंदिर के बारे में यहां के लोगों का यह विश्वास है कि यह मंदिर एक ही रात में तैयार किया गया था। आप यहां पर जाकर इस मंदिर की सुंदरता को देख सकते हैं। यहां पर आकर शांति मिलती है।

गोला मठ के बारे में .....

शिव को समर्पित गोला मठ मंदिर नागर शैली में निर्मित पूर्वाभिमुखी, पंचरथी मंदिर की लंबवत योजना में शिखर, अधिष्ठान जंघा, तल में गर्भगृह, अंतराल एवं स्तंभों पर आधारित मुख्य मंडप प्रमुख अंग है। मंडप की छत शतदल कमल अलंकरण युक्त है। इसके स्तंभों का निचला भाग अष्टकोण एवं उपरी भाग षोडशकोणीय है।

स्तंभ शीर्ष गोलाकार है, जिनके ऊपर भार वाहक कीचक है। गर्भगृह का द्वार सघन रूप से अलंकृत है। द्वार के निचले भाग में गंगा, यमुना नदी देवियां अंकित हैं। रूप स्तंभ में मिथुन युगल तथा शीर्षदल पर ललाट बिंब में शिव उत्कीर्ण है। मंदिर का बाहरी भाग प्रतिमाओं से सुसज्जित है। यह मंदिर कलचुरी कालीन है।

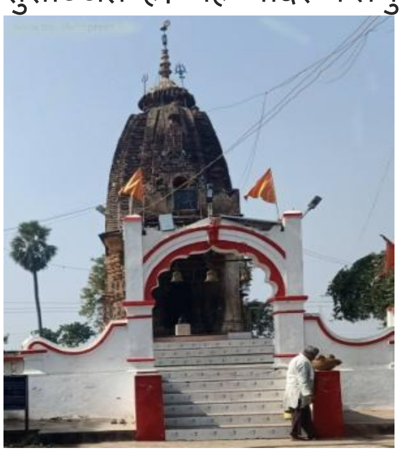

गोलामठ मंदिर मैहर मंदिर से करीब तीन कि.मी. दूर, शारदा मंदिर जाने वाली सड़क पर है। यहां अच्छी सड़क होने से पहुंचने में आसानी होती है। हम लोग जब इस मंदिर में पहुंचे, तब यह मंदिर खुला हुआ था। हमने शंकर जी के दर्शन किए, नंदी भगवान के दर्शन किए। उसके बाद मंदिर की परिक्रमा की। गोला मठ मंदिर का परिसर बहुत बड़ा है। यहां श्री राम जी और माता काली को समर्पित एक और मंदिर भी है। परिसर में हमें कुछ मूर्तियां भी देखने के लिए मिली थी।

इस मंदिर की दीवारों पर हमने नक्काशी देखी, यह नक्काशी आपको खुजराहो के मंदिरों की नक्काशी से मिलती-जुलती लगती है। फिर भी यह बहुत खूबसूरत मंदिर है।

बड़ा अखाड़ा मंदिर :

मैहर के प्रमुख दर्शनीय स्थलों में बड़ा अखाड़ा मंदिर भी एक अलग ही जगह है। यहां आपको मंदिर की छत पर बना हुआ एक बहुत बड़ा शिवलिंग देखने को मिलता है। मंदिर के अंदर 108 शिवलिंग विराजमान है। यहां पर मंदिर के गर्भ गृह में मुख्य शिवलिंग भी देखा जा सकता है। इसके अलावा मंदिर में एक आश्रम भी है, जहां पर संस्कृत में शिक्षा दी जाती है। यहां पर भी आप घूम सकते हैं और यहां पर भी बहुत अच्छा लगता है।

बड़ी खेरामाई मंदिर मैहर :

बड़ी खेरामाई के बारे में कहा जाता है, कि यह शारदा माता की बड़ी बहन है और मैहर आने वाले भक्तों को शारदा माता के दर्शन करने के बाद इनके दर्शन जरूर करने होते हैं। यहां पर ढेर सारे मंदिरों के साथ ही एक प्राचीन बाबड़ी भी देखी जो वास्तव में ही बहुत पुरानी लगती है। आजकल इस बावड़ी को ऊपर से कवर कर दिया गया है, ताकि कोई व्यक्ति इस बावड़ी में गिर ना जाए। इस बावड़ी में नीचे जाने के लिए सीढ़ियां बनी हुई है।

मंदिर में प्रवेश करते ही मुख्य मंदिर बड़ी खेरमाई मंदिर का है। इसके अलावा मंदिर परिसर में राम जी का मंदिर है साथ ही शंकर जी का शिवलिंग भी एक छोटे से मंदिर में विराजमान है। मंदिर में एक मंच पर बनाया गया है, जिसमें शायद नवरात्रि के समय दुर्गा जी की स्थापना की जाती है। आसपास की फूलों की हरियाली देख कर मन खुश हो जाता है। यहां पर आकर घूम सकते हैं।

ओयला मंदिर मैहर:

ओयला मंदिर, मुख्य रूप से दुर्गा जी को समर्पित एक प्रसिद्ध प्राचीन मंदिर है। यहां पर दुर्गा माता की बहुत ही भव्य प्रतिमा देखने को मिली। परिसर में बने अन्य मंदिरों में गणेश जी और यहां पर शिवलिंग भी विराजमान है। उनके दर्शन के साथ ही मंदिर में घूमने भी आ सकते हैं। मैहर में यह भी एक प्रसिद्ध मंदिर है और जो भी मैहर की यात्रा करता है। वह इस मंदिर में भी जरूर आता है। मंदिर के प्रवेश द्वार के ऊपर दुर्गा जी की आकर्षक प्रतिमा बनी हुई है और एक ओर गणेश जी और दूसरी ओर शंकर जी की प्रतिमाएं है।

मंदिर में आप अंदर प्रवेश करने पर धातु की बनी हुई दुर्गा जी बहुत ही आकर्षक मूर्ति देखने को मिलती है। यहां पर गणेश जी की धातु की प्रतिमा भी है। यहां पर ऐसे शिवलिंग के दर्शन होते हैं जिसमें चेहरे का आकार दिया गया है। अंदर एक कुआं भी है जिसे अब कवर कर दिया गया है। यह मंदिर बहुत ही खूबसूरत है और यहां पर आकर आपको शांति मिलती है। ओयला मंदिर बड़ी खेरमाई मंदिर के आगे मैहर - सतना रोड पर स्थित है। इस मंदिर तक जाने के लिए ऑटो मिल जाते हैं।

इच्छापूर्ति मंदिर या केजीएस मंदिर- मैहर :

मां दुर्गा को समर्पित इच्छापूर्ति मंदिर मैहर में घूमने का एक मुख्य स्थान है। यह मंदिर बहुत ही खूबसूरती से बनाया गया है। लगभग 12 हजार वर्गफुट जगह में अक्षरधाम शैली पर बनाया गया यह दिव्य मंदिर मैहर आने वाले पर्यटकों के लिए एक बड़ा उपहार है। राजनगर (मैहर) स्थित केजेएस सीमेंट फैक्ट्री के बाहरी परिसर में स्थित है। हमें बताया गया कि यह मंदिर सात साल में बनकर तैयार हुआ था। वाराणसी के 21 विद्वान पंडितों के निर्देशन में प्रतिमाओं की प्राण प्रतिष्ठा की गई थी।

इस मंदिर में लगा हल्का गुलाबी पत्थर राजस्थान के बंशीपहाड़पुर से लाया गया था। जयपुर से लाए गए, विशेष अनुभवी शिल्पकारों/ कारीगरों ने मैहर में ही खूबसूरत नक्काशी करके खूबसूरत चित्र उकेरे और इस सपने को साकार किया। पत्थर की बड़ी शिलाओं को मैहर तक लाना और फिर उन पत्थरों में बेल-बूटों की कलात्मक बारीक नक्काशी करना बेमिसाल है।

आज मैहर में विंध्य क्षेत्र का अपनी शैली का विशिष्ट पूजा-स्थल बन गया है। इस मंदिर के बाहर और भीतर में आपको अद्‌भुत नक्काशी देखने के लिए मिलती है।

शाम के समय खूबसूरत लाइटों से जगमगाता - इच्छापूर्ति मंदिर

जमीन से 62 फुट ऊंचा यह मंदिर सुन्दर बगीचों से घिरा हुआ है और इसके सामने एक रंगीन फव्वारा इसकी शोभा में चार चांद लगाता है।
मंदिर के मुख्य गर्भगृह में मां दुर्गा विराजमान हैं जबकि उनके एक ओर शंकर जी और दूसरी ओर हनुमान जी विराजित हैं। मुख्य गर्भगृह के बाहर मंदिर के मध्यस्थल में एक ओर भगवान श्रीराम का दरबार लगा है तो दूसरी ओर श्री लक्ष्मी-नारायण की प्रतिमा स्थापित है। स्फटिक शिवलिंग और काले पत्थर के नंदी सहित हनुमान जी की प्रतिमा भी अलग-अलग मंडपों में स्थापित की गई हैं।

गर्भगृह में लगाए प्रकाश झूमर का मोबाइल-चित्र।

मंदिर के बाहर हरे-भरे उद्यान इस स्थान को और अधिक सुंदर बना देते हैं। मंदिर के बाहर खूबसूरत फव्वारे देखने को मिलते हैं। रात के समय में मंदिर खूबसूरत लाइटों से जगमगाता रहता है। अधिकतर पर्यटक यहां शाम छः बजे के बाद ही आते हैं, जो दर्शन-आरती के बाद यहां के सुंदर दृश्यों का आनंद लेते हैं।

भारतीय संगीत की विरासत यानी मैहर बाबा का घर :

अभी तक हमनें मैहर नगरी में आध्यात्मिकता के दर्शन किए थे। लेकिन मैहर में एक और धाम है, जहां के दर्शन किए बिना यह यात्रा अधूरी ही रह जाती। जी, हां वह है भारतीय शास्त्रीय संगीत का धाम अर्थात अलाउद्दीन खान साहिब का घर। एक छोटा सा शहर मैहर, त्रिकुट पर्वत पर शारदा माई के मंदिर के कारण जहां एक ओर 52 शक्ति पीठों में से एक है, वहीं यह भारतीय शस्त्रीय संगीत के एक प्रसिद्ध मैहर घराने की पीठ (यानि विद्यापीठ) भी माना जाता है। जब मंदिर में भीड़ होती है, तो यहां भी पर्यटकों और भक्तजनों की कतार देखने को मिलती है।

एक खास बात जो हमें बताई गई वह यह कि बाबा प्रति सप्ताह शारदा माई के दर्शन करने जाते थे। उनके समय तक सीढियां भी पक्की नहीं थीं। ऊपर मंदिर तक पैदल ही जाना होता था। आवागमन के साधन सीमित थे। लेकिन बाबा घर से शिखर तक पैदल ही जाते और दर्शन करने के बाद पैदल ही वापस आते थे। शायद इसीलिए लोग उन्हें मैहर बाबा कहने लगे थे।

मैहर घराना हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की एक विशेष शैली के लिए जाना जाता है, जिसमें केवल 'तार' (जैस सितार और सरोद) एवं 'ताल' (तबला, मृदंग आदि) वाद्यों की ही शिक्षा दी जाती है।

अलाउद्दीन खां साहिब ने अपने बेटे अली अकबर खां, बेटी स्व. अन्नपूर्णा देवी (रविशंकर की पहली पत्नी), रविशंकर और निखिल बैनर्जी को लेकर इस घराने की स्थापना की थी। अली अकबर खां (सरोद वादन) के अलावा दोनों ने सितारवादन के क्षेत्र में नाम कमाया था। खां साहब रजा हुसैन खां (वायलिन वादक) के चाचा थे। इतना ही नहीं मैहर बाबा के शिष्यों में पंडित रवि शंकर, निखिल बनर्जी, पन्नालाल घोष, वसंत राय, बहादुर राय आदि ने विश्व में भारतीय शास्त्रीय संगीत को एक पहचान दी और विशेषकर पश्चिमी दुनिया में लोकप्रिय बनाया है।

उस्ताद अलाउद्दीन खाँ (1862- 6 सितम्बर 1972) एक प्रसिद्ध सरोद वादक थे, लेकिन साथ ही अन्य वाद्य यंत्रों को बजाने में भी पारंगत थे। बीसवीं सदी के सबसे महान और अतुलनीय संगीत शिक्षकों में उनका नाम आदर से लिया जाता है। उन्होंने स्वयं गोपाल चंद्र बनर्जी जैसे संगीत महारथी से संगीत की दीक्षा ली थी। उन्होंने कड़ी मेहनत से रामपुर के मशहूर वीणावादक वज़ीर खां साहब से भी संगीत के गुर सीखे थे।
अलाउद्दीन खां मैहर के महाराजा बृजनाथ सिंह के राज दरबार में दरबारी संगीतकार थे। कहा जाता है कि राजा साहब उन्हें आदर से 'बाबा' कहते थे। समय के साथ-साथ, सभी उन्हें बाबा कहने लगे और अलाउद्दीन खान उस्ताद के बजाय मैहर बाबा के नाम से प्रसिद्ध हो गए। संगीत सम्मेलनों/ गोष्ठियों में उन्हें आदर से 'मैहर बाबा' के नाम से ही सम्बोधित किया जाता था। अपने जीवन काल में उन्होंने कई रागों तथा रागनियों की रचना की और संगीत जगत में विख्यात मैहर घराने की नींव रखी थी।

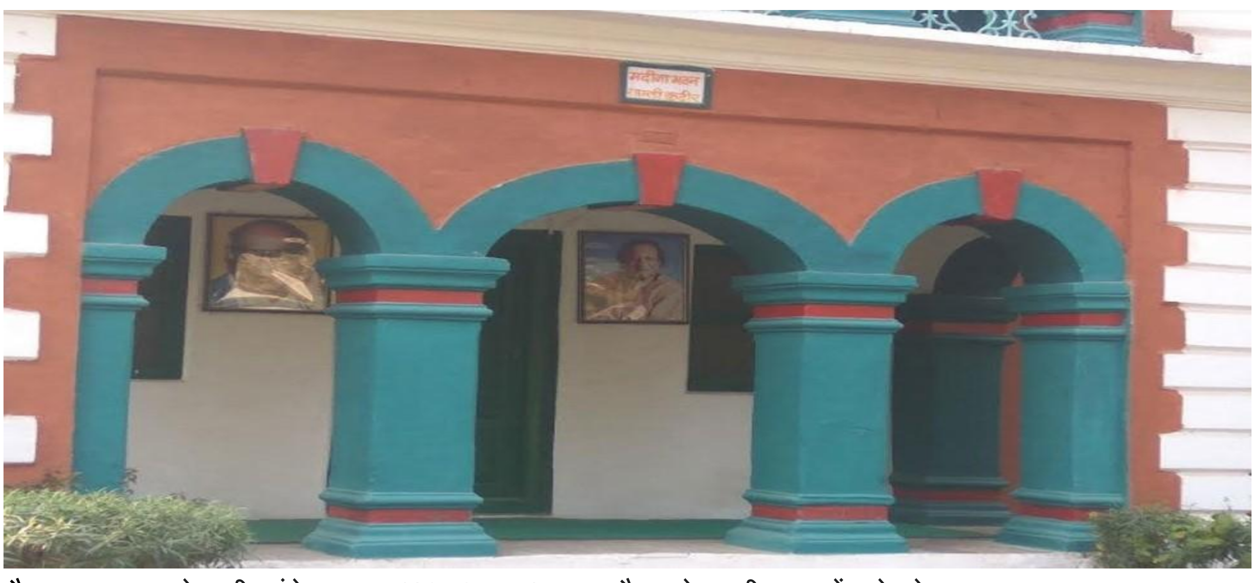

मैहर बाबा सबसे बड़ी लंबे समय (1972 तक) तक मैहर के इसी घर में रहे थे।
मैहरबाबा जिस घर में रहते थे, वह एक शांत चौड़ी सड़क पर है, जिसमें एक गेट है जिसे कोई भी आ सकता है। यह एक सार्वजनिक स्थान है। संयोग से उस समय कोई आगंतुक नहीं था।

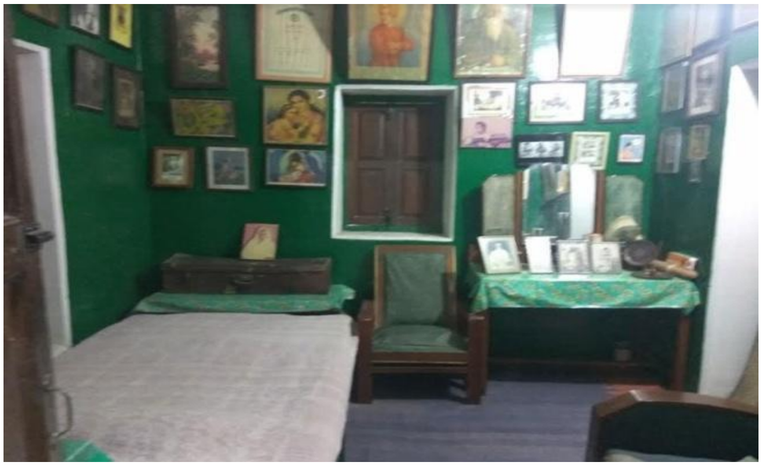

मैहर बाबा का कमरा

मैहर घराना के प्रमुख शिष्यों का जिक्र:

हिंदुस्तानी संगीत के मैहर घराने (शैली) के जन्मस्थान के रूप में मैहर का में एक प्रमुख स्थान है। उनके प्रथम शिष्यों में उनकी बेटी श्रीमती अन्नपूर्णा देवी (सितार), पंडित रवि शंकर (सितार), सरोद वादक उस्ताद अली अकबर खान (अलाउद्दीन खान के पुत्र), तिमिर बरन भट्टाचार्य के नाम उल्लेखनीय हैं। पं. राम नारायण (सारंगी), पं. शांता प्रसाद (तबला वादन), निखिल बनर्जी (सितार), पं.वीजी जोग(वायलिन), शरण रानी बाकलीवाल (सरोद), पं.हरिप्रसाद चौरसिया (बांसुरी), अमित भट्टाचार्य, प्रदीप बरोत, सरस्वती शाह (सितार) आदि उनके प्रमुख शिष्यों में हैं। उनके अपने परिवार के अधिकतर सदस्य उस्ताद आशीष खान (मैहरबाबा के पोते), उस्ताद ध्यानेश खान (दूसरे पोते), उस्ताद प्रणेश खान (तीसरे पोते), उस्ताद बहादुर खान (भतीजे) सरोद वादन के क्षेत्र में सक्रिय रहे हैं। बाबा के छात्रों में तिमिर बरन के पुत्र पं. इंद्रानिल भट्टाचार्य (सितार) पं.पन्नालाल घोष (बांसुरी), पं.निखिल बनर्जी (सितार), पं.वसंत राय के नाम शामिल हैं। बाबा ने पहले मैहर बैंड की स्थापना की थी जिसमें उपरोक्त लगभग सभी कलाकार वाद्य-वृंद प्रस्तुति देते थे।

वह काफी लंबे समय तक उत्तराखंड के अल्मोड़ा में स्थित 'उदय शंकर इण्डिया कल्चर सेंटर' के संरक्षक के रूप में भी जुड़े रहे। उस्ताद अलाउद्दीन खान को कला के क्षेत्र में सन 1958 में पद्म भूषण से सम्मानित किया गया था। इससे पहले उन्हें साल 1954 में संगीत नाट्य अकादमी ने अपने सबसे बड़े सम्मान 'संगीत नाट्य अकादमी फैलोशिप' से सम्मानित किया था।

मैहर में यह हमारा अंतिम दर्शनीय स्थल था। अगले दिन हम अपने शहर के लिए रेलगाड़ी पर सवार हो गए।

----

*सम्प्रति: शिक्षिका, अहमदाबाद। पत्र-पत्रिकाओं में लेखन : अतुल्य भारत में प्राय: योगदान।

यात्रा संस्मरण

सूकूं की नगरी - धर्मशाला

– **डॉ. कविता विकास**

जीवन की गुणवत्ता तलाश से जुड़ी है और जीवन को बेहतर बनाने की इच्छा ही जिजीविषा है। यात्रा का आयाम सांस्कृतिक परिवेश से जुड़ा है जिसमे स्वतंत्रता, अनुशासन और आनंद तीनों शामिल हैं। यात्रा का आनंद ही मन और जीवन की दशा तय करता है। इसलिए, मुझे लगता है, यात्रा की प्रेरणा भी उन्हीं को मिलती है जिनमे परिश्रम और संघर्ष करने के साथ - साथ सृजनात्मकता का बोध होता है। यायावर मन क्षण भर भी ठाँव रखता है तो यह कवि मन अंतस की उस गहराई तक चला जाता है जहां दिव्य रोशनी का दर्शन होता है। सचेतन अवस्था में यही मन प्रकृति की सुरम्य जटिलताओं के बीच उस उच्चतम सत्ता का बोध करता है। गज़ब की कशिश है पहाड़ों की नैसर्गिक सुंदरता में, पहाड़ सदा से मुझे अपनी ओर खींचते रहे हैं। जीवन की यात्रा में जब घुमावदार मोड़ पर आकर सांसें थमने लगती हैं तो अक्सर मन होता है कि किसी ऐसे एकांत स्थल पर चली जाऊं जहां से सीधे रास्तों की तलाश आसान हो जाए। शायद पहाड़ के तीखे मोड़ों पर पहाड़ियों की कर्मठता और विपरीत परिस्थितियों में भी सामंजस्य बनाये रखने की कला जीने की कला सिखा दे!

हमारा मन अपने आप में एक ब्रह्माण्ड है। इसमें बाह्य जगत का आविर्भाव और दर्शन दोनों होते हैं। अपने चैतन्य अवस्था में दृश्य और देखने की प्रक्रिया जब एक - दूसरे को आत्मसात कर लेते हैं, तब उससे उत्पन्न आनंद शाश्वत हो जाता है। वह एक ईश्वरीय आभास के साथ मानस पटल पर जीवन भर के लिए अंकित हो जाता है। इसलिए यात्रा के दौरान मन को भी जागृत रखना चाहिए। विपरीत मौसम की मार, ट्रेनों के आवागमन में देरी होने से उपजी असुविधा या किसी सदस्य के बीमार पड़ जाने से हुई तकलीफ आदि, अगर आपके हिम्मत को नहीं तोड़ती है बल्कि इनका सामना करते हुए आप अपने लक्ष्य तक पहुंचने का सामर्थ्य रखते हैं तो इसका मतलब है कि आपने घुमन्तु विद्या को अच्छी तरह ग्रहण कर लिया है।

पहाड़ों के विस्तृत अंचल में आड़ी - तिरछी रेखाओं वाले बुज़ुर्ग हों या नख से शिखा तक सजी पहाड़ी युवतियां, सब में कुछ जीवंत है। सभी जीवित है, अपनी संस्कृति को बचाए रखने की जद्दोजहद और एक स्वच्छ - स्वस्थ पर्यावरण को बचाए रखने की पुरज़ोर कोशिश में। खनिज तत्त्वों से भरपूर प्राकृतिक झरने का पानी अब भी लोग पीते हैं, इसलिए आर.ओ. वाटर की जानकारी केवल टी. वी. के प्रचार तक ही सिमटी हुई है। सच में एक संघर्ष है इनके जीवन में।

पिछले कई सालों से पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण कहीं जाना नहीं हो पा रहा था। अचानक पिछले साल दिसम्बर–जनवरी के महीने में हमने धर्मशाला जाने का मन बना लिया और बुकिंग

भी करवा ली। असली यात्रा तो माता वैष्णव देवी के दर्शन की थी। यात्रा का यह पहला पड़ाव काफी सुखद था। फिर वहां से चल दिए कटरा और कटरा से पठानकोट और पठानकोट से धर्मशाला की ओर।

धर्मशाला, समुद्र तल से तकरीबन 6831 फ़ीट की ऊंचाई पर, धौलाधार पर्वत श्रृंखला पर बसा यह बेहद रमणीक स्थान हिमाचल प्रदेश राज्य की दूसरी राजधानी है। अंग्रेजों के ज़माने में गर्मियों के समय यह उनका प्रिय 'हिल स्टेशन' हुआ करता था। हमने कटरा से कार ले ली थी, जिसका ड्राइवर रास्ते के बीच के कई महत्त्वपूर्ण स्थलों को दिखाने के लिए कार रोक लेता था। हमारी कार घुमावदार रास्तों के बीच से गुजरती रही। गुनगुनी धूप थी पर ठंड का एहसास भी हो रहा था। धर्मशाला पहुंचने के पहले हमने कई जगहों पर चाय पीने या खाना खाने के लिए कार रुकवाई। हमने पाया कि ऐसे जगहों में पहाड़ियों के पारम्परिक वस्त्र तथा आभूषण भी मिलते हैं क्योंकि यात्री इन्हें पहन कर फोटो खिंचवाना पसंद करते हैं।

मनोरम घाटियों के संकरे-संकरे रास्तों से होकर धर्मशाला तक पहुंचने का एक अलग ही आनंद है। नैसर्गिक सुंदरता से भरी घाटियां और पर्वत श्रेणियां मन को लुभाती रहीं। पहाड़ों पर बहुत करीने से उगे देवदार की ऊंची - ऊंची डालियां जब आकाश से बातें करती हैं तो लगता है कि उनमें सूरज तक पहुंचने की होड़ लगी हो। टेढ़े - मेढ़े दिल को दहला देने वाले रास्तों में कभी छोटी – छोटी नदियां मिलतीं, तो कभी टट्टुओं पर सामान लाद कर ले जाने वाले स्थानीय निवासी।

चीड़ के जंगल

यात्राएं जीवन की आपा धापी में रिश्तों के मध्य ठंडी होती जा रहीं संवेदनाओं को सहेज कर पुनः गर्माहट लाने का सहज साधन होती हैं। यात्रियों का जत्था रास्ते भर मिलता रहा। सभी घाटियों के मध्य फोटो खिंचवाने के लिए रुकते, गुनगुनी धूप का मज़ा लेते और फिर चल पड़ते। अलग-अलग प्रदेशों से आए यात्रीगण बड़ी आत्मीयता से आपस में मिलते। तत्क्षण परिचय होता और कुछेक के साथ तो इतनी दोस्ती हो जाती कि तुरंत व्हाट्सअप पर नंबरों का आदान - प्रदान हो जाता। रास्तों की नैसर्गिक सुंदरता बरबस ही उस कुदरत की याद दिला देती है जिसने बेशुमार सुंदरता से धरती का दामन भर रखा है।

पहाड़ी झरनों से सजी पर्वत श्रृंखलाएं जाने कब अपने कलकल निनाद से श्रान्त - क्लांत लोगों की थकान हर लेतीं हैं, पता ही नहीं चलता। ईश्वर के अस्तित्व में क्यों न भरोसा हो, जब हर शय में उसकी अनुभूति होती है! मैंने सरस - स्निग्ध प्रकृति की गहराई में खुद को खो जाने दिया ताकि उस रोमांच को ताउम्र महसूस करती रहूं।

यह शहर दो मुख्य भागों में बंटा है, एक कोतवाली बाज़ार का भाग और दूसरा लोअर धर्मशाला। इन दोनों भागों के बीच गंचेन किशोड्ग गांव बसा है जहां तिब्बती लोगों का आधिपत्य है। धर्मशाला का खुशगवार मौसम पर्यटकों को खूब आकर्षित करता है। पहाड़ की गोद में बसा अत्यंत मनोहारी स्थल वैसे तो लामाओं का निवास है, पर हिमाचली संस्कृति को जीवित रखने वाली अनेक जातियों और जनजातियों का भी यहां निवास है। शहर की भागदौड़ और प्रदूषण से निजात पाने का बेहतरीन स्थान है। शाम तीन बजे जब होटल पहुंचे तो हमें बताया गया कि मुख्य दर्शनीय स्थलों को देखने के लिए हमें दूसरे दिन जाना होगा। वैसे स्थानीय बाज़ार और एक–दो स्थल शाम में भी देख सकते हैं। हमने वैसा ही किया। होटल के पीछे से ही एक पहाड़ी नदी गुजरती थी जिसके बहाव में गज़ब की रफ्तार थी। घाटियों में काले – उजले बादल शावकों की तरह कुलांचे भरते दिखाई देते फिर तत्क्षण ही गायब हो जाते।

लोअर बाजार

दूसरे दिन हम धर्मशाला के प्रसिद्ध स्थानों को देखने निकले। नोर्बलिंग्का के विशाल संग्रहालय में हाथ से बनी पेंटिंग्स और अन्य सामानों को सहेज कर रखा गया है। यहीं इन सामानों को बनाने का वर्कशॉप भी है। फूलों से निकाले प्राकृतिक रंगों का प्रयोग किया जाता है। बौद्ध मंदिरों में रंगों की कलात्मकता सजीव हो उठती है। धर्मशाला अपने नाम की सार्थकता कैसे बनाये हुए है, इसका परिचय धर्मगुरु दलाई लामा जी के विशाल मंदिर में जा कर स्वतः हो जाता है।

दलाई लामा जी का विशाल मंदिर

बुद्ध की विशाल प्रतिमा में एक अनोखा सम्मोहन है, एक सकारात्मक शक्ति का संचार होता महसूस पड़ता है। हमने बौद्ध स्तूपों के तो खूब दर्शन किए हैं, पर इतना कशिश कहीं भी नहीं देखी है। यहां की बुद्ध प्रतिमा बोलती हुई जान पड़तीं हैं। इतनी दूर जा कर इस स्थान को स्थापित करने वाले दलाई लामा जी का दर्शन भी सुखद था। धर्मशाला और मैक्लोडगंज में चीड़ की लंबी- लंबी गाछें हैं । असल में पूरे पहाड़ी इलाकों में नुकीली पत्तियों वाले वृक्ष ही ज्यादातर मिलते हैं मसलन, चीड़, देवदार, फर, पाइन, स्प्रूस आदि। अंतिम दो पाइन, स्प्रूस हिमालय की और ऊंचाइयों में ज्यादा मिलते हैं। मैक्लोडगंज के तिब्बती मार्किट, डल झील और चाय बागान, नड्डी की ऊंचाइयों में भागसूनाथ का मंदिर और बगल से बहते एक सुन्दर जलप्रपात की अपनी अलग ही सुंदरता है।

कहते हैं यहां कभी नागवंश का राज था। असुरों के राजा भागसू यहां पानी की खोज में आए थे। यहां से सरोवर का पानी लेकर जब वे जाने लगे तो नागों के साथ युद्ध हुआ, युद्ध में भागसू की हार हुई। जहां - जहां उनके कमंडल का पानी गिरा, सरोवर बनते गए। प्राण त्यागने के पहले उन्हें पता चला कि नाग भी शिव का रूप हैं, तो उनसे अपने प्रदेश में पानी की कमी पूरी करने का आग्रह करके अपना प्राण त्याग दिए थे।

इस पूरे प्रदेश में जलप्रपात और सरोवरों की बहुतायत देख कर इस पौराणिक कथा पर विश्वास करना ही पड़ेगा। चाय के बाग, क्रिकेट स्टेडियम और वॉर मेमोरियल अन्य रमणीक स्थल हैं, जहां यात्रा के दौरान कुछ देर विश्राम भी कर सकते हैं। क्रिकेट स्टेडियम की स्थापना आईपीएल मैचों के दौरान की गई थी, यहां कुछ देर बैठ जाएं तो धर्मशाला की नैसर्गिक सुंदरता आपका मन मोह लेगी। धरती पर निहुरता गगन कभी धुएं की गिरफ्त में आ जाता है तो कभी सूर्य की प्रखर किरणों से सराबोर। जाड़े की गुनगुनी धूप में घंटों बैठे रहें, उठने का मन नहीं होगा।

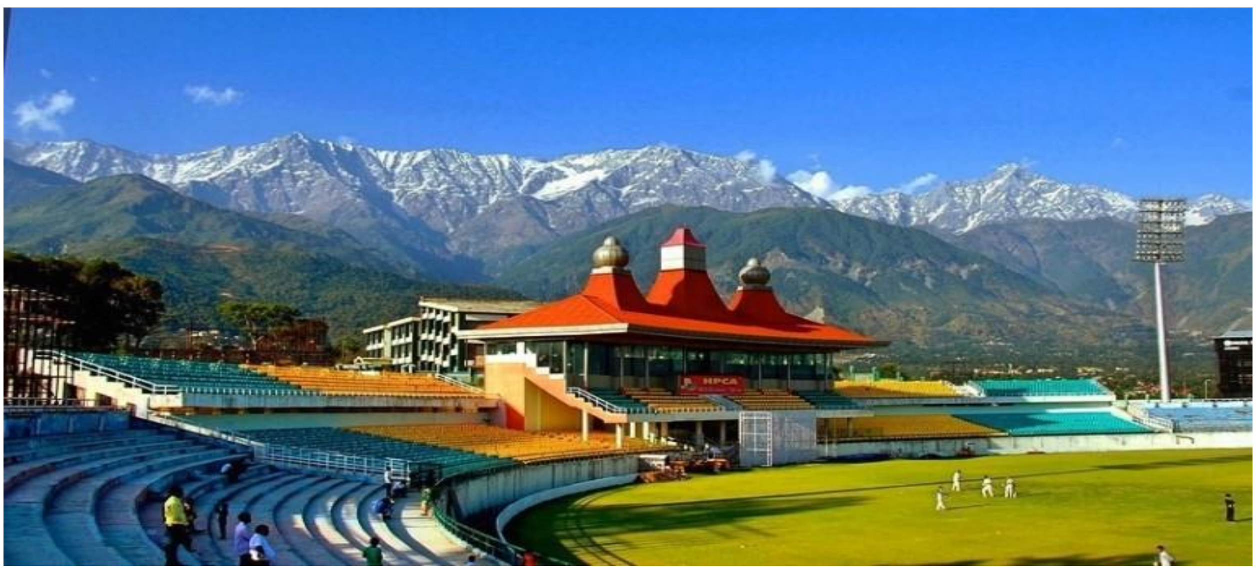

धर्मशाला क्रिकेट स्टेडियम

वॉर मेमोरियल के सुरम्य पार्क में बैठ कर विविध प्रजातियों वाले वृक्षों को देख कर विश्वास ही नहीं होता कि हमारी वन–सम्पदा वाकई इतनी समृद्ध है। यहां लुप्त होती जा रहीं कुछ पेड़ों की प्रजातियों को बचाने की पुरजोर कोशिश की जा रही है। तिब्बती मार्केट में विशेषकर हाथ से बने ऊनी कपड़ों की दुकानें हैं। इसके अलावा पारंपरिक और पहाड़ी जीवन से जुड़ी वस्तुओं की भी बहुत सी दुकानें हैं। जगह छोटी है इसलिए दर्शनीय स्थलों को देखने के लिए एक दिन पर्याप्त है। लेकिन स्वास्थ्य की दृष्टि से इस प्रदूषण मुक्त वातावरण में कुछ दिन और रह कर जलप्रपातों के खनिजीय जल का सेवन करना बहुत लाभदायक है। शहर के शोरगुल से दूर प्रकृति के मनहर सान्निध्य में जीने का मज़ा ही अनोखा है।

डल झील, धर्मशाला

प्रकृति के पहलू में रहने वाला इंसान सहज - सरल और सौम्य होता है। गर्मी वांछित है, स्वास्थ्य के लिए भी और सौन्दर्य के लिए भी इसलिए चीड़ - देवदार की घाटियों को चीर कर जब सूर्य की किरणें घाटियों तक पहुंचती हैं तो लगता है, घंटों उन्हें निहारते रहें और तब होता है एक अद्भुत अहसास। यह उष्णता अंतर्मन तक पहुंच कर सीधे कुदरत से रिश्ता जोड़ती है। प्रकृति माया है, शक्ति है और मां है, आकाश को पिता मानते हैं। हमारा दृष्टिकोण है कि हम प्रकृति को समग्रीभूत परिवार का अभिन्न अंग मानते हैं। दूर गगन से बातें करतीं हुईं ऊंची – ऊंची लरजती – मचलती डालियों को देख प्रतीत होता था जैसे वे कह रहीं हों, " ऐ आसमां तेरी निगहबानी में, हमने मुद्दत से पलकें नहीं झपकायीं हैं।"
दो पहाड़ों के बीच की घाटी में दुनिया से अलग एक दुनिया है, नितांत खामोशी में डूबी, कोहरे और सूरज की किरणों के बीच लुका – छिपी के खेल में जीवन की उष्णता को तलाशती, देशी – विदेशी यात्रियों को अपनी गोद में पनाह देती हुई ,पारंपरिक और आधुनिक दोनों तरह की व्यंजनों से आवभगत करती हुई तथा भौतिकता की दौड़ में भी धर्म के प्रति आस्था जगाती इस छोटी सी दुनिया को ही हम धर्म की स्थली यानि धर्मशाला के नाम से जानते हैं। सुकून से भरा यात्रा का यह रोमांच आज भी जेहन को गुदगुदा देता है जब कैमरे में बंद तस्वीरें आँखों के सामने से गुजरतीं हैं।

----

* शिक्षाविद् तथा लेखिका। दैनिक समाचारपत्र – पत्रिकाओं और ई –पत्रिकाओं में नियमित लेखन। अतुल्य भारत के लिए मौलिक और अप्रकाशित पहली बार योगदान।
ई मेल–kavitavikas28@gmail.com मोबाइल –9431320288

दो कविताएं:

वाह ! रे नारी –

- डॉ. दिव्या राणा

वाह् ! रे नारी, तेरे देखे कई रुप,
कभी करुणा का सागर, कभी स्नेह भरा हृदय तेरा,
तो कभी लब्जो से छलकाती प्यारी धुन की वाणी,
वाह् ! रे नारी, वाह! रे नारी.............
क्रोध भी होती, प्रतिशोध भी लेती,
कभी डांटती, कभी फटकारती,
बेटी बनकर फर्ज निभाती,
माँ-बाबा के आँगन में खुशियों के फूल खिलाती,
पल कर संस्कारों में पिता का मान बढ़ाती,
उंगली उठा दे कोई पिता पर, सुरक्षा कवच बन जाती,
लाज अपने माँ-बाप का बचाती,
वाह्! रे नारी, क्या फर्ज निभाती,
ब्रढ़ते अपराध पर अपना दिखलाती शक्ति रुप,
वाह्! रे नारी, तेरे बदलते रुप..............
जब बदलता रुप तेरा बेटी से बहू के रुप मे,
भार उठाती ससुराल का, जिम्मेदारी का हिस्सा बनकर,
घर की बागडोर बनती, सॉस-ससुर के संभालकर,
उनकी हर रीति-रिवाज निभाती,
देवर-ननद को सम्मान देती, इनकी इच्छा का रखती मान,
छोड़ अपने जीवन की खुशियां, सबके के चेहरे पर मुस्कान,
चंचल, नादान, शरारती बेटी से संस्कारी बहू बन जाती है,
पहले डरती चूहे से, मां बनने पर शेर-सांप से लड़ जाती है,
वाह्! रे नारी, किस तरह तु खुद को हर माहौल मे ढालती,
वाह्! रे नारी, बड़े ही निराले तेरे बदलते रुप ।।

------

*सम्प्रति:पी.एच.डी. (प्राचीन इतिहास), महात्मा गांधी काशी विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश।

नया सूरज लायेंगे :

- क्षेत्रपाल शर्मा

आसमान तो बहुत दूर है,
चंदा भी है छिपा चोरी-चोरी,
हवा करें मेघों से छिछोरी
सूरज की हो गई रे चोरी।।
आर्द्र हो गया वातायन
इगलू जैसा मेरा घर
कंबल में सब दुबके बैठे
आग से कोई बात न कर।।
सुरभि, घिरी रहे घर
बाहर कोरोना का डर
चार दिनों से ऐसी ठंड
सूरज किसके घर बंद।।
गली, खेलने तब जाएंगे
एक नया, सूरज लाएंगे ।।

------

* सम्प्रति: सेवानिवृत्त संयुक्त निदेशक, कर्मचारी राज्यबीमा निगम, नई दिल्ली। अतुल्य भारत में निरंतर योगदान।

दो गज की दूरी है अभी जरूरी :
मास्क का सही तरीके से उपयोग करें।

दो लघुकथाएं :

संस्कार की विरासत -I

*प्रस्तुति: रामगुप्त जैन

'कोरोना काल में आज किसी एक को काम से हटाना था। मैं सोच रहा था कि काम से निकालने का दूसरा मतलब था किसी के पेट पर लात मारना। लेकिन मेरी भी मजबूरी थी, तो आज पहली बार यह काम करना ही पड़ेगा। यह बात अंदर ही अंदर कचोट रही है...जिंदगी में मां ने यही सिखाया था यही कि जहां तक हो सके किसी की मदद कर देना। मेरी भी यही कोशिश रही कि अपने आसपास किसी को दो रोटी के लिए तरसना ना पड़े...! पर क्या करें, इस विकट काल में जब अपने पेट पर ही आन पड़ी हो !'

यह दोनों लघु कथाएं दो वास्तविक घटनाओं पर आधारित है। - प्रस्तुतकर्ता

दो वर्ष पहले ही कुछ जमा पूंजी लगाकर और कुछ पापा से लेकर कपड़े का शो रूम खोला था। तब दूकान में ग्राहकों को कपड़े दिखाने और बिक्री के लिए महीने में छः-छः हजार रुपए पर दो लड़कों और दो लड़कियों को रखा था। यह काम अच्छा चल निकला था।

पापाजी की एक नामी स्कूल के सामने स्टेशनरी की बड़ी दुकान थी, लेकिन थोड़ी दूरी पर एक सरकारी स्कूल भी था। किसी बच्चे के पास एक-दो रुपए कम होते, तब भी वह 'बेटा बाद में दे जाना' कह कर, स्टेशनरी का सामान दे देते। कभी बच्चे बकाया दे जाते और कभी नहीं। हम कहते पापाजी लिख लिया करो। उनका जवाब होता दो-चार रुपए से हम कोई गरीब नहीं होंगे, पर बच्चे को दिक्कत होगी। अब मुझे भी लगता वे सही हैं।

अचानक कोरोना महामारी फैल गई, करीब दो महीने तक दूकान को बंद रखनी पड़ी। दुकान बंद रहने पर भी वह उन्हें बुलाकर चार हजार रुपए महीना दे रहे थे कि उनकी मदद हो सके। जब बाजार खुले तो बिक्री आधी ही रह गई है।

रात बड़ी बेचैनी से कटी...सुबह मुश्किल से एक ही रोटी खाई तो मां ने मुझसे पूछा था कि क्या बात है और मैंने सारी बात बताई तो उसने कहा कि बेटा किसी के पेट पर लात मारने से पहले एक बार सोच लेना और सोच समझ कर ही काम करना। घर से अपनी दूकान के लिए निकला....तो रास्ते में सोचता रहा।

"लेडीज डिपार्टमेंट की दोनों लड़कियों को निकाल नहीं सकता...! एक तो कपड़ों की अच्छी बिक्री कर लेती हैं, किसी ग्राहक को वापस जाने नहीं देतीं। दूसरे वो दोनों बहुत गरीब हैं। दो लड़कों में से शम्भु, पुराना है और वो घर में अकेला ही कमाने वाला है।"

"यह जो नया वाला लड़का है दिनेश... शायद उसका तो एक भाई भी है, जो किसी बड़े शॉपिंग मॉल में अच्छी नौकरी करता है। वह खुद भी तेज तर्रार और हँसमुख है, उसे कहीं भी काम मिल सकता है" मैंने उसी को हटाने का विचार किया और यही सब सोचता दुकान पर पहुंचा।

पिछले चार महीनों में कोरोना से उत्पन्न हालात से मैं भी बिल्कुल टूट चुका हूं और स्थिति को देखते हुए कम से कम एक नौकर कम करना मेरी मजबूरी है।

चारों आ चुके थे, मैंने चारों को बुलाया और बड़ा उदास हो कर बोल कहा.. "देखो... दुकान की अभी की हालत तुम सब को पता ही है, मैं तुम सब को काम पर नहीं रख सकता!''

"आज किसी एक का..हिसाब करना है।" मेरे इतना कहते ही उन चारों के माथे पर चिंता की लकीरें दिखने लगीं। कुछ बोलने से पहले, गला सूखने लगा था, मैंने बोतल से थोड़ा पानी पीया।

"दिनेश तुम्हें कहीं और काम ढूंढ़ना होगा।"

"जी,अंकल जी!" मुझे लगा कि उसका स्वर दब सा गया। चेहरे पर उदासी उभरने लगी थी। बाकियों के चेहरे पर भी कुछ ऐसा ही दिख रहा था कोई प्रसन्नता नहीं थी। एक लड़की जो शायद उसी के मोहल्ले से आती है, कुछ कहते कहते रुक गई....

"क्या बात है बेटा? तुम कुछ कह रही थी ?''

"अंकल जी.... इसके भाई का काम एक महीने पहले छूट गया है....और कोरोना से इसके पापा नहीं रहें, मम्मी भी बीमार रहती है...।"

मेरी नजर दिनेश के चेहरे पर गई, उसकी आँखों में जैसे ज़िम्मेदारी के आंसू थे, जो वो अपने हँसमुख चेहरे से छुपा रहा था। मैं कुछ बोलता कि तभी एक और दूसरी लड़की बोल पड़ी !

"अंकल जी! एक बात कहूँ, बुरा तो नहीं मानोगे।
"हां..हां .. बोलो।

"आपने उस बुरे समय में भी हमारी मदद की है। किसी को निकालने से अच्छा है, हमारे पैसे कम कर दो! आप छः हजार की जगह पांच हजार या उससे भी कम दे दो !"

मैंने दूसरों की तरफ देखा "हां साहब...हम इतने से ही काम चला लेंगे।"

"पर तुम लोगों को ये कम तो नहीं पड़ेगा न!"
"नहीं साहब! कोई साथी भूखा रहे, इससे अच्छा है हम सब अपनी एक रोटी कम कर दें"
उसी समय दो महिलाओं ने दुकान में प्रवेश किया और लड़कियां तुरन्त उनकी ओर बढ़ी,
"यस, मैडम!"
सभी बच्चे अपने काम पर लग गए । इन बच्चों ने मेरी परेशानी को, आपस में बांटने की सोच ने मेरे मन के बोझ को कम जरूर कर दिया था। मेरी नज़रों में मुझ से कहीं ज्यादा बड़े हो गए थे।

*****

⁎संस्कार की विरासत -!!

"अम्मा, सुनो...तुम से एक राय लेनी है। अपनी गली से नौवी गली के नुक्कड़ पर शान्ता जी है ना?"
"तो, मैं क्या करूं?"
"आज उन्होंने बुलाया है, बेचारे अपना मकान बेचना चाहते हैं, डेढ़ मंजिला है।" राम अवतार ने अपनी मां से कहा ।
"पर, तू किस लिये खरीद रहा है?"

"अम्मा, किराए पर उठा देंगे, चार पैसे मिल जाया करेंगे। मौका लगा तो एक दुकान डाल देंगे।"

"मगर, बेटा, वो मकान बेच रहे क्यों हैं? कागज-वागज तो ठीक हैं।" तब तक उनकी पत्नी भी आ गई और बताने लगी, "असल में उनकी बेटी है ना, उसकी शादी के लिए वह अपना घर बेचना चाहते हैं। हमने सोचा सस्ते में मिल जाएगा ।"

"ठीक है जा देख लो ।..."मगर बेटा ! बेटी की शादी के लिए घर बेच देगे तो रहेंगे कहां....उनके आसरे का क्या होगा?"

"सच बेटा... जाने कैसी रीति बनाई है समाज ने कि बेटियों के घर बसाने के लिए अपने घरों को बेचना पड़ता है, बेटियों के घरवालों को? सोच समझ कर जो मांगे दे देना, उन्हें दबाने की कोशिश मत करना।" कहते हुए बुजुर्ग अम्मा का गला रुंध सा गया..।

राम अवतार और उनकी पत्नी मन्नु, शान्ता प्रसाद जी के यहां पहुंचे। श्रीमती जी को घर दिखाया.गया । और बैठने के बाद पूछा, "जी कहिए ...क्या डिमांड है ?''

"डिमांड क्या भाई साहब, बस ठीक कीमत मिल जाए बस, बेटी की शादी अच्छे से हो जाए, एक एक बेटा है उसकी किस्मत, ठीक रहा तो कहीं बना लेगा।"

"और आप, मेरा मतलब है कि भाभी जी और बेटे सहित आप कहां रहेंगे?''

"रह लेंगे कहीं किराए के मकान में, आपको तो पता है अच्छे लडके कहां मिलते हैं। शादी पर खर्च, दहेज, रिश्तेदारों के लेनदेन, बहुत पैसा लग जाता है।" शान्ता जी की पत्नी ने उत्तर दिया, पर बोलते हुए उनकी आवाज कांपने लगी, जैसे कि अभी रो पड़ेगी।

अभी बात चल ही रही थी कि उनकी की बेटी चाय लेकर आ गई। सिर झुकाकर दोनों को नमस्ते कहा। श्रीमती जी ने कान्ता को सिर से पैरों तक निहारा।
वही सादगी,...सलवार सूट में...जैसी उसने आज तक अपनी मां में देखी थी वैसे ही मुस्कुराते सिर झुकाकर घर आए मेहमानों का आदर करना, न जाने क्यों राम अवतार की पत्नी को वह भली लगी।....नाम पूछ लिया... कान्ता ।

राम अवतार की श्रीमती जी ने पूछ ही लिया कि लड़का क्या करता है। शान्ता जी ने बताया कि दो-तीन जगह बात चल रही है। एक नगर निगम में जेई है, एक का अपना काम है और एक सरकार में कलर्क है। नकद के साथ कार की डिमांड भी है। इस तरह 15 से 20 लाख का खर्च है। बेटी ने बीए पास किया है।

“भाई साहब, रिश्ता अभी कहीं तय नहीं हुआ है, यह सौदेबाजी छोडिये।” श्रीमती जी ने कहा, “मेरा एक सुझाव है जिससे आपको अपना घर भी नही बेचना पड़ेगा और कान्ता बिटिया की शादी भी हो जाएगी।” राम अवतार जी ने अपनी श्रीमती जी की ओर देखा, यह क्या कहेगी। शान्ता प्रसाद जी, उनकी पत्नी, बेटा और बेटी कान्ता सहित सभी आश्चर्य से उनकी ओर देखने लगे। श्रीमती जी पति की ओर देखते हुए पूछा कि क्यों न हम कान्ता को अपनी बहू बना लें।
“जी हां .... हमारा बड़ा बेटा चेतन है, आपने उसे देखा भी हों?''

“इनकी तो कपड़े की दुकान है। इन्होंने उसे इन्द्रपुरी में इलेक्ट्रानिक्स की दुकान खुलवा रखी है। उसने भी बीए किया है। आप चाहें तो मैं कान्ता बिटिया का हाथ हमारे बेटे चेतन के हाथ में दे सकते हैं, हमें कुछ नही चाहिए।” सब चुप, अचानक यह क्या कह रही है ...उन्होंने राम अवतार की ओर देखा तो वह मुस्कुरा रहे थे।

“खास खास रिश्तेदारों को बुलाकर मंदिर में शादी करवा देगे और उसके बाद एक रिसेप्शन हम अपने यहां कर देंगे ताकि सभी रिश्तेदार और कालोनी वालों का मुंह मीठा हो जाए।”
“आप कहें तो चेतन को यहां बुलवा लेते हैं, आप सभी मिल लीजिए। अगर सभी की और खासकर कान्ता बिटिया की रजामंदी होगी तो बात आगे बढाएंगे।”

शान्ता प्रसाद जी की आंखें भर आईं, भीगी हुई पलकों से कभी अपने घर को तो कभी अपनी कान्ता बिटिया के भाग्य को देखने की कोशिश कर रहे थे। शान्ता प्रसाद के ‘ठीक है’। इसके थोड़ी देर के बाद राम अवतार ने चेतन को वहीं बुलवा लिया। शान्ता प्रसाद के परिवार में सभी को अच्छा लगा और रिश्ता तय हो गया।

घर आते ही, राम अवतार ने अम्मा से कहा कि यह तो घर खरीदने गई थी और बहू ले आई।
“पर तुम्हारे मन में यह बात कैसे आई?''
“जब घर से चले तो अम्मा ने कहा था उन्हें ज्यादा मत दबाना।“ मन्नु का उत्तर था, “दूसरे आप तो जानते हैं हम तीन बहनें हैं। मेरे विवाह में बाबू जी ने दहेज तो नहीं मांगा था पर बारातियों की खातिरदारी में कोई कमी नहीं होने की बात कही थी। उस खातिरदारी का कर्ज मेरे पापा को चार साल तक भुगतना पड़ा था। मैने प्रण कर लिया था कि अपने बच्चों के लिए मैं किसी बाप को सालों तक भुगतने नहीं दूंगी।”
अम्मा ने उठकर अपन बहू मन्नु को गले लगा लिया और बोली, "यह होते हैं संस्कार। बहू आज तूने मेरा सीना गर्व से चौड़ा कर दिया। अब जयादा देर करने की जरूरत नहीं।"
कुछ दिन बाद चेतन और कान्ता विवाह सूत्र मे बंध गए।"

याद इन्हें भी कर लें

शशिकला

4 अप्रैल 2021 को टीवी पर सुना कि हिंदी सिनेमा की मशहूर कलाकार शशिकला ने मुंबई स्थित अपने आवास पर आखिरी सांस ली। शशिकला की उम्र 88 साल थी।

शशिकला ने 1943 के बाद से ही एक बाल कलाकार के रूप में फिल्मी जगत में प्रवेश किया था। बाद में, शशिकला फिल्मों में सहायक(खासतौर पर खलनायिका की) भूमिकाएं निभाने के लिए प्रसिद्ध हो गईं। अपने फिल्मी कैरियर में शशिकला ने सौ से अधिक फिल्मों में काम किया। उन्होंने मीना कुमारी, नूतन, शर्मिला टैगोर, माला सिन्हा, रेखा, वहीदा रहमान आदि सहित अपने समय की लगभग सभी बड़ी अभिनेत्रियों के साथ काम किया था। शशिकला ने अपने फिल्मी कैरियर में भारतीय फिल्मों के लोकप्रिय अभिनेताओं जैसे कि अशोक कुमार, शम्मी कपूर, धर्मेंद्र, मनोज कुमार,राजेंद्र कुमार, राजेश खन्ना, जितेन्द्र, मिथुन चक्रवर्ती, आदि के साथ सह-अभिनय किया।
शशिकला की कुछ फिल्में मेगा हिट्स हुई थीं, जिसमें फूल और पत्थर, अनुपमा, वक्त, हमजोली, नील कमल, तीन बहुरानियां, नींद हमारी ख्वाब तुम्हारें जैसी कई अन्य फिल्में शामिल है। नए दौर की फिल्मों में बादशाह, उलझन, मुझसे शादी करोगी, चोरी चोरी जैसी दादी की भूमिका के रूप में प्रसिद्धि मिली।

इन पंक्तियों के लेखक को 1978 में शशिकला से बातचीत करने का अवसर मिला था। उसके वार्ता के कुछ अंश यहां प्रस्तुत किए जा रहे हैं।

'हमारे पिता जी का शोलापुर में कपड़ों का व्यापार था। इसलिए बचपन ऐशो-आराम से बीता था औरमुझेबचपन से ही गाने, नृत्य और नकल उतारने (अभिनय) का शौक हो गया था।पहले अपने स्कूल में और फिर जिले के दूसरे शहरों में कई स्टेज शोज में भागलेती रहती थी।इसी दौरान एक मेला नाटक मंडली के साथ जुड़कर जगह जगह नाटक प्रस्तुत करने लगी तो लोग फिल्मों में काम करने की सलाह देने लगे।'
'दो चाचा लंदन में पढ़ाई कर रहे थे। पिता जी कमाई का एक बड़ा भाग अपने छोटे भाईयों को भेज देते थे। हम छह भाई-बहन थे। लेकिन पिता ने अपने परिवार से ज्यादा भाईयों की जरूरतें पूरी करने की चिंता रहती

थी। उनको पढ़ाने के खर्च में हमारे पिता पर बहुत कर्ज हो गया। एक वक्त ऐसा भी आया जब घर का गुजारा करना मुश्किल हो गया।

'एक दिन चिट्ठी मिली कि एक चाचा को लंदन में ही बहुत अच्छी नौकरी मिल गई और छोटे चाचा की भी जल्दी नौकरी लगने वाली है। पिता जी बहुत खुश थे और आशा थी कि अब उनके भाई उनका हाथ बटाएंगे। पर ऐसा नहीं हुआ बड़ी नौकरी मिलने पर वह हमारे परिवार को भूल गए। पिता जी ने दो महीने में उनको चार चिटिठयां लिखी पर एक का भी जवाब नहीं आया। अपने भाईयों की इस बात से वह बीमार रहने लगे। इसी सोच में उनकी हालत और भी बिगड़ गई थी। बहुत मुश्किल भरे दिन थे। एक बार करीब आठ दिन तक हम लोगों को खाना नहीं मिला। हम केवल पानी पीते रहते और इंतजार करते कि शायद कोई पडौसी ही हमारे लिए खाना ला दे।'

'बहुत से लोगों ने मेरे पिताजी से कहा कि शशि देखने में सुंदर है और एक्टिंग भी बहुत अच्छी कर लेती है। उसे फिल्मों में काम मिल जाएगा। इस हालत में आखिर, पिता जी पूरे परिवार को मुंबई ले आए। तब मैं 11 साल की थी। पिताजी ने मुझे साथ लेकर, एक स्टूडियो से दूसरे स्टूडियो जाकर मेरे लिए काम ढूंढना शुरू किया। इससे पहले आसपास के घरों में झाड़ू-पोछा तक करती और फिर स्टूडियो'ज के चक्कर लगाती थी।'

'इसी दौरान, एक दिन हमारी मुलाकात अपने समय की मशहूर गायिका और अभिनेत्री नूरजहां से हुई। उस वक्त नूरजहां के पति शौकत हुसैन रिजवी 'ज़ीनत' के नाम से एक फिल्म बना रहे थे। नूरजहां ने अपने पति से कहकर मुझे फिल्म 'जीनत' में काम दिलवा दिया और उन्होंने मुझे कव्वाली के एक सीन में ले लिया। 1945 में आई इस फिल्म में काम करने के लिए मुझे 25 रुपए मिले थे। इसके बाद तो मेरे करियर की दिशा ही बदल गई। शायद किस्मत अच्छी निकली और इस फिल्म के बाद मुझे फिल्मों में काम मिलने लगा।'

फिल्मों में कामयाबी देख श्री केएल सहगल के रिश्तेदार, ओम प्रकाश सहगल ने मुझसे शादी की बात की तो पिता जी ने हां कर दी। हमारा वक्त काफी अच्छा गुजरा और मैनें दो बेटियों को जन्म दिया। लेकिन बेटियां होने से दोनों के बीच मनमुटाव और लड़ाई-झगड़े होने लगे। तनाव इतना बढ़ गया कि एक दिन घर-परिवार और बेटियों को छोड़ कर एक शख्स के साथ विदेश चली गईं। यह अपने जीवन की सबसे बड़ी गलती थी क्योंकि जिस दोस्त के साथ मैं विदेश गई वह मेंटली और फिजिकली टॉर्चर करने लगा। बड़ी मुश्किल से खुद को बचाकर अपने देश वापस आ सकी।'

'वापस आने पर मेरे लिए घर में जगह नहीं थी। सहगल के कहने पर फिल्म वालों ने भी दूरी बना ली थी। शांति की तलाश में मंदिरों में भटकती रहती, कोई कुछ हाथ में खाने के लिए रख देता था तो खा लेती थी। फिर मैं मदर टेरेसा के आश्रम, कलकत्ता चली गई और उनके साथ दो

साल तक रहीं। लोगों की सेवा की। जब थोड़ी शांति मिली तो दोबारा मुंबई आई तो फणि दा' (निदेशक फणि मज़ूमदार) की मदद से फिल्मों में कुछ काम मिलने लगा।'

'60 के दशक के उस दौर में जब अन्य हिरोइनें पर्दे पर हीरो के साथ रोमांस कर रही थीं, मुझे लगा कि अपने लिए एक अलग रास्ता चुनना होगा और मैंने एक अलग ही काम चुना और अपने लिए ऐसे ही भूमिकाएं मांगती थी। इसके लिए मुझे ज्यादा मुश्किल भी नहीं हुई क्योंकि दूसरी अभिनेत्रियां इस तरह के चरित्रों से दूर ही रहती थीं।'

'वर्ष 1962 में ताराचंद बड़जात्या की फिल्म 'आरती' में खलनायिका और 1963 में बी.आर.चोपड़ा की फिल्म 'गुमराह' के लिए सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेत्री की भूमिका के लिए मुझे फिल्मफेयर अवॉर्ड दिया गया। इसके बाद तो मुझे सहायक अभिनेत्री की भूमिकाएं मिलने लगीं। आप ध्यान दीजिए, मेरा ऐसा नाम चला कि उस दौर की हर दूसरी फिल्म में खलनायिका, शक्की प्रेमिका या चालाक देवरानी या जेठानी, गांव की चतुर सी लड़की, मायके में रहने वाली चालबाज लड़की या ऐसी ही अन्य भूमिकाओं के लिए मशहूर हो गई थी। 'गुमराह', 'अनुपमा', 'आई मिलन की बेला', 'फूल और पत्थर', 'वक्त' और 'खूबसूरत' जैसी फिल्में की।'

एक उम्र के बाद भी उन्हें दुष्ट चाची, मकान मालकिन या दादी का काम मिलता रहा है और उन्होंने शाहरुख खान के साथ फिल्म में 'बादशाह' में नायक की मां और गोविंदा के साथ 'परदेसी बाबू' में सख्त मालकिन की यादगार भूमिकाएं की। वह 'कभी खुशी कभी गम', 'मुझसे शादी करोगी' और 'चोरी चोरी' जैसी फिल्मों भी दिखीं।

फिल्मों के अलावा शशिकला ने टीवी की दुनिया में भी काम किया। वह 'जीना इसी का नाम है', 'सोन परी' और 'दिल देके देखो' में नजर आईं। वर्ष 2007 में भारत सरकार ने उनको पद्मश्री से सम्मानित किया ।

सतीश कौल

कोरोना ने बहुत से आम और खास लोगों को लील लिया है। इसने पंजाबी और हिंदी फ़िल्मों के एक ऐसे अभिनेता को हमसे दूर कर दिया। हम बात कर रहे हैं श्री सतीश कौल की, जिसने 300 से अधिक हिंदी और पंजाबी फिल्मों में अभिनय किया और बॉलीवुड के देव आनंद, दिलीप कुमार और शाहरुख खान जैसे अभिनेताओं के साथ काम किया। 26 सितंबर 1948 को श्रीनगर, कश्मीर में जन्में सतीश कौल के पिता श्री मोहन लाल ऐमा एक संगीतकार और गायक थे।

सतीश कौल ने फिल्म एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया (FTII) से पढ़ाई की थी। 1969 में डैनी डेन्जोंगपा, जया भादुड़ी, आशा सचदेव और अनिल धवन उनके बैचमेट रहे थे। पढ़ाई पूरी करने के बाद

सतीश कौल को कई पंजाबी फिल्मों में बतौर हीरो काम करने का मौका मिला। उन्होंने हिंदी फिल्मों में भी हाथ आजमाया, लेकिन आशा के अनुरूप सफलता नहीं मिली थी। उन्होंने दिलीप कुमार, देव आनंद, विनोद खन्ना जैसे प्रमुख बॉलीवुड अभिनेताओं के साथ काम किया। फिर भी, बॉलीवुड में वह नाम और ख्याति नहीं पा सके जो उन्हें पंजाबी फिल्मों में मिली थी।

1973 में आई उनकी पहली फिल्म 'प्रेम परबत' के लिए सतीश कौल को बहुत याद नहीं किया जाता है, जो एक एक्शन फिल्म थी और इसमें वह रेहान सुल्तान के साथ एक वन अधिकारी की भूमिका में थे। बाद में सतीश को 'नेक','परवीन', 'मेरे सरताज' और 'अंग से अंग लगा ले' जैसी हिंदी फिल्मों में मुख्य भूमिकाएं मिलीं, लेकिन इनमें से ज्यादातर चल नहीं पाईं और जल्द ही सतीश को 'शिवा का इंसाफ' और 'इनाम दस हज़ार' जैसी बड़े बजट की फिल्मों में सहायक भूमिकाओं में काम करना पड़ा।

पंजाबी फिल्मों ने उनके करियर को बनाए रखने में मदद की और उन्हें पंजाबी सिनेमा का 'अमिताभ बच्चन' कहा जाने लगा था। एक समय ऐसा भी आया जब पंजाब में फिल्में बननी लगभग बंद सी हो गईं। ऐसे में सतीश ने दूरदर्शन की ओर रूख किया, जहां उन्हें विक्रम-वेताल और महाभारत में इंद्र के रूप में देखा गया था।

पंजाबी सिनेमा में योगदान के लिए सतीश कौल को पीटीसी पंजाबी फिल्म अवार्ड्स 2011 में "Lifetime Achievement Award" पुरस्कार से सम्मानित किया था। उन्हें क्षेत्रीय फिल्मों में अब तक के सबसे सफल अभिनेताओं में एक माना जाता था।

उन्होंने पहलाज निहलानी की दो फ़िल्मों 'इल्ज़ाम' और 'आग ही आग' में महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाई थीं। सतीश को याद करते हुए, पहलाज निहलानी ने कहा कि कड़ी मेहनत करने वाले, मिलनसार, काम के प्रति समर्पित, हमेशा कैमरे का सामना करने के लिए उत्सुक, कलाकार को हिंदी फिल्मों में काम नही मिलने के कारण और निराश होकर, क्षेत्रीय (पंजाबी) सिनेमा की ओर जाना पड़ा। जहां उन्होंने 'जट्ट पंजाबी', 'लाची' और 'रानो' जैसी फिल्मों में एक सफल पारी खेली। पंजाबी की 'सस्सी पुन्नू', 'इश्क निमाणा', 'सुहाग चूडा' और 'पटोला' उनकी यादगार फिल्में हैं।

'कर्मा' में नूतन के साथ एक चित्र

सतीश कौल शायद इतने भाग्यशाली नहीं थे। संयोग से पिछले कुछ वर्षों से काम नहीं मिलने से उनकी आर्थिक स्थिति खराब होती चली गई। उनकी पत्नी तलाक देकर अपने बेटे के साथ यह देश ही छोड़ गई। धन की कमी के कारण सतीश को लुधियाना में एक चैरिटी होम में रहने के लिए मजबूर होना पड़ा, जहां खाने का कोई पैसा नहीं लिया जाता था। महामारी में कोरोना-ग्रस्त होने पर, लुधियाना के एक अस्पताल में 10 अप्रैल 2021 को उनका निधन हो गया।

सतीश के अंतिम वर्ष भारतीय सिनेमा के सभी अभिनेताओं और तकनीशियनों के लिए एक सबक हैं जिनके पास कठिन समय के दौरान कोई बचत नहीं होती है।

अतुल्य भारत की ओर से श्रृद्धांजलि अर्पित।

⁎ प्रस्तुति : मोहन सिंह *****

पर्यटन मंत्रालय की

सचित्र गतिविधियां

एवं

समाचार

'देखो अपना देश':

"कश्मीर की क्षमता का दोहन: धरती पर स्वर्ग में एक और दिन"

12 अप्रैल 2021 : पर्यटन मंत्रालय ने 11 से 13 अप्रैल, 2021 तक श्रीनगर में "कश्मीर की क्षमता का दोहन: धरती पर स्वर्ग में एक और दिन" ("टैपिंग ऑफ पोटेंशियल ऑफ़ कश्मीर: एनअदर डे इन पैराडाइज़") एक प्रमुख पर्यटन प्रोत्साहन कार्यक्रम का आयोजन किया। संघशासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर के उपराज्यपाल श्री मनोज सिन्हा और पर्यटन तथा संस्कृति राज्य मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने आभासी माध्यम से इस समारोह का उद्घाटन किया और प्रतिनिधियों को संबोधित किया। भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय ने जम्मू-कश्मीर के पर्यटन विभाग,''फिक्की'' (भारतीय वाणिज्य एवं उद्योग महासंघ) और भारतीय गोल्फ पर्यटन संघ (आईजीटीए) के सहयोग से इस कार्यक्रम का आयोजन किया था।

इस कार्यक्रम के आयोजन का उद्देश्य संघ शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर के असंख्य पर्यटन उत्पादों का प्रदर्शन करना और अवकाश, साहसिक, पर्यावरण, विवाह, फिल्मों और 'एमआईसीई' पर्यटन स्थल के रूप में जम्मू-कश्मीर के पर्यटन का प्रचार करना था। इस उद्घाटन सत्र के अवसर पर सचिव (पर्यटन) श्री अरविंद सिंह, जम्मू-कश्मीर के उपराज्यपाल के सलाहकार, श्री बशीर खान, जम्मू-कश्मीर सरकार के पर्यटन सचिव, श्री सरमद हफीज़; पर्यटन मंत्रालय में अपर महानिदेशक, श्रीमती रूपिंदर बरार और अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।

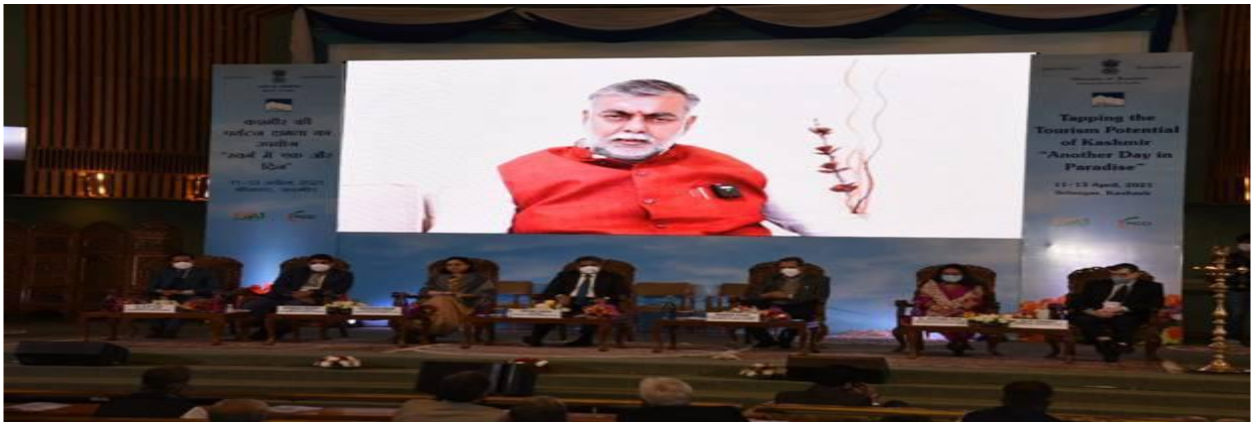

आभासी माध्यम से अपने सम्बोधन में माननीय मंत्री जी ने कहा कि यह आयोजन पर्यटन मंत्रालय और अन्य हितधारकों द्वारा जम्मू-कश्मीर में पर्यटन को बढ़ावा देने का एक नया प्रयास है। उन्होनें ने कहा कि धारा 370 को समाप्त करने और सभी विपरीत परिस्थितियों से उबरने के बाद, जम्मू-कश्मीर में पर्यटकों का आगमन फिर से शुरु हो गया है औ रजम्मू-कश्मीर में जनवरी 2020 की तुलना में जनवरी 2021 में पर्यटकों की संख्या में पांच गुणा वृद्धि दर्ज की गई है। यह पहल संघ शासित प्रदेश में पर्यटन को पुनर्जीवित करने में मदद करेगी। उन्होनें आगे कहा कि इस स्थान पर पुरातात्विक, ऐतिहासिक और प्राकृतिक सुंदरता है। हमें बस उन्हें प्रोत्साहित करने की जरूरत है और इस प्रकार के आयोजन बेहतर पर्यटन अवसंरचना तैयार करने में नए विचारों के प्रदर्शन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

इस अवसर पर जम्मू-कश्मीर के उपराज्यपाल महामहिम श्री मनोज सिन्हा ने, आभासी माध्यम से, संबोधित करते हुए कि सबसे पहले मैं इस संघ शासित प्रदेश में पर्यटन के विकास हेतु इस वर्ष के केंद्रीय बजट में 786 करोड़ रुपए देने के लिए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी को धन्यवाद देना चाहता हूं, जो पिछली बार की तुलना में 509 करोड़ रुपये अधिक है। श्री सिन्हा ने पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल के प्रति आभार व्यक्त किया, जो केंद्र शासित प्रदेश में पर्यटन को बहाल करने के प्रयासों में अपना पूरा सहयोग देते हैं।

श्री सिन्हा ने कहा कि जम्मू-कश्मीर में पर्यटन की काफी संभावनाएं हैं और प्रशासन बहुत जल्द एक नई फिल्म नीति ला रहा है, जो जम्मू-कश्मीर में फिल्मों के स्वर्ण युग की वापसी करेगी।

उन्होंने ने कहा कि दूसरे अन्य राज्यों की तरह इस प्रदेश में भी कोविड महामारी से पर्यटन बुरी तरह प्रभावित हुआ है।

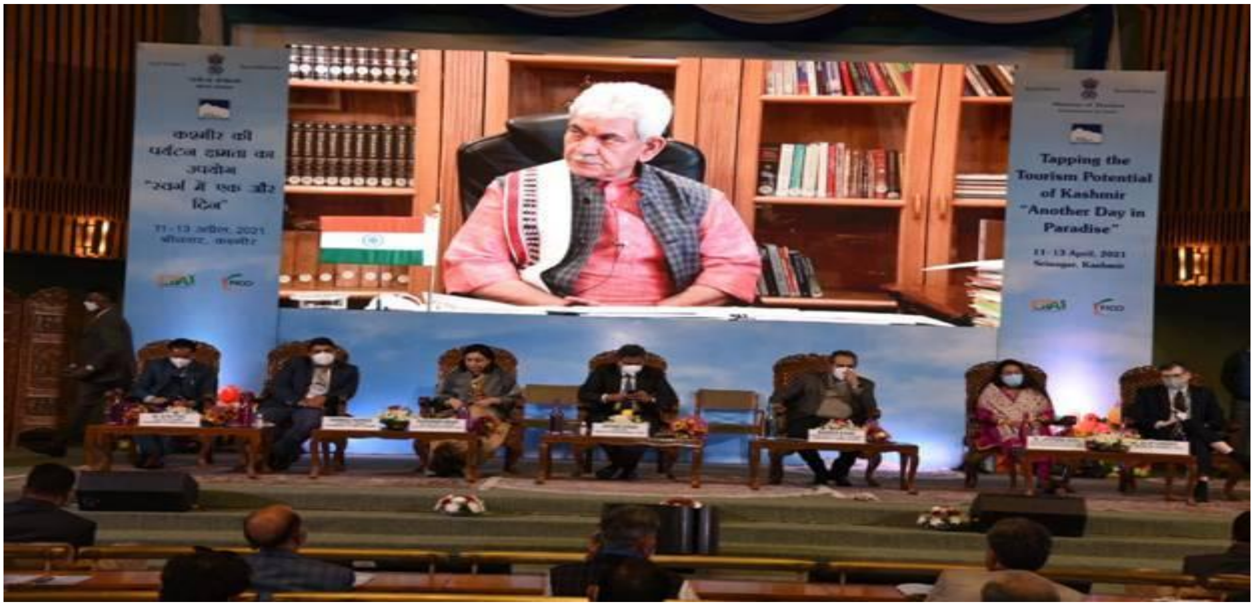

वर्चुअल प्लेटफॉर्म कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से उपस्थित अतिथिगण

अब पर्यटन उद्योग में शामिल लोगों के स्वास्थ्य और अन्य पहलुओं को ध्यान में रखते हुए, आने वाले पर्यटकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए कई उपाय किए गए हैं। श्री सिन्हा ने कहा कि विवाह जैसे कार्यक्रमों, फिल्म पर्यटन, 'माइस' (एमआईसीई) आदि के लिए एक गंतव्य के रूप में कश्मीर एक श्रेष्ठ स्थल है क्योंकि यह अपार संभावनाएं प्रदान करता है। उन्होंने उम्मीद जताई कि इस कार्यक्रम में विचार-विमर्श से आगे की राह तय करने और एक नई नीति बनाने में बहुत मदद करेगा।

श्री सिन्हा ने आगे विस्तार से बताया कि पर्यटन क्षेत्र के परिवर्तन के लिए, पांच प्रमुख क्षेत्रों पर विशेष तौर पर ध्यान दिया जा रहा है, जिनमें पर्यटन उद्योग का सतत विकास, आतिथ्य क्षेत्र को मजबूत करना, मानव संसाधन विकास, गोल्फ का विकास और यहां के खान-पान के व्यंजनों का प्रचार करना शामिल है।

इस अवसर पर बोलते हुए, पर्यटन मंत्रालय के सचिव, श्री अरविन्द सिंह, ने कहा कि 'पृथ्वी पर स्वर्ग' पर्यटन की क्षमता से भरपूर है। कश्मीर क्षेत्र की अर्थव्यवस्था में पर्यटन ही सबसे बड़ा योगदान देता है क्योंकि यहां की अधिकांश आर्थिक गतिविधियां पर्यटन और संबद्ध सेवाओं पर आधारित हैं।

श्री सिंह ने आगे कहा कि कोविड-19 महामारी ने अभूतपूर्व तरीके से पूरी दुनिया को ही प्रभावित किया है। लोगों के आवागमन पर प्रतिबंध, अंतरराष्ट्रीय उड़ानों के निलंबन, हवाई अड्डे और

सीमाएं बंद करने, यात्रा पर सख्त प्रतिबंधों को अपनाने आदि से इससे एक ठहराव आ गया जिससे अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों के लिए लंबे समय तक संकट बना रहा और पर्यटन उद्योग के लिए भी बहुत कुछ ऐसा ही हुआ है जिससे पर्यटन में भारी कमी आई।

श्री अरविन्द सिंह, सचिव, पर्यटन मंत्रालय

तथापि, अब इसमें सुधार के संकेत देखे जा रहे हैं। श्रीनगर में दिसंबर 2020 से पर्यटको की संख्या में रिकॉर्ड स्तर पर वृद्धि नज़र आई है और जानकारी के अनुसार जून 2021 तक श्रीनगर के सभी होटल पूरी तरह से बुक हो चुके हैं। यह एक बहुत उत्साहजनक खबर है। इससे राज्य में युवाओं को रोजगार के अवसर मिलेंगे। श्री सिंह ने कहा कि राज्य में पर्यटन को पुनर्जीवित करने के लिए और राज्य में पर्यटन को विकसित करने के लिए हितधारकों के साथ साझेदारी करने के इस अवसर पर शामिल होकर मुझे खुशी हो रही है।
श्री सिंह ने उल्लेख किया कि मंत्रालय ने स्वदेश दर्शन और प्रसाद योजना के तहत संघ शासित प्रदेश में पर्यटन अवसंचना के विकास के लिए 562.79 करोड़ रुपए की परियोजनाएं स्वीकृत की है। इन परियोजनाओं में से अधिकांश पूरा होने के चरण में हैं और पूरी होने के बाद पर्यटन स्थलों पर पर्यटकों और आगंतुकों को अच्छे अनुभव प्रदान करने के मंत्रालय के दृष्टिकोण को पूरा करेंगी। पर्यटकों को अच्छे अनुभव करने हेतु डल झील पर लेजर शो मंत्रालय की अन्य पहलों में से एक पहल है।

श्री अरविंद सिंह ने आगे कहा कि सम्पर्कता एक और प्रमुख ध्यान देने वाला क्षेत्र है और पर्यटन मंत्रालय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय तथा नागरिक उड्डयन मंत्रालय के साथ मिल कर काम कर रहा है। हाल ही में बेंगलुरु और अहमदाबाद से घाटी के लिए सीधी उड़ानें भी शुरू हुई हैं और इसने उत्तर और दक्षिण के बीच बहुप्रतीक्षित संपर्कता प्रदान की गई है। श्रीनगर के लिए

रात की उड़ानें भी अब शुरू हो गई हैं। महत्वपूर्ण पर्यटन स्थलों के लिए सड़क संपर्क में सुधार के बारे में पर्यटन मंत्रालय, सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय के साथ बातचीत कर रहा है।

जम्मू-कश्मीर के उपराज्यपाल के सलाहकार, श्री बशीर अहमद खान ने कहा कि वार्तालाप सत्र, तकनीकी पर्यटन, प्रदर्शनियां, टूर ऑपरेटरों के बीच आपसी बातचीत के सत्र सहित कई दिलचस्प कार्यक्रम इस कार्यक्रम का एक हिस्सा हैं, जो पर्यटन में नई ऊंचाइयों को प्राप्त करने के लिए एक कार्य-योजना प्रदान करेंगें। उन्होंने बताया कि जम्मू-कश्मीर सरकार ने नए गंतव्यों की सूची को अंतिम रूप दे दिया है और इन स्थलों को लोकप्रिय बनाने के लिए आवश्यक अवसंरचना तैयार करने की दिशा में काम किया जा रहा है। मुझे पूरा विश्वास है कि यह आयोजन बहुत सफल होगा।

12 अप्रैल 2021 को पूर्ण सत्र में चार पैनल चर्चाएं भी शामिल थीं। 'कश्मीर को एक पसंदीदा पर्यटन स्थल के रूप में अगले स्तर तक ले जाना', 'कश्मीर को और अधिक प्रभावशाली बनाना', कश्मीर के विविध पर्यटन उत्पादों को प्रदर्शित करना 'वज़वान, ज़ाफ़रान और शिकारा कहानी जारी है ...' और मास्टर शेफ पंकज भदौरिया के साथ एक 'चाय पर चर्चा' विषय पर वार्तालाप हुआ। जम्मू-कश्मीर सरकार के पर्यटन विभाग ने सांस्कृतिक कार्यक्रम के बाद प्रसिद्ध डल झील में एक लेजर शो का आयोजन किया।

कश्मीर में भारत के शीर्ष और विश्व के प्रमुख गोल्फ पर्यटन स्थलों में से एक बनने की क्षमता है। पर्यटकों के बीच जम्मू एवं कश्मीर में गोल्फ हमेशा से एक मुख्य और सुखद आकर्षणों में

से एक है। जम्मू एवं कश्मीर गर्मियों के दौरान (अप्रैल से नवंबर तक) गोल्फ खिलाड़ियों के लिए उत्कृष्ट अवसर प्रदान करता है।

वियतनाम के राजदूत महामहिम एच.ई.फाम सनाह चाऊ ने, जो विश्व के विभिन्न हिस्सों की यात्रा कर चुके हैं, दुनिया के विभिन्न प्राकृतिक सौंदर्यपूर्ण स्थलों जैसे कि कनाडा, स्विटजरलैंड, यूरोप के अन्य भागों, वियतनाम और कई अन्य स्थलों से कश्मीर की विविध प्राकृतिक सुंदरता की तुलना करते हुए कहा कि कश्मीर में पूरी दुनिया की खूबसूरती एक स्थान पर ही देखी जा सकती है।

केन्या के उच्चायुक्त महामहिम विली किपकोरिर बेट और उनकी पत्नी आस्था जेमवताई बेट, श्रीनगर के रॉयल स्प्रिंग्स गोल्फ कोर्स से पूरी तरह से अभिभूत थे और इसका उल्लेख एक विश्व स्तरीय गोल्फ गंतव्य के रूप में किया। श्रीमती बेट्ट ने यह भी कहा कि वह कश्मीरी व्यंजनों की बहुत बड़ी प्रशंसक बन गई हैं।

जॉर्जिया के राजदूत मान्यवर आर्चिल गुलमर्ग की सुंदरता से अभिभूत थे और उन्होंने गुलमर्ग की यात्रा के दौरान स्कीइंग का आनंद लिया था। उन्होंने कहा कि गुलमर्ग में ढलान स्कीइंग के लिए आदर्श हैं और दुनिया के सर्वश्रेष्ठ स्कीइंग स्थलों में से एक है।

*****

आतिथ्य और पर्यटन उद्योगों को मज़बूत बनाने के लिए ऑनलाइन ट्रैवल कंपनियों के साथ पर्यटन मंत्रालय द्वारा समझौता पत्र पर हस्ताक्षर।

16 अप्रैल 2021: आतिथ्य और पर्यटन उद्योग को, खासतौर से महामारी के समय में, सुदृढ बनाने के अपने प्रयास के तहत पर्यटन मंत्रालय ने ऑनलाइन ट्रैवल कंपनियों क्लीयरट्रिप और ईज़ माई ट्रिप के साथ 15 अप्रैल को एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए।

इस समझौता ज्ञापन का प्राथमिक उद्देश्य उन आवासीय इकाइयों को व्यापक संरक्षण प्रदान उपलब्ध कराना है जो ओटीए प्लैटफार्म पर मौजूद 'साथी' (सिस्टम फॉर एसेसमेंट, अवेयरनेस एंड ट्रेनिंग फॉर दि हॉस्पिटैलिटी इंडस्ट्री) एप पर खुद को स्वप्रमाणित कर चुकी हैं। समझौता पत्र में दोनों पक्षों को इन इकाइयों को 'निधि' एप पर और उसके साथ ही साथी' एप पर पंजीकृत कराने के लिए प्रोत्साहित करने तथा स्थानीय पर्यटन उद्योग को कोविड-19 महामारी के प्रसार को रोकने के लिए समुचित सुरक्षा उपाय अपनाने के लिए प्रोत्साहित करने के संबंध में भी निर्देश हैं।

इसका यह भी उद्देश्य है कि आवास इकाइयों के बारे में ज्यादा से ज्यादा जानकारी जुटाई जाए ताकि संरचनागत प्रमाणों के आधार पर लक्षित नीतिगत उपाय कर सुरक्षित, सम्मानजनक और सतत पर्यटन सुनिश्चित किया जा सके।

पर्यटन मंत्रालय की ओर से संयुक्त सचिव श्री राकेश कुमार वर्मा, निदेशक (होटल एवं रेस्तरां), डॉ. ए. राज, वरिष्ठ निदेशक और प्रमुख, भारतीय गुणवत्ता नियंत्रण (क्यूसीआई), की ओर से तथा श्री मोहित सिंह, श्री विपिन शाह, उपाध्यक्ष, ईज़ी माई ट्रिप और श्री श्रीराम, बिजनेस हैड, क्लियरट्रिप (प्रा.) लिमिटेड की उपस्थिति में इस समझौता पत्र पर हस्ताक्षर किए गए।

पर्यटन मंत्रालय और ऑनलाइन ट्रैवल कंपनियां पर्यटन क्षेत्र में रणनीतिक और तकनीकी सहयोग को प्रोत्साहित करने और विकसित करने के लिए सभी ज़रूरी कदम उठाएंगीं ताकि चिन्हित क्षेत्रों में समुचित लाभ प्राप्त किए जा सकें।

*****

वेबिनार:

‘भारत की विरासत: पर्यटन को प्रोत्साहन’ (इंडिया’ज हेरिटेज: पॉवरिंग टूरिज्म)

18 अप्रैल 2021 : पर्यटन और संस्कृति राज्य मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने विश्व धरोहर दिवस, 2021 के अवसर पर पर्यटन मंत्रालय द्वारा आयोजित एक वेबिनार 'इंडियाज हेरिटेज: पॉवरिंग टूरिज्म' (भारत की विरासत: पर्यटन को प्रोत्साहन) को संबोधित किया। उन्होंने महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित महाकाव्य रामायण पर ऑनलाइन प्रदर्शनी का उद्घाटन भी किया। यह रामायण पर पहली ऑनलाइन प्रदर्शनी है। नई दिल्ली के राष्ट्रीय संग्रहालय में ऑनलाइन प्रदर्शनी में 49 लघु चित्रों के संग्रह दिखाए गए हैं, जो 17वीं से 19वीं शताब्दी के बीच के भारत के अलग-अलग कला विधाओं के हैं।

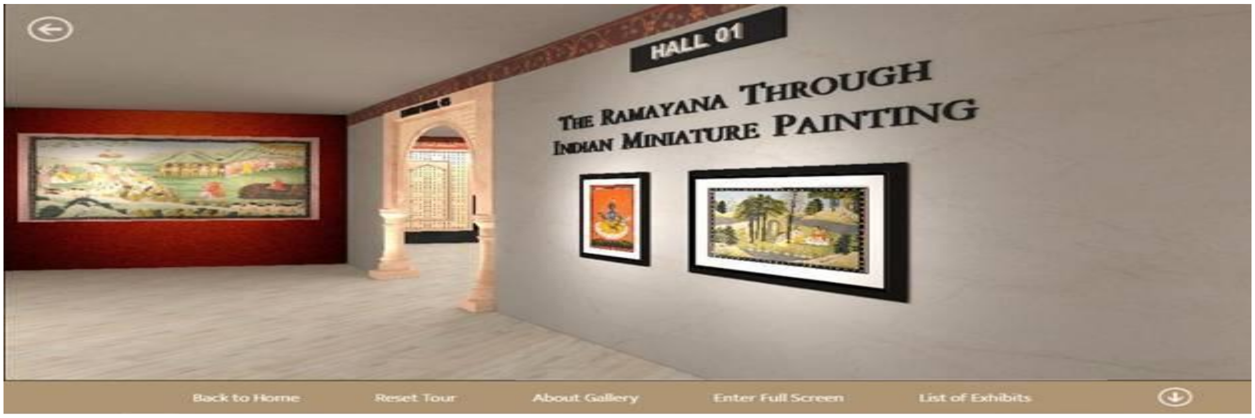

:: रामायण पर ऑनलाइन दीर्घा की एक झलक ::

ऑनलाइन प्रदर्शनी को वेबलिंक: https://nmvirtual.in/Virtual_Tour/Ramayan/ पर देखा जा सकता है।

मंत्री जी ने अपने संबोधन में कहा कि विश्व धरोहर दिवस पिछले 39 वर्षों से मनाया जा रहा है, जबकि हमारी विरासत हजारों वर्ष पुरानी है। उन्होंने कहा कि भारत में मंदिरों, शास्त्रों और नृत्य-संगीत की एक अनूठी विरासत है जो दुनिया में कहीं नहीं मिलती है। भविष्य की पीढ़ियों के लिए इन अमूल्य विरासतों की रक्षा करना एक सामूहिक जिम्मेदारी है तथा इसके लिए नियामक एवं प्रशासनिक संरचना के अलावा समुदाय की भागीदारी और जागरूकता पर नए सिरे से ध्यान दिया जाना चाहिए । अब हमें विरासत के क्षेत्र में विचार-विमर्श और गंभीरता से काम करने की जरूरत है। यह युवा पीढ़ी की जिम्मेदारी है कि वह उचित तथ्यों और समय-सीमा के साथ देश की विशाल विरासत को बढ़ावा देने के काम को आगे बढ़ाएं। वह पूरी सफलता के साथ यह काम कर सकते हैं क्योंकि वह प्रौद्योगिकी में निपुण हैं और उनके पास पहले से अधिक संसाधन हैं, जिनकी मदद से इतिहास और घटनाओं का अधिक सटीक रूप से पता लगा सकते हैं। इस कार्य को एक चुनौती के रूप में लिया जाना चाहिए।

वर्चुअल कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से उपस्थित वक्तागण

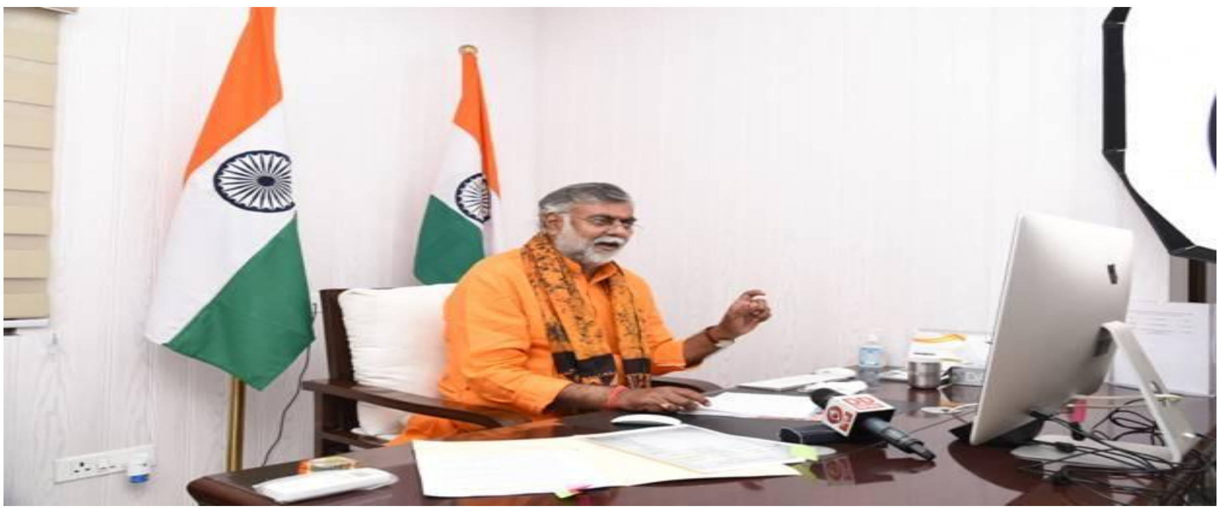

उन्होंने कहा कि हमारे विरासत स्थलों और स्मारकों का विविध कलात्मक परंपराओं और संस्कृतियों के साथ घनिष्ठ संबंध है। हमारे पास कई प्राचीन स्थल और मंदिर हैं, लेकिन अब तक उन्हें वैश्विक मंचों पर वह स्थान नहीं मिल पाया है जिसके वे हकदार हैं। इस कार्य में संरक्षणविदों, पुरातत्वविदों और इतिहासकारों से लैस अच्छी गुणवत्ता वाले हमारे मानव संसाधन समूह एक साथ आकर देश की विशाल विरासत पर उचित प्रकाश डाल सकते हैं और इसे पेशेवर तरीके से विश्व मंच पर ले जा सकते हैं। जरूरी मानव संसाधन के इस समूह का एक साथ निर्माण करते रहना भी आवश्यक है।

मंत्री जी ने कहा कि विश्व सांस्कृतियों में उत्सव मनाना और ऐतिहासिक स्थलों को लेकर जागरूकता उत्पन्न करना समय की जरूरत है। हमारी संस्कृति एवं धरोहर पर्यटकों के लिए प्रमुख आकर्षण हैं। हम पर्यटन के संवर्धन हेतु कोशिश कर रहे हैं और इसके लिए हमारे पास दीर्घकालिक योजनाएं होनी चाहिए जिनमें हमारी संस्कृति एवं विरासत का व्यवस्थित विकास

शामिल होगा और युवा पीढ़ी की भागीदारी के साथ, ठोस नतीजे हासिल करने के लिए इसे उपयुक्त मंचों पर प्रदर्शित किया जाएगा।

मैं आशा करता हूं कि इस तरह की प्रतिष्ठित और ज्ञानी हस्तियों से युक्त यह पैनल चर्चा, हमारी अनमोल धरोहरों को संरक्षित करने में काफी मदद करेगी। मैं इस नेक प्रयास के लिए आपको बधाई और शुभकामनाएं देता हूं।

अपर महानिदेशक (पर्यटन), सुश्री रुपिंदर बरार ने विचार मंथन सत्र का संचालन करते हुए कहा कि भारत की व्यापक और शानदार मूर्त एवं अमूर्त विरासत की खोज और पर्यटकों के अनुभव को समृद्ध करने में इसकी महत्ता को दर्शाने के लिए वेबिनार "भारत की विरासत: पर्यटन को प्रोत्साहन" का आयोजन किया गया है। विभिन्न क्षेत्रों की इन प्रतिष्ठित हस्तियों ने इसमें हिस्सा लिया:-

- श्री अभय मंगलदास – हाउस ऑफ मंगलदास
- श्री हर्षवर्धन – नो फुटप्रिंट्स
- सुश्री शैलजा कटोच – हाउस ऑफ कांगड़ा
- डॉ. श्रुति नाडा पोद्दार - नाद योग
- सुश्री कृतिका सुब्रह्मणियन - स्वत्मा
- सुश्री सुदक्षना थंपी – योगा एंड स्पिरिचुअल हीलिंग
- डॉ. शोवना नारायण - कथक नृत्यांगना
- श्री दिनेश के. पटनायक - महानिदेशक, आईसीसीआर
- सुश्री लवलीन सागर – डिस्टेंट फ्रंटियर्स

इस वर्ष विश्व धरोहर दिवस 2021 का थीम "कॉम्प्लेक्स पास्ट्स: डाइवर्स फ्यूचर्स" (जटिल अतीत: विविध भविष्य) है।

*****

'देखो अपना देश' 'खजुराहो में बने मंदिरों की वास्तुशिल्पीय भव्यता'

17 अप्रैल, 2021 : पर्यटन मंत्रालय ने 'देखो अपना देश' श्रृंखला के अंतर्गत 85वें वेबिनार का आयोजन किया। इस आयोजन का शीर्षक था, 'खजुराहो में बने मंदिरों की वास्तुशिल्पीय भव्यता'। भारत एक ऐसी धरती है जिसकी एक समृद्ध और शानदार परंपरा रही है। यहां पर पराक्रमी शासकों ने शासन किया और एक ऐसी भारतीय सभ्यता को संपोषित किया, जिसका एक समृद्ध इतिहास है। भारतीय विरासत की भव्यता इसके वास्तुशिल्प, कला, हस्तशिल्प और संस्कृति में साफ-साफ परिलक्षित होती है। क़िले, प्राचीन मंदिर, स्मारक, महान स्थल, इत्यादि भारत के प्राचीन इतिहास के गौरवपूर्ण प्रमाण हैं। युनेस्को ने कई भारतीय स्थलों को 'विश्व विरासत स्थल' घोषित किया है। उन विरासत स्थलों में खजुराहो के कई मंदिर भी शामिल हैं और यह भारत में

निर्मित प्राचीन धरोहरों के गौरव का साक्ष्य है। 'देखो अपना देश' वेबिनार शृंखला, 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' अभियान के अंतर्गत भारत की समृद्ध विविधता को प्रदर्शित करने का प्रयास है।

खजुराहो के मंदिरों की कला, वास्तुशिल्प और अंक चित्रण के एक विशेषज्ञ, स्थानीय पर्यटक गाइड श्री अनुराग शुक्ल ने इस वेबिनार को प्रस्तुत किया। श्री शुक्ल खजुराहो के एकमात्र ऐसे पर्यटक गाइड हैं जो खजुराहो के मंदिरों में लिखित शिलालेखों को पढ़ सकते हैं।

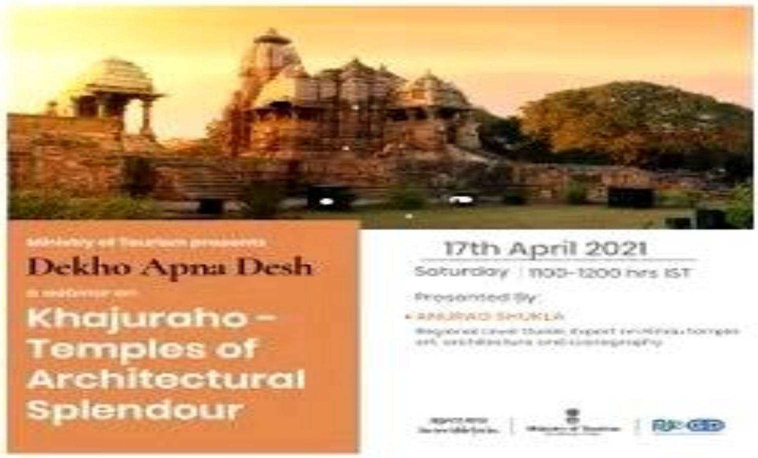

खजुराहो में मौजूद मंदिरों का निर्माण काल 950 से 1050 ईस्वी रहा है। इन मंदिरों का निर्माण चंदेल राजवंश द्वारा कराया गया था। मंदिरों को तीन समूहों में श्रेणीबद्ध किया गया है जिसमें पूर्वी, पश्चिमी और दक्षिणी श्रेणियां शामिल हैं। इन मंदिरों के वास्तुशिल्प में जिस कुशलता के दर्शन होते हैं वह अत्यधिक विस्मयकारी है और यही कला न सिर्फ घरेलू पर्यटकों के बीच बल्कि दुनिया के विभिन्न देशों से आने वाले अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों के बीच खजुराहो को भारत के सबसे लोकप्रिय पर्यटक स्थल के रूप में शुमार कराती हैं। वेबिनार के दौरान खजुराहो में मौजूद कंदारिया महादेव मंदिर, चौसठ योगिनी मंदिर, ब्रहमा मंदिर, चित्रगुप्त मंदिर, देवी जगदंबा मंदिर, लक्ष्मण मंदिर, मतंगेश्वर मंदिर और पार्श्वनाथ मंदिर के वास्तुशिल्प पर भी चर्चा की गई।

खजुराहो आने वाले पर्यटकों के लिए यहां मौजूद भव्य मंदिरों को देखने के अलावा भी आसपास के क्षेत्रों में बहुत कुछ देखने योगय है, इसमें राजकीय जनजाति संग्रहालय और लोक कला केंद्र, मंदिरों के पश्चिमी समूह के पास शाम के समय ध्वनि एवं प्रकाश प्रदर्शन (शो), पन्ना राष्ट्रीय उद्यान, बाघ संरक्षण स्थल और रानेह जलप्रपात इत्यादि शामिल हैं।

पर्यटन मंत्रालय की केंद्रीय क्षेत्र की योजना के अंतर्गत देश के विभिन्न भागों में 19 स्थलों को चिन्हित किया गया है जिन्हें देश के प्रतिष्ठित पर्यटन स्थलों के रूप में विकसित किया जा रहा है, जिनमें खजुराहो को भी शामिल है। मार्च 2021 में पर्यटन राज्यमंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल और मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने खजुराहो में महाराजा छत्रसाल सम्मेलन केंद्र का उद्घाटन किया था। इस केंद्र को पर्यटन मंत्रालय की 'स्वदेश दर्शन योजना' के अंतर्गत विकसित किया गया है, जिसका उद्देश्य व्यवसायिक पर्यटकों, उनकी व्यवसायिक आवश्यकताओं के लिए सम्मेलन आयोजित करने हेतु एक केंद्र उपलब्ध कराना है।

मध्य प्रदेश सरकार के प्रधान सचिव (संस्कृति) श्री शिव शेखर शुक्ला ने बताया कि खजुराहो पहुंचने हेतु उपलब्ध रेल, सड़क और हवाई सभी मार्गों को पर्यटकों की सुविधा के लिए किस तरह से और बेहतर तथा सुलभ बनाया गया है। मध्य प्रदेश सरकार, खजुराहो को पारिवारिक पर्यटक स्थल के रूप में विकसित कर रही है जिसमें इको पर्यटन, विरासत दर्शन और ग्रामीण प्रवास का वातावरण इत्यादि उपलब्ध कराया जा रहा है। हॉट-एयर बैलून, बफर में सफर और वन्यजीव अभयारण्य तथा मध्य प्रदेश में स्थित राष्ट्रीय उद्यानों में नाइट सफारी इत्यादि शुरू करने के बाद राज्य में पर्यटन के संवर्धन में मदद मिलेगी। उन्होंने यह भी सूचित किया कि एयर इंडिया जल्द ही सप्ताह में दो बार दिल्ली से वाराणसी होते हुए खजुराहो के लिए उड़ान सेवा शुरू करने जा रही है।

मंत्रालय की ओर से अपर महानिदेशक (पर्यटन) सुश्री रुपिंदर बरार ने खजुराहो में पर्यटकों के लिए उपलब्ध कराए जाने वाले बजट विकल्पों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने आतिथ्य तथा सेवा क्षेत्र में छात्रों के भाग लेने और प्रशिक्षण कार्यक्रमों के महत्व के बारे में चर्चा की तथा कहा कि निकट भविष्य में छात्रों को इस कार्यक्रम में और अधिक संख्या में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करने के उपाय किए जा रहे हैं।

*****

'देखो अपना देश'

"माउंटेन्स टू मैंग्रोवेस - अ जर्नी ऑफ 1000 किलोमीटर"

03 मई 2021 : पर्यटन मंत्रालय की देखो अपना देश वेबीनार श्रृंखला में "माउंटेन्स टू मैंग्रोवेस - अ' जर्नी ऑफ 1000 किलोमीटर" (पहाड़ों से सदाबहार वनों तक - 1000 किलोमीटर की यात्रा) शीर्षक से 86वां वेबीनार आयोजित किया गया। पर्वतों और समुद्र से चिन्हित भारत एशिया के बाकी हिस्से से अलग है, जो देश को एक विशिष्ट भौगोलिक पहचान देते हैं। यह उत्तर में हिमालय से घिरा हुआ है और यह दक्षिण की ओर कर्क रेखा तक फैला हुआ है। पूर्व में बंगाल की खाड़ी और पश्चिम में अरब सागर के बीच यह हिंद महासागर की ओर बढ़ते हुए धीरे-धीरे घटता जाता है। भारत में प्रत्येक राज्य अपने परिदृश्य, विरासत, कला एवं शिल्प और खानपान में एक-दूसरे से अलग हैं और यात्रा करने को लेकर उत्साही लोगों के लिए विभिन्न पर्यटन विकल्प प्रदान करते हैं। वेबीनार में पर्वतों से सदाबहार वनों तक 1000 किलोमीटर की यात्रा दो सबसे सुरम्य राज्यों- पश्चिम बंगाल और सिक्किम पर केंद्रित थी।

यह अद्भूत यात्रा हिमालय पर्वतश्रेणी के सिक्किम से शुरू होकर पहाड़ों की रानी दार्जिलिंग होते हुए दक्षिण में तटीय क्षेत्र में स्थित गंगा के मैदानों से विश्व के सबसे बड़े डेल्टा सुंदरवन में पूरी हुई। सुंदरवन को रॉयल बंगाल टाइगर के प्राकृतिक आवास के रूप में जाना जाता है।

आध्यात्मिकता, अद्भूत परिदृश्य, चाय के बाग, ट्रेकिंग ट्रेल्स, यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल- दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे एवं सुंदरवन नेशनल पार्क, पश्चिम बंगाल की विरासत एवं औपनिवेशिक समृद्ध वास्तुशिल्प के खजाने से होकर यह यात्रा हुई।

सिक्किम और पश्चिम बंगाल पर्यटकों की यात्रा सूची में सबसे पसंदीदा राज्यों में है। यह दोनों ही राज्य पर्यटन की एक विस्तृत श्रृंखला पेश करते हैं, जिसमें साहसिक, आध्यात्मिक, विरासत, वन्यजीव और कई अन्य विशेषताएं शामिल हैं। सिक्किम राज्य को प्राकृतिक विपुलता का वरदान प्राप्त है। इसमें विश्व का तीसरा सबसे ऊंचा शानदार पर्वत कंचनजंघा, फूलों की अल्पाइन घास के मैदान और पहाड़ी झीलें आदि शामिल हैं। सिक्किम के प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों में राज्य की राजधानी गंगटोक, पेलिंग, लाचुंग, लाचेन, युमथांग, नाथूला दर्रा, गुरुडोंगमार झील हैं। विदेशियों को सिक्किम जाने के लिए पहले इनर लाइन परमिट के रूप में प्रतिबंधित क्षेत्र परमिट लेना जरूरी होता है। सिक्किम राज्य के बारे में अधिक जानकारी सिक्किम पर्यटन की आधिकारिक वेबसाइट https://www.sikkimtourism.gov.in/ पर देखी जा सकती है।

पश्चिम बंगाल राज्य के पास समृद्ध इतिहास, अद्भूत परिदृश्य, विरासती वास्तुकला, कला एवं शिल्प, जीवंत लोक उत्सव, संगीत-थिएटर-नाटक, पारंपरिक उत्सव, स्वादिष्ट खानपान और भी काफी कुछ है। इस अद्भूत राज्य के पर्यटन स्थलों की सूची अंतहीन हैं। इनमें कुछ स्थल के नाम हैं- दार्जिलिंग हिमालयन रेलवे (यूनेस्को विश्व विरासत स्थल), कलिम्पोंग, दुआर्स, जाल्दापारा (वन्यजीव अभ्यारण्य), मालदा, बिष्णुपुर, शांतिनिकेतन, कोलकाता-सिटी ऑफ जॉय, सुंदरबन (यूनेस्को विश्व विरासत स्थल) और दीघा समुद्री तट।

इस वेबीनार को इम्प्रेशन टूरिज्म सर्विसेज (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड के निदेशक एवं सीईओ श्री देबाजीत दत्ता द्वारा प्रस्तुत किया गया। श्री दत्ता अनुभवात्मक एवं साहसिक पर्यटन के विशेषज्ञ और सतत पर्यटन के एक हिस्से के रूप में स्वैच्छिक सेवाएं और सामुदायिक पर्यटन पहल प्रदान करते हैं।

*****

इटली में सम्पन्न जी-20 देशों के पर्यटन मंत्रियों की आभासी (वर्चुअली) बैठक

04 मई 2021 : पर्यटन राज्य मंत्री जी ने इटली में सम्पन्न जी-20 देशों के पर्यटन मंत्रियों की आभासी रूप में हुई बैठक में भाग लिया। मंत्री जी ने इस कठिन समय में जी-20 देशों के पर्यटन मंत्रियों की बैठक आयोजित करने और पर्यटन व्यवसाय एवं रोजगार को संरक्षण देने के साथ ही यात्रा और पर्यटन की दीर्घकालिक जोरदार वापसी को सहायता देने के लिए नीतियां बनाने हेतु पहल करने के उद्देश्य से सदस्य देशों को एक मंच पर लाने के लिए इटली सरकार के पर्यटन मंत्री श्री मास्सिमो गरावाग्लिया को को बधाई दी।

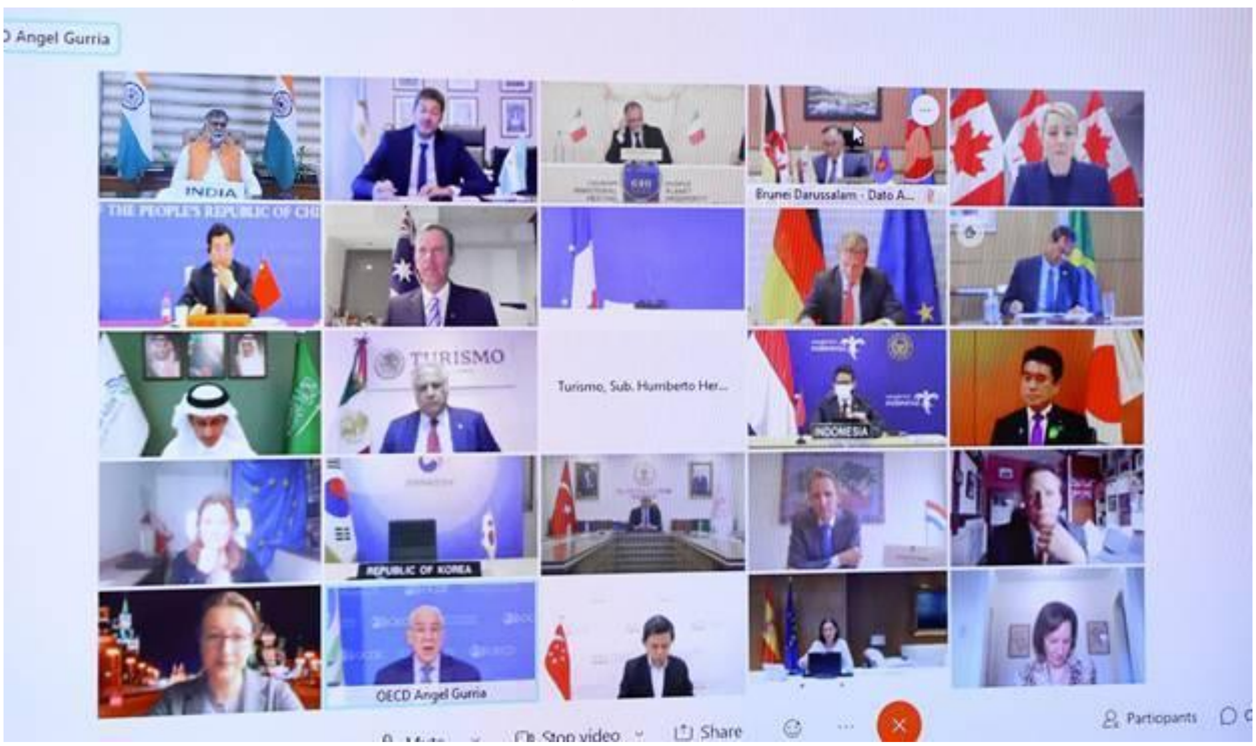

वर्चुअल कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से उपस्थित माननीय अतिथि गण

माननीय मंत्री जी ने कहा कि वैश्विक महामारी कोविड-19 के कारण पर्यटन क्षेत्र सबसे बुरी तरह प्रभावित हुआ है और इससे रोजगार, कारोबार, अर्थव्यवस्था और विभिन्न समुदाय अप्रत्याशित रूप से प्रभावित हुए है। उन्होंने उद्योग को फिर से पटरी पर लाने एवं आपस में जुड़े सात प्रमुख

परस्पर नीति क्षेत्रों पर दिशानिर्देशों को लागू करके जनसामान्य, विश्व के लिए समृद्धि के नए अवसरों को सुनिश्चित करने, सुरक्षित आवागमन, संकट प्रबंधन, लचीलापन, समावेश, हरित परिवर्तन, डिजिटल बदलाव और निवेश और ओईसीडी के समर्थन से तैयार किए गए लचीले, सतत और समावेशी पर्यटन की अवसंरचना के लिए व्यापक और प्रासंगिक मुद्दों को प्रमुखता दिए जाने पर इटली की अध्यक्षता में आयोजित जी-20 की सराहना की। उन्होंने पर्यटन में स्थिरता लाने के लिए नीति क्षेत्र "हरित परिवर्तन" में एक और योगदान के रूप में संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन (UNWTO) द्वारा प्रस्तुत पर्यावरण अनुकूल यात्रा और पर्यटन अर्थव्यवस्था में परिवर्तन हेतु बनाए गए नियमों पर भारत के समर्थन से भी अवगत कराया।

मंत्री जी ने स्थानीय लोगों को रोजगार के अवसरों के साथ ही सतत और जिम्मेदार पर्यटन के माध्यम से आय सृजन गतिविधियों में शामिल करके समुदाय आधारित पर्यटन और ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए पर्यटन मंत्रालय द्वारा की गई पहलों पर प्रकाश डाला। उन्होंने उललेख किया कि कोविड के बाद, मंत्रालय का ध्यान अभी तक कम ज्ञात (ऑफ-बीट) गंतव्यों और प्राकृतिक तथा पर्यावरण अनुकूल पर्यटन, वन्यजीवन, आयुर्वेद से जुड़े स्थानों, पर्वतारोहण के अलावा पदयात्रा (ट्रेकिंग) को बढ़ावा देने पर केंद्रित होगा।

इसके अलावा, भारत में पारंपरिक औषधियों की एक मजबूत और जीवंत प्रणाली है, जो समग्र उपचार प्रदान करती है। भारत दुनिया के सामने योग, आयुर्वेद और पारंपरिक उपचार और आध्यात्मिक परिवेश के अन्य रूपों के माध्यम से कोविड-19 के बाद सहजता, शांति और स्वास्थ्य प्रस्तुत करना चाहेगा। मंत्री जी ने आशा व्यक्त की कि विभिन्न देशों में टीकाकरण कार्यक्रम पूरा

होने के पश्चात पर्यटन क्षेत्र कोविड-19 के प्रभाव से पूरी तरह से उबर जाएगा और इसे मजबूती प्रदान करेगा।

पर्यटन मंत्री जी ने इटली की अध्यक्षता में जी-20 के लिए उनके नेतृत्व के लिए धन्यवाद के साथ अपनी बात समाप्त की और कहा कि भारत 2022 में इंडोनेशिया की अध्यक्षता में होने वाली जी-20 की बैठक के तहत आगे की प्रगति सुनिश्चित करने के लिए अपना समर्थन और सहयोग जारी रखेगा।

*****

आईआईटीटीएम की नई वेबसाइट का 108 भाषाओं में उद्घाटन

05 जून, 2021 : माननीय पर्यटन राज्यमंत्री जी विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में भारतीय पर्यटन एवं यात्रा प्रबंधन संस्थान (आईआईटीटीएम), ग्वालियर के कार्यक्रम में आभासी माध्यम से शामिल हुए। इस अवसर पर उन्होंने ने पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार के प्रतिष्ठित कार्यक्रमों में से एक अतुल्य भारत पर्यटक सुविधाकर्ता प्रमाणन कार्यक्रम (आईआईटीएफसी) संचार संगोष्ठी का आभासी माध्यम से उद्घाटन किया। इस कार्यक्रम में 2230 प्रतिभागी भाग ले रहे हैं और अब तक 7546 प्रतिभागी पंजीकृत हैं।

मंत्री जी ने अतुल्य भारत पर्यटक सुविधाकर्ता प्रमाणन कार्यक्रम की प्रशंसा की और प्रतिभागियों को शुभकामनाएं दीं। उन्होंने वेबसाइट को नवोन्नत किए जाने पर बधाई दी। इसके साथ ही उन्होंने भारतीय पर्यटन एंव यात्रा प्रबंधन संस्थान की नवोन्नत वेबसाइट, जो विश्व की 108 राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं में है, का भी शुभारम्भ किया। इसके अलावा मंत्री जी ने एक्वा आधारित साहसिक पर्यटन (एटलस) और पौधरोपण कार्यक्रम का उद्घाटन भी किया।

साथ ही उन्होंने लोगों से अपील की कि ज्यादा से ज्यादा पौधे लगाएं ताकि पर्यावरण स्वच्छ रहे तभी हम स्वस्थ रहेंगे। श्री पटेल ने कहा कि प्रकृति हमारी सबसे बडी संपत्ति है। आज लगाया गया पौधा, आने वाली पीढ़ी को जीने की एक नई राह देता है। हमें अपनी उन आवश्यकताओं को कम करना चाहिए, जो पर्यावरण में असंतुलन पैदा करती हैं।

वर्चुअल कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से उपस्थित अतिथिगण

पर्यटन सचिव, भारत सरकार श्री अरविन्द सिंह ने पर्यटन क्षेत्र में भारतीय पर्यटन और यात्रा प्रबंधन संस्थान के योगदान की सराहना की और कहा कि महामारी के बाद निश्चित ही पर्यटन क्षेत्र में नई ऊर्जा का संचार होगा। इस कार्यक्रम में श्री अरविन्द सिंह, सचिव (पर्यटन), श्री राकेश वर्मा, संयुक्त सचिव (पर्यटन), श्री ज्ञान भूषण, आर्थिक सलाहकार (पर्यटन) और अपरमहानिदेशक (पर्यटन), श्रीमती रूपिन्दर बरार भी उपस्थित थे।

*****

भारत में ग्रामीण पर्यटन : आत्मनिर्भर भारत की दिशा में एक पहल' पर ग्रामीण पर्यटन के विकास के लिए राष्ट्रीय रणनीति और कार्ययोजना के मसौदे पर पर्यटन मंत्रालय द्वारा प्रतिक्रियाएं आमंत्रित।

18 जून, 2021 : पर्यटन मंत्रालय का मुख्य उद्देश्य भारत में अंतर्गामी और घरेलू दोनों तरह के पर्यटन का संवर्धन और सुविधा प्रदान करना है। पर्यटन के लिए अवसंरचना का संवर्धन, यात्रा में

आसानी सुनिश्चित करना, पर्यटन उत्पादों और गंतव्यों का संवर्धन करना लक्षित क्षेत्रों में से एक है। पर्यटन मंत्रालय ने ग्रामीण पर्यटन की अपार संभावनाओं को पहचाना है और पर्यटन के इस विशिष्ट क्षेत्र के प्रचार एवं विकास पर सक्रिय रूप से काम कर रहा है। देश में विशिष्ट पर्यटन उत्पादों की पहचान, विविधीकरण, विकास और प्रचार-प्रसार मंत्रालय की पहल है जिसका उद्देश्य 'ऋतुओं से संबंधित' मुद्दों से पार पाते हुए और भारत को 365 दिनों के गंतव्य के रूप में प्रचारित देते हुए विशिष्ट रुचि वाले पर्यटकों को आकर्षित करना तथा यह सुनिश्चित करना है कि वह उन विशिष्ट गंतव्यों की बार-बार यात्रा करें जिनमें भारत के पास एक तुलनात्मक लाभ है।

पर्यटन मंत्रालय ने भारत में ग्रामीण पर्यटन के विकास के लिए एक राष्ट्रीय रणनीति और रूप रेखा का मसौदा तैयार किया है – जो आत्मनिर्भर भारत की दिशा में की गई एक पहल है। "वोकल फॉर लोकल" (स्थानीय के लिए मुखर) की भावना से प्रेरित, ग्रामीण पर्यटन आत्मनिर्भर भारत के मिशन में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

भारत में ग्रामीण पर्यटन के विकास के लिए राष्ट्रीय रणनीति और रूप रेखा के मसौदे को पर्यटन मंत्रालय की वेबसाइट https://tourism.gov.in/ पर " नया क्या है" खंड में उपलब्ध लिंक को खोलकर देखा जा सकता है।

https://tourism.gov.in/sites/default/files/202106/Draft/Strategy/RuralTourism.pdf

रणनीति दस्तावेज के मसौदे को अंतिम रूप देने से पहले और दस्तावेज को अधिक व्यापक बनाने के लिए पर्यटन मंत्रालय, राष्ट्रीय रणनीति और रूप रेखा के मसौदे पर प्रतिक्रिया/ टिप्पणियां/ सुझाव आमंत्रित करना चाहता है। मंत्रालय को 30 जून, 2021 को या उससे पहले इन ई-मेल आईडी: js.tourism@gov.in, bibhuti.dash72@gov.in अथवा prakash.om50@nic.in पर सुझाव भेजे जा सकते हैं।

*****

वेबिनार :

"प्रतिरक्षण और बेहतर श्वसन के लिए योग" ("योग फॉर इम्युनिटी एंड रेस्पिरेटरी हेल्थ")

19 जून, 2021 : पर्यटन मंत्रालय ने ईशा फाउंडेशन के सहयोग से प्रातः 11.00 बजे "प्रतिरक्षण के लिए योग" विषय पर एक वेबिनार का आयोजन किया। यह आयुष मंत्रालय द्वारा इस वर्ष के लिए प्रदान किए गए विषय "बी विद योगा बी एट होम" ("योग के साथ रहें, घर पर रहें") पर आधारित था। वेबिनार की शुरूआत सद्गुरु जग्गी वासुदेव जी के मार्गदर्शन में हुई, जो एक बहुआयामी व्यक्तित्व के स्वामी हैं । वह अपने ईशा फाउंडेशन के लिए पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है और मानव चेतना को बढ़ावा देने और व्यक्तिगत परिवर्तन के माध्यम से वैश्विक सद्भाव को

बढ़ावा देने के लिए समर्पित है। सद्गुरु जग्गी वासुदेव जी ने योग के महत्व और इसके लाभों के बारे में चर्चा करते हुए कहा कि भारत कई प्राचीन स्वास्थ्य कलाओं का खजाना है। योग भारत की प्राचीन परंपराओं, उपचार, विकास और आत्म-साक्षात्कार के उद्देश्य से सदियों पुरानी तकनीकों का एक अमूल्य उपहार रहा है। स्वस्थ शरीर, मन और आत्मा के प्रति योग एक समग्र दृष्टिकोण है। आज के परिदृश्य में जब पूरी दुनिया महामारी से लड़ रही है; प्रतिरक्षा में सुधार के लिए योग सबसे बेहतरीन विकल्पों में से एक है। आसन, प्राणायाम के माध्यम से योग का अभ्यास करने से हमें पूरे मन, शरीर और आत्मा में सामंजस्य बनाए रखने में मदद मिलती है।

प्रतिरक्षण (इम्युनिटी) में सुधार लाने के लिए एक बेहद सरल लेकिन शक्तिशाली योगाभ्यास, सिंह क्रिया है जो श्वसन प्रणाली को मजबूती प्रदान करती है और फेफड़ों की क्षमता बढ़ाती है। ईशा फाउंडेशन की सुश्री महिमा चोपड़ा ने न केवल क्रिया एवं सष्टांग मकरासन के बारे में बताया बल्कि सिंह-क्रिया का प्रदर्शन करते हुए क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए, उसके बारे में भी बताया।

*****

वेबिनार :

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर "योग: द वे ऑफ लाइफ"

21 जून, 2021 :अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2021 के उपलक्ष्य में सप्ताह भर निरंतर चलने वाले कार्यक्रमों के क्रम में, पर्यटन मंत्रालय ने पर्यटन एवं संस्कृति राज्य मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल और गुरुदेव श्री श्री रविशंकर के सानिध्य में एक वेबिनार "योग: द वे ऑफ लाइफ" का आयोजन किया। वेबिनार के दौरान, मंत्री जी ने श्री श्री रविशंकर का स्वागत किया और जानकारी दी कि किस प्रकार से योग ने महामारी के दौरान सहायता की है और आज भी यह विश्व भर में लोगों को स्वस्थ बनाए रखने में अपना योगदान दे रहा है। उन्होंने कहा कि योग भारत की प्राचीन परंपरा का एक अमूल्य उपहार है। योग की सदियों पुरानी तकनीकों का उद्देश्य उपचार, संपूर्ण विकास और आत्म-साक्षात्कार है और योग स्वस्थ शरीर, मन और आत्मा के प्रति एक समग्र दृष्टिकोण है।

गुरुदेव श्री श्री रविशंकर ने आज के परिदृश्य में योग और प्राणायाम एवं इसके महत्व के विषय में जानकारी देते हुए कहा कि योग व्यक्ति के साथ-साथ समुदाय के लिए भी आनंद की कुंजी है। योग न केवल स्वास्थ्य लाभ प्रदान करता है बल्कि आत्मा का उत्थान करते हुए व्यक्ति की सहज क्षमता में वृद्धि करता है, जो शासन के लिए अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने बताया कि किस प्रकार से योग और ध्यान ने लोगों में अवसाद को मिटाने और तनाव की स्थितियों को दूर करने में सहायता की है।

चर्चा के दौरान सचिव (पर्यटन), श्री अरविन्द सिंह ने महामारी के बाद विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत को प्रचारित करने के विषय में गुरुदेव जी के विचारों का समर्थन करते हुए योग को अपनाने पर जोर दिया। गुरुदेव जी ने भारत की विरासत और संस्कृति, विशिष्ट उत्पाद, पूर्वोत्तर क्षेत्र पर विशेष ध्यान देने और भारत की प्राचीन विरासत के साथ-साथ आधुनिक भारत को प्रदर्शित करने का आग्रह किया। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2021 के अवसर पर आयोजित वेबिनार में भाग लेने और अपना अमूल्य मार्गदर्शन देने के लिए पर्यटन मंत्रालय की ओर से अपर महानिदेशक (पर्यटन) सुश्री रूपिंदर बरार ने गुरुदेव श्री श्री रविशंकर जी को धन्यवाद दिया।

इससे पूर्व प्रातःकाल में, ऐतिहासिक लाल किले में स्वयं मंत्री जी ने योग प्रदर्शन का नेतृत्व किया। इस कार्यक्रम में सचिव (पर्यटन) श्री अरविंद सिंह सहित मंत्रालय के अन्य अधिकारियों ने भी भाग लिया। पर्यटन मंत्रालय ने 'योग, एक भारतीय विरासत' अभियान के अंतर्गत संपूर्ण भारत में विरासत स्थलों पर योग प्रदर्शनों का आयोजन किया गया ।

देखो अपना देश वेबीनार श्रृंखला को इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के राष्ट्रीय ई-शासन विभाग के साथ तकनीकी भागीदारी में प्रस्तुत किया गया है। वेबीनार के सत्र अब https://www.youtube.com/channel/ UCbzIbBmMvtv H7d6Zo ZEHDA/featured पर उपलब्ध हैं। इसके अलावा भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय के सभी सोशल मीडिया हैंडल पर भी उपलब्ध हैं।

हरियाणा में पर्यटन से संबंधित नई परियोजनाओं का विकास

29 जून 2021: पर्यटन राज्य मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल और हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल खट्टर ने नई दिल्ली में हरियाणा में पर्यटन से संबंधित नई परियोजनाओं के विकास तथा राज्य में चल रही परियोजनाओं में तेजी लाने के लिए एक बैठक आयोजित की। इस अवसर पर पर्यटन सचिव श्री अरविंद सिंह, संयुक्त सचिव (पर्यटन) तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारियों सहित हरियाणा सरकार के पर्यटन तथा संस्कृति से संबंधित वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।

बैठक के दौरान, राज्य सरकार ने प्रस्तावित कृष्णा परिपथ परियोजना-II के बारे में विस्तृत जानकारी दी। स्वदेश दर्शन योजना के अंतर्गत कुरुक्षेत्र, कैथल, जींद, करनाल, पानीपत और मेवात में श्रीमद्भागवत गीता और महाभारत से संबंधित महत्वपूर्ण पर्यटन/ तीर्थ स्थलों में पर्यटन अवसंरचना के विकास के लिए कृष्णा परिपथ परियोजना–II की योजना बनाई गई है। इसके

अतिरिक्त, दोनों पक्षों ने अन्य बातों के अलावा, रेवाड़ी के विरासत परिपथ, कुरुक्षेत्र के निकट ज्योतिसर में आभासी म्युजियम, पिंजौर गार्डन, मोरनी हिल्स, साईंस सिटी के विकास पर भी चर्चा की गई। मंत्री जी ने नाडा साहिब गुरुद्वारा तथा माता मनसा देवी में विकास हेतु चल रही 'प्रशाद' परियोजनाओं की प्रगति का भी जायजा लिया और राज्य सरकार से इसके समापन कार्य में तेजी लाने का अनुरोध किया।

पर्यटन राज्यमंत्री जी ने कहा कि कृष्णा परिपथ परियोजना-I पूरी होने के बाद हरियाणा राज्य सरकार अब कृष्णा परिपथ परियोजना-II पर काम कर रही है और केंद्र सरकार 'स्वदेश दर्शन' योजना सहित पर्यटन एवं संस्कृति मंत्रालयों की वर्तमान योजनाओं के अंतर्गत सहायता प्रदान करेगी। मंत्री जी ने ज्योतिसर में गीता एवं महाभारत पर आधारित एक प्रभावी आभासी संग्रहालय की स्थापना के लिए राज्य सरकार के प्रस्ताव की सराहना की। बैठक के दौरान इस विषय पर एक प्रस्तुति भी दी गई।

हरियाणा के माननीय मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल खट्टर को चरखा प्रदान कर, उनका स्वागत करते हुए पर्यटन मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल ।

मंत्री जी ने राखीगढ़ी परियोजना पर विशेष जोर दिया, जिसे देश में पांच ऐतिहासिक पुरातात्विक स्थलों में से एक के रूप में विकसित किया जा रहा है और कहा कि इसके पूर्ण हो जाने के बाद, इसमें पर्यटकों को आकर्षित करने की विपुल संभावनाएं होंगी।

बाद में, मीडिया से बातचीत करते हुए, माननीय मुख्यमंत्री जी ने हरियाणा में पर्यटन एवं संस्कृति से संबंधित विभिन्न परियोजनाओं के लिए केंद्र सरकार से मिली उत्साहजनक प्रतिक्रिया पर प्रसन्नता जताई। उन्होंने कहा कि हरियाणा में कुरुक्षेत्र के निकट एक प्रमुख तीर्थस्थल ज्योतिसर, जहां भगवान श्रीकृष्ण ने गीता का उपदेश दिया था, के लिए एक योजना तैयार की गई है । उन्होंने आगे कहा कि गीता एवं महाभारत के सारतत्व की बेहतर समझ को बढ़ावा देने के लिए वहां एक अनुभवजन्य संग्रहालय का निर्माण करने की योजना है।

दो गज की दूरी है अभी जरूरी

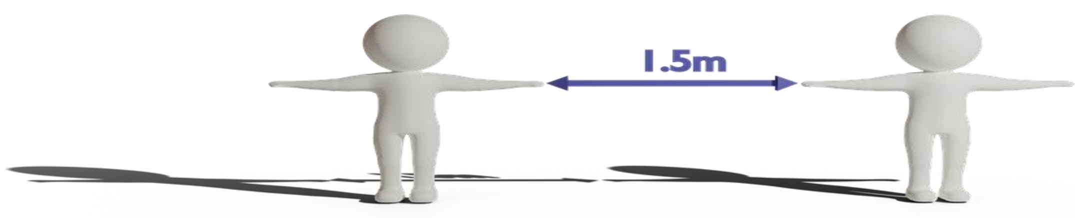

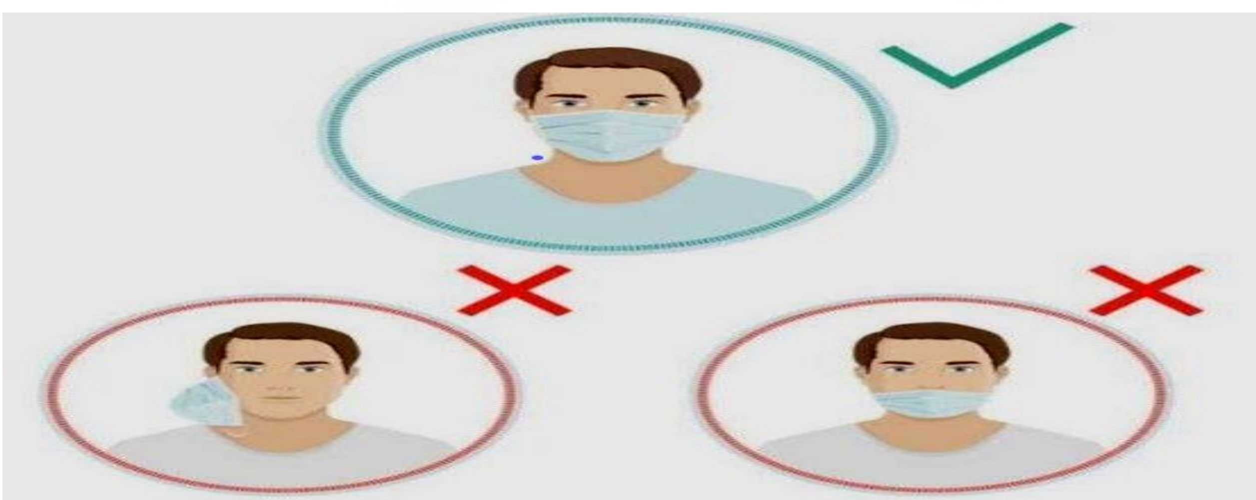

मास्क का सही तरीके से उपयोग करें।

मैहर बाबा - पं.रवि शंकर और उस्ताद अली अकबर खां

मैहर का इच्छापूर्ति मंदिर

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

अतुल्य भारत

पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार,कमरा नं-2, 7वां तल, चन्द्रलोक बिल्डिंग,
36, जनपथ, नई दिल्ली -110001

पर्यटक हैल्पलाइन 1800111363 लघु कोड :1363 [24X7]